CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# नादिराते शाही पाण्डुलिपि

## सांस्कृतिक और साहित्यिक अध्ययन

अध्ययनकर्ता

डॉ0 किश्वर सुल्ताना

पूर्व एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग,
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर

प्रस्तावना

**प्रो. एस.एम. अज़ीज़ उद्दीन हुसैन**

निदेशक

**रामपुर रज़ा लाइब्रेरी**

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

2015

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# नादिराते शाही पाण्डुलिपि

## सांस्कृतिक और साहित्यिक अध्ययन


सम्पादक

**डॉ0 किश्वर सुल्ताना**

पूर्व एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग,

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर


प्रस्तावना

**प्रो. एस.एम. अज़ीज़ उद्दीन हुसैन**

निदेशक


**रामपुर रज़ा लाइब्रेरी**

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार




••स्कैन्ड/Scanned••

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी प्रकाशन सीरीज़

सर्वाधिकार सुरक्षित रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, 2015

| | | |
|---|---|---|
| पुस्तक का नाम | : | नादिरात-ए-शाही पाण्डुलिपि सांस्कृतिक और साहित्यिक अध्ययन |
| प्रकाशन वर्ष | : | 2015 |
| प्रकाशक | : | प्रो. एस. एम. अज़ीज़ उद्दीन हुसैन निदेशक रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर |
| मूल्य | : | 285/- रू. |
| आई.एस.बी.एन. | : | 978-93-82949-30-5 |

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी

रामपुर (उ0प्र0) 244901

दूरभाष: (पुस्तकालय) 0595-2325045, फ़ैक्स: 0595-2340548

ई-मेल : directorrazalibrary@gmail.com

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" हमारा एक बड़ा दुर्भाग्य है कि हमने विश्व के पुरातन साहित्य का बड़ा हिस्सा–यूनान, भारत व अन्य स्थानों में खो दिया है। पुरानी हस्तलिपियों की संगठित खोज, सम्भवतः धार्मिक संस्थानों, मठों एवं व्यक्तिगत व्यक्ति पर करने से अच्छे परिणाम मिल सकते हैं तथा इन हस्तलिपियों के समीक्षात्मक परीक्षण तथा जहाँ आवश्यक हो वहाँ उनके प्रकाशन व अनुवाद ऐसे कार्य हैं जो हमें भारत में करने हैं जब हम अपनी बेड़ियों को तोड़कर स्वयं के लिये कुछ कर सकें। इस प्रकार का अध्ययन भारतीय इतिहास के कई अध्यायों पर निश्चित रूप से प्रकाश डालेगा और विशेष रूप से हमारे तथा ऐतिहासिक घटनाओं, सामाजिक पृष्ठभूमि और बदलते विचारों पर भी प्रकाश डालेगा। "

**पं० जवाहर लाल नेहरु**

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# प्रस्तावना

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी विश्व की महत्वपूर्ण लाइब्रेरियों में से एक है। यह विभिन्न धार्मिक परम्पराओं के वर्णन के अतिरिक्त भारतीय इस्लामिक शिक्षा एवं कला का महत्वपूर्ण ख़ज़ाना है। रामपुर रज़ा लाइब्रेरी नवाबीन रामपुर का राष्ट्र के लिये एक अमूल्य उपहार है। इसकी स्थापना रामपुर के नवाब फ़ैज़ुल्लाह ख़ां द्वारा 1774 ई0 में की गयी। इसके पश्चात रामपुर के अन्य शासकों ने भी इस लाइब्रेरी से सम्बन्धित संग्रह में रूचि ली, इसी कारण यह लाइब्रेरी उसी समय से बहुत प्रसिद्ध हो गयी। रामपुर के नवाब विद्वानों, कवियों, चित्रकारों, कैलीग्राफ़रों तथा संगीतकारों के बहुत बड़े संरक्षक रहे हैं। इसी कारण उन्होंने बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किये।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् रामपुर की रियासत भारतीय संघ में सम्मिलित कर दी गयी, इसके बाद 6 अगस्त 1951 से एक ट्रस्ट के अन्तर्गत आ गयी। पूर्व केन्द्रीय शिक्षामंत्री प्रो0 सय्यद नूरूल हसन के प्रयासों से भारत सरकार ने 1 जुलाई 1975 ई0 को रामपुर रज़ा लाइब्रेरी को पार्लियामेण्ट एक्ट 1975 के अधीन राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया। इसके बोर्ड के अध्यक्ष उत्तर प्रदेश के माननीय श्री राज्यपाल हैं।

इस लाइब्रेरी में लगभग 17000 पाण्डुलिपियां मौजूद हैं जो अरबी, फ़ारसी, संस्कृत, तुर्की, पश्तो, उर्दू तथा हिन्दी आदि में हैं। इसके अतिरिक्त यहां पर विभिन्न भाषाओं के चित्रों और ताड़पत्रों का उत्तम संग्रह है। इस संग्रह में लगभग 60,000 मुद्रित पुस्तकें और विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओं की पुस्तकें हैं। रामपुर दिल्ली से लगभग 200 किमी की दूरी पर स्थित है जो रेल और सड़क मार्ग द्वारा सुविधापूर्वक जुड़ा हुआ है।

जब मैने 3 अप्रैल 2012 को रामपुर रज़ा लाइब्रेरी के निदेशक का पदभार ग्रहण किया तो रज़ा लाइब्रेरी में मौजूद दुलर्भ पाण्डुलिपियों और उनके कैटलाग के प्रकाशन पर विशेष ध्यान दिया। इसी क्रम मे हज़रत अली की 'नेहजुल बलाग़ा', ज़ियाउद्दीन बरनी की 'नात–ए–मुहम्मदी' और 'तारीख़–ए–फ़िरोज़शाही', सै. मुहम्मद कमाल वास्ती की 'असरारिया कशफ़–ए–सूफ़िया', मुग़ल सम्राट बाबर का 'दीवान–ए–बाबर', 'दीवान–ए–हाफ़िज़ शीराज़ी', जौहर आफ़ताब्वी की 'तज़किरातुल वाक़ियात', मोहतशिम काशानी की 'दवाज़ देह बन्द' और फ़तहुल्लाह अन्ताकी की 'अलहिन्द कमा रएइताह' आदि महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों का प्रकाशन करवाया। अरबी पाण्डुलिपियों के कैटलाग के दो खण्ड, फारसी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाण्डुलिपियों के कैटलाग के तीन खण्ड, संस्कृत पाण्डुलिपियों के कैटलाग के दो खण्ड, तुर्की पाण्डुलिपियों के कैटलॉग का एक खण्ड, पश्तो पाण्डुलिपियों के कैटलाग का एक खण्ड, उर्दू पाण्डुलिपियों के कैटलाग का एक खण्ड भी प्रकाशित करवाया। भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के स्रोत विषय पर 2012 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार का विवरण दो खण्डों उर्दू, अंग्रेज़ी जरनल के रूप में 2014 में प्रकाशित किया गया।

यह बड़े हर्ष का विषय है कि नवाब सैयद रज़ा अली ख़ां के निर्देश पर सैयद मुईन उद्दीन नदवी द्वारा तैयार मुहम्मद आरिफ़ क़न्धारी की लिखी "तारीख़–ए–अकबरी" जिस लेख पर बाद में डॉ. सैयद अज़हर अली द्वारा कार्य किया गया व अन्त में मौलाना इम्तियाज़ अली ख़ां अर्शी, पूर्व मुदीर, किताब ख़ाना–ए–रज़ा द्वारा संकलित एवं सम्पादित तारीख़–ए–अकबरी 1962 में प्रकाशित हुई थी जो कि अब समाप्त हो गई थी, का री–प्रिन्ट कराया गया है ताकि शोधकर्ता 'तारीख़–ए–अकबरी' के फ़ारसी लेख से लाभ उठा सकें।

मैं माननीय श्री राम नाइक, राज्यपाल उ.प्र. एवं अध्यक्ष रामपुर रज़ा लाइब्रेरी बोर्ड का धन्यवाद व्यक्त करता हूं जिनके मार्ग दर्शन में लाइब्रेरी के कार्य चल रहे हैं। डॉ. महेश शर्मा, माननीय संस्कृति मंत्री, भारत सरकार, श्री रविन्द्र सिंह, सचिव संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार का भी आभारी हूं जिन्होंने लाइब्रेरी के कार्यो के लिये वित्तीय सहायता उपलब्ध की। मैं धन्यवाद व्यक्त करता हूं श्रीमती जूथिका पाटंकर, प्रमुख सचिव श्री राज्यपाल उ.प्र. का जिनका सहयोग एवं सहायता हर समय हमें प्राप्त होती है। श्रीमती श्रेया गुहा, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार का भी उनके सहयोग व् सहायता के लिये आभार व्यक्त करता हूं।

मैं अपने सहकर्मियों डॉ. अबूसाद इस्लाही, लाइब्रेरी एवं सूचना अधिकारी, डॉ. मुहम्मद इरशाद नदवी, सुश्री आलिया शब्बीर, श्रीमती नाज़मा बी, श्री इस्बाह ख़ान, श्री ए.के. सक्सेना, सुश्री मोहिनी रानी, श्रीमती बिल्क़ीस फ़ारूक़ी, श्री ज़फ़र ख़ान, श्री फ़ैसल ख़ान और इं0 शुजाउद्दीन ख़ान का भी उनके सहयोग के लिये कृतज्ञ हूं जिनके बग़ैर यह महत्वपूर्ण कार्य संभव नहीं थे।

प्रो. एस.एम. अज़ीज़ उद्दीन हुसैन
निदेशक
रामपुर रज़ा लाइब्रेरी,
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

दिनांक : 6 जनवरी 2015

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# परिचय

भारत देश की सभ्यता और संस्कृति बहुत पुरानी और समृद्ध है परन्तु यहाँ इतिहास लेखन की कोई परम्परा न थी, मात्र एक उदहारण कल्हण की 'राजतरंगिणी' से कश्मीर के इतिहास का परिचय मिलता है। भारत में तुर्कों के शासन की स्थापना और अनेक मुसलमान विद्वानों के आगमन से यहाँ इतिहास लेखन की परम्परा का सूत्रपात हुआ। उन्होंने फ़ारसी इतिहास लेखन की नींव डालते हुए भारत का इतिहास लिखना शुरू किया। मुसलमानों के इस योगदान के सम्बन्ध में प्रोफ़ेसर डोडवेल का कथन है, "इस्लाम का प्रादुर्भाव भारतीय इतिहास लेखन का एक बहुत महत्वपूर्ण क्रम है। मुस्लिम इतिहास लेखन हमारे अपने (ब्रिटिश इतिहास लेखन) कालीन इतिहास लेखन से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। उसका अधिक भाग धर्मगुरूओं द्वारा न लिखा होकर व्यवहारिक लोगों अथवा ऐसे समकालीनों द्वारा लिखा गया जो इन घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी थे..... मुस्लिम काल विभिन्न जीवित लोगों का काल था जबकि हिन्दू काल छायाओं का"। इससे स्पष्ट होता है कि डॉडवेल के मतानुसार मुसलमानों ने जिस फ़ारसी इतिहास लेखन की परम्परा डाली वह पाश्चात्य और भारतीय इतिहास लेखन से कहीं अधिक आधुनिक थी। परिणाम स्वरूप फ़ख़े मुदब्बिर की 'आदाबुल हर्ब वश शुजाअ' हसन निज़ामी की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'ताजुल मासिर', मिनहाजुस सिराज की तबक़ात-ए-नासिरी, ज़ियाउद्दीन बरनी की 'तारीख़-ए-फ़िरोज़शाही' लिखी गई। इन मुस्लिम इतिहासवेत्ताओं ने सल्तनत काल का भारतीय इतिहास अपनी समझ और अपने दृष्टिकोण से लिखा। प्रोफ़ेसर पीटर हार्डी का मत है, ''तेरहवीं शताब्दी का आरंभिक काल और पन्द्रहवीं शताब्दी का मध्यकाल इण्डो-मुस्लिम इतिहास लेखन का ऐसा 'कोलोनियल' काल था जहाँ मुस्लिम इतिहासविद् मुस्लिम इतिहास लेखन के उन तरीक़ों से अलग-थलग था जो अरबी और ईरानी इतिहासवेत्ताओं ने उन्हें दी।'' यह बात इसलिये सही है कि वे इतिहासविद् 'उलेमा' (धर्मगुरू) वर्ग के थे जो आम आदमी से स्वयं को अलग रखते थे लेकिन 'मशाइख़' (सूफ़ी) आम आदमी के साथ घुलते-मिलते थे इसीलिये उनके द्वारा लिखित मलफ़ूज़ात (कहे गये शब्द) में भारतीय समाज और संस्कृति के दर्शन होते हैं। बाबर ने 1526 में मुग़ल साम्राज्य की नींव रखी। उसने अपनी मातृभाषा में अपनी आत्मकथा बाबरनामा लिखी। हुमायूँ (1530-1555) ने अपने राज्यकाल में इतिहास संकलन पर कोई ध्यान नहीं दिया। ये तो अकबर ही था जिसने जौहर आफ़ताब्ची के 'तज़किरातुल वाक़ियात', गुलबदन बेगम के 'हुमायूँनामा' और ख़्वान्दमीर के 'क़ानून-ए-हुमायूंनी' का संकलन करवाया। इन सभी तज़किरों से हुमायूं के राज्यकाल की अच्छी जानकारी उपलब्ध होती है।

अकबर ने इस्लाम के एक हज़ार वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 'तारीख़-ए-अलफ़ी' के संकलन का काम सौंपा परन्तु वह इस कार्य से संतुष्ट नहीं था। 1555 ईसवीं से भारत के द्वार ईरानी उलेमा के लिये खोल दिये गये। अकबर के शासनकाल में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ विशिष्ठ ईरानी उलेमा- हकीम अबुल फ़य गीलानी, फ़तह उल्लाह शीराज़ी, मीर मुर्तज़ा शीराज़ी, सैय्यद नूरूल्लाह शुसतरी व अन्य भारत आये और आगरा में बसे। ये उलेमा उलूमे दीन (धार्मिक शिक्षा) और उलूमे माक़ूलात (तर्कशास्त्र) के विशेषज्ञ थे। उन्होंने शाही छत्रछाया में नई शिक्षा नीति की नींव रखते हुए मदरसों के पाठ्यक्रम को पुनरीक्षित किया। पुनरीक्षित पाठ्यक्रम से शिक्षा पद्धति में क्रांति आई। तर्कशास्त्र के पठन-पाठन ने कुछ नये सवाल खड़े किये । अंध आस्था को चुनौती दी गई। दर्शन व अन्य सामाजिक विज्ञान के अध्ययन ने वौज्ञानिक वातावरण पैदा किया जिसने मुग़लकाल में ईरानी इतिहास लेखन की धारा प्रवाहित की।

शाही इतिहासवेत्ता द्वारा साम्राज्य के शासकीय इतिहासलेखन की परम्परा अकबर (1556-1605 ई0) द्वारा प्रारंभ हुई। यह परम्परा औरंगज़ेब (1658-1707 ई0) काल तक जारी रही। अकबर ने 1595 ई0 में अबुल फ़ज़ल को शासकीय इतिहास लेखन का कार्य सौंपा, जिसने 'अकबरनामा' और 'आईन-ए-अकबरी' लिखी जो 1602 ई0 को पूर्ण हुई। समस्त मुग़ल अभिलेख उन्हीं को सुपुर्द थे। सभी स्रोत सामग्री ऑखों देखी आधारित लिखी हुई थी। हर प्रकार की आख्याएँ, शाही फ़रमान व अन्य अभिलेख सावधानीपूर्वक विमर्शित थे। अकबर के शासनकाल के उन्नीसवें जुलूस से उसने सबसे अधिक ध्यान कचहरी के दिन-प्रतिदिन के कार्यकलापों के लिखित अभिलेखों पर दिया। वह मुख्य अधिकारियों, वृद्धजनों, विद्वानों और शाही घराने के उम्रदराज़ लोगों से पर्याप्त विचार-विमर्श करता था। मौखिक विवरण से संतुष्ट न होने पर यदि कुछ विवादित लगता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो वह उस सबका लिखित विवरण लेता। इस प्रकार वह समाज में मज़बूत पकड़ रखने वाले बीस लोगों के लिखित विवरण उपलब्ध कर उसे बादशाह के सम्मुख रखता जो उसे संस्तुत करते या फिर आवश्यक सुधार के लिये कहते। इसी तरह जो विवरण अबुल फ़ज़ल के अनुभव से विरोधाभासी लगते उन्हें वह बादशाह को संदर्भित करता। इस प्रक्रिया से सही खोज और सच अभिलिखित होता।

अबुल फ़ज़ल ने सावधानीपूर्वक की गई खोजबीन के उपरांत ही तथ्यों को प्रस्तुत किया। इस प्रकार उसने इतिहास प्रस्तुत करने की एक नई समझ और विस्तृत फलक निर्मित किया। वह प्रथम इतिहासविद् है जिसने मध्यकालीन भारतीय इतिहास के मौलिक स्रोतों के महत्तव को पहचाना। सल्तनतकाल के इतिहासविद् भारतीय इतिहास को हिन्दू-मुस्लिम के मध्य विरोधाभास के रूप में देखते हैं। अबुलफ़ज़ल ने इस प्रकार के विचार से पूर्णत: असहमति जतायी। उसका दृष्टिकोण है कि इतिहास का अटूट संबंध दर्शन से है जो एक दूसरे के पूरक हैं। इस विचारधारा ने मध्यकालीन भारतीय इतिहास के संबंध में बरनी, बदायूंनी व कुछ अन्य इतिहासवेत्ताओं के पूर्व स्थापित विचार को खारिज कर दिया। अबुल फ़ज़ल के अनुसार इतिहास का अध्ययन ताज़गी और ताक़त देने का स्रोत है। उसका मानना था कि ऐतिहासिक कार्य मौलिक स्रोतों, तथ्यों पर आधारित हो जिनका सघन परीक्षण किया जा चुका हो। हम देखते हैं कि इतिहासकार जो कुछ व्याख्यायित नहीं कर पाते या छिपाना चाहते हैं उसे ईश्वर की इच्छा पर डालते हुए कह दते हैं कि वास्तविकता क्या है, ईश्वर ही जाने। उसने पूर्व में प्रयुक्त होने वाले योद्धाओं हेतु

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संबोधन जैसे 'ग़ाज़ियान-ए-इस्लाम', और 'मुजाहिदीन-ए-दीन' को परिवर्तित कर 'ग़ाज़ियान-ए-इक़बाल' और 'मुजाहिदीन-ए-दौलत' कर दिया। 'आईन-ए-अकबरी' इतिहास लेखन की नवीन पद्धति का शुभारंभ है। उसे भारत का प्रथम 'गज़ेटियर' भी माना जाता है परन्तु आईन-ए-अकबरी जैसे आदर्श को आगे के अधिकांश इतिहासवेत्ताओं ने नज़रअन्दाज़ किया।

अबुल फ़ज़ल की सबसे बड़ी विशेषता थी कि उसने हिन्दू धर्म को इतिहास दर्शन द्वारा समझने का प्रयास किया। अकबर ने रामायण और महाभारत के फ़ारसी अनुवाद की व्यवस्था करायी। हम एन0ए0 सिद्दीक़ी के इस मत से सहमत हैं कि "मध्यकालीन भारतीय इतिहासकार जो कि प्रथम श्रेणी में आते हैं उनमें अबुल फ़ज़ल को एक विशिष्ठ दर्जा प्राप्त हुआ, वह सिर्फ़ इसलिये कि इससे पहले किसी इतिहासकार ने इतिहास को तार्किक और सेक्यूलर दृष्टिकोण से परखा और न ही मौलिक तथ्यों की सघन पड़ताल कर नवीन पद्धति से लिखा। अबुल फ़ज़ल के इतिहास लेखन का यही महत्वपूर्ण पक्ष है।"

अबुल फ़ज़ल के इस उदारवादी और सेक्यूलर दृष्टिकोण ने भारतीय इतिहास हेतु एक ऐसी ज़मीन तैयार की कि बाद के इतिहासकार चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान उन्होंने इसे भारत में हो रहे राजनीतिक विकास के रूप में देखा लेकिन दुर्भाग्यवश मुस्लिम विद्वानों ने उन्नीसवीं शताब्दी के ऐतिहासिक स्रोतों पर अधिक काम नहीं किया। ए. रोजरस् जिन्होंने 'तुज़ुक-ए-जहाँगीरी' का अनुवाद किया लिखते हैं, "शाही लेखकों द्वारा साहित्य को दिया गया योगदान हमारे पास पूर्व से आया जिसने स्वयं एक विभाग क़ायम किया, जो अपने में अत्यंत महत्वपूर्ण है"। इससे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्पष्ट होता है कि ब्रिटिश विद्वानों ने मुस्लिम विद्वानों के इस योगदान की प्रशंसा की है। इक्कीसवीं सदी तक भारतीय मदरसों में भारतीय इतिहास विषय नहीं पढ़ाया जाता था।

भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद उन्होंने भारतीय इतिहास का अध्ययन शुरू किया क्योंकि इसके बिना भारत पर शासन करना संभव न था। सुल्तान काल से मुग़लों तक सारा इतिहास फ़ारसी में था और अंग्रेज़ विद्वानों और इतिहासकारों को यह भाषा आती न थी। अंग्रेज़ प्रशासकों, विद्वानों और इतिहासवेत्ताओं ने फ़ारसी घटनाक्रमों को एडिट करने और अनुवाद करने की योजना बनायी। "*History of India as told by its own historians*" शीर्षक से यह विशाल परियोजना *Sir Henry Elliot* को मिली। मध्यकालीन फ़ारसी इतिहासलेखन इतनी विशालतम था कि ब्रिटिश सरकार द्वारा इस कार्य के लिये दिया गया फंड अपर्याप्त था।

ईलियट ने सारी योजना वैज्ञानिक ढंग से बनाते हुए लिखा "चूंकि बहुत कम लोग ही इस कार्य से वाकि़फ़ थे इसलिये क्यों न एक ऐसी सूची तैयार की जाये जिससे पाण्डुलिपियों को तलाश किया जा सके। इसे किसी कॉलेज इत्यादि के पुस्तकालय में जमा कर बाद में प्रकाशित या लीथोग्राफ़ी करवायी जाय। इस सम्बन्ध में प्रोफ़ेसर मुहिब्बुल हसन का मत है, "इलियट की सोच मध्यकालीन भारतीय इतिहासकारों के बारे में सकारात्मक नहीं थी बल्कि पूर्वाग्रह से युक्त थी। आगे के ब्रिटिश इतिहासकारों ने भी यही दृष्टिकोण अपनाया जिन्होंने समकालीन यूरोपीय इतिहासकारों की स्वस्थ परम्परा और विधि को नकारा। उनमें अधिकांश प्रशासक थे जिन्होंने इतिहास को राजनीति और प्रशासन की हद

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तक संकुचित कर दिया, उसके जीवंत और सामाजिक पहलू को नहीं समझा। वे फ़ारसी ऐतिहासिक कार्यो और यूरोपीय यात्रियों के विवरणों तक ही सीमित रहे, उनका विश्लेषण करने और समझने का कष्ट नहीं किया''।

इसके उपरांत इलियट ने उन भारतीय विद्वानों से सम्पर्क करने का प्रयास किया जिन्होंने इस विषय पर काम किया था। इलियट लिखता है, ''एक देशी संभ्रात जन ने एक कैटलॉग तैयार किया जो पाण्डुलिपियों का था और माननीय निज़ाम का ऐतिहासिक संग्रह था, परखने पर मैंने पाया कि वह पूर्णता गढ़ा हुआ था, इसमें जो नाम दिये गये थे वे उन कामों के पुरोवाक से लिये गये थे जो स्तरीय इतिहास थे जिनमें आमतौर पर आधिकारिक उद्धरण और मूल की अशुद्वियाँ तक थीं। निज़ाम ने यह काम चयनित विद्वानों को दिया था परन्तु जब इलियट ने उसका परीक्षण किया तो अनेक ग़लतियाँ मिलीं। एक अन्य समस्या जिसकी ओर इलियट ने इंगित किया है कि 19वीं से लेकर 21वीं शताब्दी तक यह देखने में आया कि इतिहसविद् बिना मौलिक ग्रन्थ देखे ही द्वितीय स्तर पर किये गये कार्यो से कोटेशन उद्धृत कर देते हैं जो उन्होंने कभी पढ़ा ही नहीं। कभी-कभी ग़लत भी होते हैं। इलियट ने अत्यंत योजनाबद्ध तरीक़े से 1846 ई. में भारतीय शब्दों का एक ऐसा कोश तैयार किया जिसकी सहायता से फ़ारसी ऐतिहासिक अनुवाद समझा जा सके। 1849 में इलियट का ''बिब्लियोग्राफ़िकल इण्डेक्स टू द हिस्टोरियन्स ऑफ़ मोहम्मडन इण्डिया'' का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ। अपने कार्य की भूमिका में वह लिखता है कि ''हो सकता है कि अत्यन्त मूल्यवान लेखन अंधकार के गर्त में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो, जब तक कि वह प्रकाश में न आये। मेरे इस काम से शोधकर्ताओं को मौलिक स्रोत के सूत्र मिलेंगे जिनसे भारत में मुस्लिम साम्राज्य के इतिहास को नज़दीकी से समझा जा सकेगा, परन्तु दक्षिण के स्वतंत्र साम्राज्यों के बारे में बहुत कम मिलेगा''।

रॉयल एशियाटिक सोसायटी की स्थापना कलकत्ता में हुई। फ़ारसी ऐतिहासिक कार्यो का अनुवाद और एडिटिंग का कार्य प्रारंभ हुआ। बाबर नामा, हुमायूँ नामा, तज़किरातुल वाकि़यात, अकबर नामा, तुजुक-ए-जहाँगीरी के अनुवाद हुए। ब्रिटिश विद्वानों ने पूरी सतर्कता के साथ अनुवाद और एडिटिंग का काम किया। ए.एस.बेवेरिज जिन्होंने बाबर नामा का अनुवाद किया लिखती हैं कि ''यह पुस्तक बाबर बादशाह की आत्मकथा का अनुवाद है जिसे मौलिक तुर्की लेख से लिया गया है। इससे पता चलता है कि बेवेरिज ने बाबर नामा का अनुवाद मौलिक तुर्की बाबर नामा की पाण्डुलिपि से किया। केवल उसके उस फ़ारसी अनुवाद को ही आधार नहीं माना जिसे अब्दुर्रहीम ख़ानेख़ाना ने 1595 में किया था। हेनरी बेवेरिज को अबुल फ़ज़्ल के अकबर नामा के अनुवाद का कार्य सौंपा गया। वे उसकी भूमिका में लिखते हैं कि ''जब बंगाल की एशियाटिक सोसायटी ने अकबर नामा के अनुवाद करने का सम्मानित कार्य सौंपा तो मैंने अपनी योग्यता के प्रति सशंकित होते हुए कहा कि मैं लेफ़्टिनेन्ट चार्ल्मस द्वारा तैयार पाण्डुलिपि एडिट करना चाहूंगा''। इससे मालूम होता है कि एच. बेवेरिज ने पहले संक्षिप्त फ़ारसी लेख तैयार किया फिर उसका अनुवाद हुआ। अकबर नामा का अंग्रेज़ी अनुवाद उसके पूरे लेख का अनुवाद नहीं है इसलिये हम अकबर नामा का फ़ारसी लेख देखने को बाध्य हैं। अकबर नामा का अनुवाद कोई सहज कार्य न

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

था। इसके लिये ब्रिटिश म्यूज़ियम, इण्डिया ऑफ़िस लाइब्रेरी, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी लाइब्रेरी की अनेक पाण्डुलिपियों को देखा और प्रथमतः इसका पहला प्रकाशन 1902 में हुआ।

एच. ब्लॉकमैन को आईन-ए-अकबरी के अनुवाद का कार्य सौंपा गया जो कि भारत का प्रथम गज़ेटियर है। अनेक तकनीकी शब्दों और राजस्व आंकड़ों की भरमार की वजह से इसका अनुवाद सहज कार्य न था। इसका प्रकाशन 1927 में हुआ।

ए. एस. बेवेरिज ने गुलबदन बेगम के हुमायूँ नामा का अनुवाद किया जिसे उन्होंने अपने पति हेनरी बेवेरिज को इन शब्दों में समर्पित किया, "अपने पति को जिन्होंने मेरे चरण फ़ारसी मार्ग पर दृढ़ किये" हेनरी बेवरिज ने अपनी पत्नि ए.एस. बेवेरिज में फ़ारसी साहित्य और भाषा के प्रति रूचि उत्पन्न की, परिणाम स्वरूप दोनों ने मिलकर अनेक प्राचीन फ़ारसी यथाशास्त्र के अंग्रेज़ी अनुवाद किये जो मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोत हैं।

जार्ज एस.ए. रैंकिंग ने अब्दुल क़ादिर बदायूंनी के 'मुन्तख़ाबुत तवारीख़' के प्रथम संस्करण का अनुवाद किया। अपनी भूमिका में उन्होंने अनुवाद के कार्य में आने वाली कठिनाइयों का ज़िक्र किया है। मध्यकालीन इतिहासकारों ने अनेक ऐसे तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया है जिसे अनुवादक को पहले समझना पड़ता है, तभी अनुवाद संभव है। इसके अलावा अनेक फ़ारसी कवियों के काव्य भी उसमें सम्मिलित हैं। इसलिये अनुवादक को भाषा वैज्ञानिक होने के साथ कवि भी होना चाहिये तभी काव्य पंक्तियों की रूह अनुवाद में मौजूद रह पायेगी। इस प्रकार अनुवाद कार्य की अनेक कठिनाईयों के बावजूद रैंकिग का

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुवाद 1898 में प्रकाशित हुआ।

'मुन्तख़ाबुत तवारीख़' का दूसरा संस्करण लव द्वारा अनूदित हुआ। इसमें अकबर के शासनकाल के पहले चालीस वर्षो का विवरण है। इसका प्रकाशन 1884 में हुआ। तीसरा संस्करण सर वोलज़ले हैज़ ने अनूदित किया। इसमें सूफ़ियों, कवियों और उलेमा का जीवनीपरक विवरण है जो कि बदॉयूनी से परिचित थे अथवा अकबर के दरबारी थे। हैज़ ने भी अनुवाद की अनेक कठिनाइयों का उल्लेख किया है। उनके संस्करण का प्रकाशन 1924 में हुआ।

हेनरी बेवेरिज ने तुजुके जहांगीरी को एडिट किया था और इसका अंग्रेज़ी अनुवाद ए. रोजर्स ने किया। रोजर्स ने सर सैयद अहमद ख़ान द्वारा एडिट (1863) किये गये 'तुजुके जहांगीरी' का प्रयोग किया जिसका दूसरा संस्करण 1864 में प्रकाशित हुआ। रोजर्स ने बताया कि सरसैयद ने ख़राब पाण्डुलिपियों से काम किया था इसलिये उसमें अशुद्धियाँ थीं। रोजर्स ने इण्डिया ऑफ़िस लाइब्रेरी और ब्रिटिश म्यूज़ियम की उत्कृष्ट पाण्डुलिपियों को देखकर कमियों को दूर किया। इस तरह काम के प्रति उनका समर्पण द्योतित होता है। सर सैय्यद को उक्त उत्कृष्ट पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध न थीं। काम के प्रति अंग्रेज़ों की जिज्ञासा और पूर्णता से एक मुकम्मल काम 1909 में प्रकाशित हुआ।

शाहनवाज़ ख़ान को 'मासिरूल उमारा' का अनुवाद भी बेवेरिज ने किया। प्रोफ़ेसर बेनी प्रसाद लिखते हैं कि इतिहास के विद्यार्थी हेनरी बेवेरिज और उनकी प्रतिभाशाली पत्नी ए.एस. बेवेरिज के हमेशा आभारी रहेंगे कि उन्होंने अकबर नामा, हुमायूँ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नामा, बाबर नामा और मआसिरूल उमारा के इतने उत्कृष्ट अनुवाद प्रस्तुत किये। उनकी पत्नी के अनुसार अनुवाद का यह काम जब प्रारंभ किया गया उस समय हेनरी साहब की उम्र सत्तर के लगभग थी और जब समाप्त किया तो वे 92 वें वर्ष के हो चुके थे। वर्षों का यह लंबा अंतराल ब्रिटिश विद्वानों का भारतीय इतिहास के प्रति उनके समर्पण और परिश्रम को द्योतित करता है। इसके लिये उन्हें यू.जी.सी. से किसी प्रकार का *career advancement scheme* भी नहीं मिलना थी। यह सब उन्होने शोध को प्रोत्साहन देने के लिये किया।

मैं प्रो. मोहिब्बुल हसन के मत से सहमत हूँ कि "मध्यकालीन भारतीय इतिहास का अध्ययन ब्रिटिश विद्वानों द्वारा आधुनिकता के साथ अट्ठारहवीं सदी के अंत से उन्नीसवीं सदी के मध्य तक हुआ। इन विद्वानों ने यहाँ की जंग, हार-जीत, प्रशासन, सामाजिक रीति रिवाज, धार्मिक आस्थाएँ, इस्लाम का हिन्दुओं पर प्रभाव आदि सभी में रूचि ली। उन्होंने फ़ारसी ऐतिहासिक कार्यों, यूरोपीय सैलानियों के विवरण, फ़रमान, साहित्यिक स्रोत, पुरातात्विक प्रमाणों को भी मध्यकालीन भारतीय इतिहास लिखने में शामिल किया"। लेकिन इस काल में ब्रिटिश विद्वानों ने 'मलफ़ूज़' (सूफ़ी साहित्य) को नकारा जो कि हमें मध्यकालीन उत्तर भारत की संस्कृति और समाज की अच्छी जानकारी देता है।

उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ से मुस्लिम विद्वान फ़ारसी से उर्दू की ओर अग्रसर हुए। इतिहास का प्रथम मौलिक काम सर सैयद अहमद ख़ान का 'आसारूस्सनादीद' है जो 1846 में प्रकाशित हुआ। सरसैयद ने अपने समकालीन यूरोपीय इतिहासकारों की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परम्परा को अपनाया। उन्होंने उर्दू में इतिहास लेखन की नींव रखी। 1857 के बाद उनका ध्यान शैक्षणिक सुधार की ओर मुड़ गया। मुहिब्बुल हसन का मत है कि भारतीय इतिहासकारों ने इतिहास लिखते समय अपना आलोचनात्मक दृष्टिकोण न अपनाते हुए ब्रिटिश विद्वानों के दृष्टिकोण से देखा। जब भारत स्वतंत्र हुआ तो भारतीय इतिहासकारों में एक नया बदलाव आया। वे राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत थे और उन्होनें शोध की नई विधियों को अपनाया। कलकत्ता, पटना, इलाहाबाद और लखनऊ के इतिहासकारों ने मध्यकालीन भारतीय इतिहास के फ़ारसी स्रोतों की रोशनी में शोध करना आरंभ किया।

1956 में पहली बार मध्यकालीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिये समकालीन इहिासकारों का एक सेमीनार लंदन में आयोजित हुआ। प्रोफ़ेसर सी.एच. फ़िलिप्स लिखते हैं, "1556 से 1958 के मध्य ओरियण्टल एण्ड एफ़रीक़न स्टडीज़, यूनिवर्सिटी ऑफ़ लंदन की ओर से गोष्ठियों की श्रृंखला आयोजित की गई, इस जांच पड़ताल के लिये कि इतिहास लेखन में ऐशिया के लोगों की क्या स्थिति है। प्रथम व्यवस्थित काम पीटर हार्डी का 'हिस्टोरियन्स ऑफ़ मिडीवल इण्डिया' 1960 में प्रकाशित हुआ। इसके उपरांत इतिहास विभाग अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय द्वारा मध्यकालीन भारतीय इतिहास पर बहुत काम हुआ। 1966 में प्रोफ़ेसर मुहिब्बुल हसन, पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली ने उक्त विषय पर सेमीनार आयोजित किया जिसमें अत्यंत महत्तवपूर्ण पेपर प्रस्तुत हुए और प्रकाशित किये गये।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रिटिश विद्वानों ने फ़ारसी इतिहास लेखन के सम्पादन और अनुवाद पर बहुत ध्यान दिया परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमने वैसा ध्यान नहीं दिया। मात्र कुछ भारतीय इतिहासकारों जैसे जे.एन. सरकार, सैयद हसन असकरी, शेख़ अब्दुल राशिद, मेंहदी हुसैन, नजीब अशरफ़ नदवी, इम्तियाज़ अली 'अर्शी', सतीश चन्द्रा, ज़ेड. ए. देसाई, आई.एच. सिद्दीक़ी, मुईन-उल-हक़, शरीफ़ हुसैन क़ासमी, जौहरी, मुज़फ़्फ़र आलम, अज़रा निज़ामी, तसनीम अहमद, अज़ीज़ उद्दीन हुसैन व अन्य ने मध्यकालीन भारतीय इतिहास के फ़ारसी वाक़्य निगारी को सम्पादित एवं अनूदित किया। यहाँ तक कि ए.एम.यू. अलीगढ़ जो कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास के अध्ययन का आधुनिक केन्द्र है वहाँ भी इस प्रकार का कोई काम इसके पश्चात नहीं हुआ। परिणामतः एक बड़ी संख्या में आज भी फ़ारसी इतिहास पाण्डुलिपि की शक्ल में शोध और शोधकर्ताओं की पहुँच से दूर पड़ा है, जो सल्तनत और मुग़लकाल पर शोध कर रहे हैं। यदि ब्रिटिश विद्वानों ने बाबर नामा और आईन-ए-अकबरी का सम्पादन एवं अनुवाद कार्य न किया होता तो आज सल्तनतकाल और मुग़लकाल पर जारी शोध जो ए.एम.यू. अलीगढ़, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहर लाल नेहरू, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, पटना विश्वविद्यालय, कलकत्ता विश्वविद्यालय, हैदराबाद विश्वविद्यालय व अन्य क्षेत्रीय विश्वविद्यालयों में हो रहा है, सीमित रह जाता। ए.एम.यू. अलीगढ़ के संस्थापक सरसैयद अहमद ख़ान ने ज़ियाउद्दीन बरनी के तारीख़-ए-फ़िरोज़शाही द्वितीय संस्करण को एडिट कर 1866 में कलकत्ता से प्रकाशित कराया। परन्तु तारीख़-ए-फ़िरोज़ शाही के प्रथम संस्करण को 1971 में प्रकाश

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में लाने का श्रेय जर्मनी के प्रो. साइमन डिगबॉय को जाता है। तारीख़-ए-फ़िरोज़शाही के प्रथम संस्करण की मात्र तीन पाण्डुलिपियाँ हैं, एक बॉडलिन पुस्तकालय, इंग्लैण्ड, दूसरी रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर और तीसरी प्रोफ़ेसर साइमन डिगबॉय, जर्मनी के व्यक्तिगत संग्रह में। यह आश्चर्यजनक है कि इलियट और डाउसन ने बरनी की तारीख़-ए-फ़िरोज़शाही को अपने काम *History of India as told by its own historians* में शामिल किया लेकिन किसी भी ब्रिटिश विद्वान ने इसका एडिटिंग और अनुवाद नहीं किया जैसा कि बाबर नामा, अकबर नामा, मुन्तख़बुत तवारीख़ इत्यादि का किया। जब मैंने रज़ा लाइब्रेरी के निदेशक के पद पर रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में कार्यभार ग्रहण किया तो बरनी की तारीख़-ए-फ़िरोज़शाही के प्रथम संस्करण को प्रकाशित करने का निर्णय लिया ताकि मध्यकालीन भारतीय इतिहास के आधुनिक इतिहासकार इसके प्रथम संस्करण को देख सकें। तारीख़-ए-फ़िरोज़ शाही का प्रथम संस्करण रामपुर रज़ा लाइब्रेरी से पहली बार 2012 में प्रकाशित हुआ। इस पर मैंने 80 पन्नों का परिचय लिखा।

2002 में जब मैं जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली में इतिहास विभाग का अध्यक्ष था तो *Persian Historians of 18th Century* विषय पर सेमीनार आयोजित कराया जिसमें आधार व्याख्यान प्रोफ़ेसर इरफ़ान हबीब ने प्रस्तुत किया। जब मैंने 2012 में रामपुर रज़ा लाइब्रेरी के निदेशक का पदभार ग्रहण किया तो भारतीय इतिहास और संस्कृति के स्रोत विषय पर अक्टूबर 2012 में एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया जिसमें विद्वानों ने भारतीय इतिहस के हर प्रकार के स्रोतों की चर्चा की। प्रोफ़ेसर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इरफ़ान हबीब ने अपना अध्यक्षीय भाषण दिया। सेमीनार का पूर्ण विवरण 2014 में प्रकाशित हुआ। 2012 में डॉ0 वी. वेनु पूर्व संयुक्त सचिव संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मुझे संस्कृति मंत्रालय की परियोजना 'अरबी और फ़ारसी पाण्डुलिपियों का हिन्दी और अन्य भाषाओं में अनुवाद' का संयोजक नियुक्त किया गया। इस परियोजना के तहत ज़ियाउद्दीन बरनी की तारीख़-ए-फ़िरोज़शाही और कुछ अन्य फ़ारसी यथाशास्त्र का हिन्दी अनुवाद कार्य प्रगति पर है। प्रोफ़ेसर इरफ़ान हबीब लिखते हैं, ''अकबर के शासन काल ने इतिहास लेखन में एक अभूतपूर्व विकास देखा। अबुल फ़ज़ल के अकबर नामा का एक महत्तवपूर्ण भाग आईन-ए-अकबरी है जिसने ऐतिहासिक अभिलेख, सांख्यिकी, संस्मरण यहाँ तक कि मौखिक इतिहास द्वारा विशिष्ट ऐतिहासिक पुनर्निमाण प्रस्तुत किया। इतिहास के सम्बन्ध में अबुल फ़ज़ल का दृष्टिकोण मात्र पुराने दरबारी की हैसियत से न था। अपने महत्तव के बावजूद अकबर नामा अकबर काल के बहुत से ऐतिहासिक कामों को ढक लेता है। उनमें से एक शोध वर्तमान में डॉ0 आरिफ़ कंधारी की तारीख़े अकबरी है।'' तारीख़-ए-अकबरी के महत्तव को प्रकाश में लाते हुए प्रोफ़ेसर इरफ़ान हबीब का मत है, ''मोहम्मद आरिफ़ कंधारी के टेक्सट् (मतन) की अन्य इतिहासकारों के काम से तुलना की जाये तो स्पष्ट होता है कि अकबर काल का कोई भी इतिहासकार उनके कम की ऊँचाई तक नहीं पहुँच सका है। जहाँगीर के राज्यकाल में जैसा कि तसनीम अहमद ने अपनी भूमिका में इंगित किया है कि फ़िरिश्ता और निहाबन्दी की भाँति इस लेख (मतन) का भी इतिहासकारों के लिये विशिष्ट महत्व है। इस प्रकार के स्रोत से सही तथ्य

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामने आयेंगे जैसे फ़तेहपुर सीकरी के निर्माण और अकबर के प्रारंभिक काल की चित्रकारी की जानकारी साथ ही उन्होंने अकबर की उस छवि को भी प्रस्तुत किया है जो दृढ़ धार्मिक विचारधारा होने के बावजूद 1580 के आरंभ में क्रिश्चियन द्वारा कही जाती थी जिसके कारण मुसलमान आमतौर पर अकबर को अधार्मिक मानते थे।

जब मैंने तीन अप्रैल 2012 को रज़ा लाइब्रेरी के निदेशक का पद ग्रहण किया तो यह निर्णय लिया कि यहाँ मौजूद नादिर पाण्डुलिपियों का प्रकाशन, पाण्डुलिपियों के कैटलॉग का प्रकाशन, संकलनकार्य पर विशेष बल दिया जायेगा। मैंने हज़रत अली की नेहजुल बलाग़ा, ज़ियाउद्दीन बरनी की नअत-ए-मुहम्मदी, तारीख़-ए-फ़िरोज़शाही, सैयद मोहम्मद कमाल वास्ती की असरारे कशफ़े सूफ़िया, मुगल बादशाह बाबर का दीवान, दीवान-ए-हाफ़िज़ शीराज़ी, जौहर आफ़ताब्ची के तज़किरातुल वाक्यात, मोहतशिम काशानी का दवाज़ देह बन्द को प्रकाशित करवाया।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि नवाब सैयद रज़ा अली ख़ाँ के निर्देश पर सैयद मुईन उद्दीन नदवी ने मोहम्मद आरिफ़ कंधारी के तारीख़-ए-अकबरी के लेख को तैयार किया। इसके बाद डॉ0 सैयद अज़हर अली ने इस मतन (लेख) पर काम किया। अंत में यह कार्य मौलाना इम्तियाज़ अली ख़ाँ अर्शी पूर्व लाइब्रेरियन, किताब ख़ाना-ए-रज़ा को मिला जिन्होंने तारीख़-ए-अकबरी का संपादन कर उसे 1962 में प्रकाशित करवाया। इसकी कापियां अब ख़त्म हो गई हैं। विद्वानों की भारी मांग को देखते हुए मैंने इसके पुनः प्रकाशन की व्यवस्था की है

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ताकि 'तारीख़े अकबरी' के फ़ारसी लेख (मतन) से विद्वान लाभ उठा सकें।

'नादिरात-ए-शाही' एक अद्वितीय पाण्डुलिपि है जो शाह आलम सानी का देवनागरी लिपि और फ़ारसी लिपि में लिखा विशेष रूप से हिन्दी कलाम है। डॉ0 किश्वर सुल्ताना, पूर्व उपाचार्य राजकीय महिला स्नाताकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर ने इस पाण्डुलिपि का सांस्कृतिक और साहित्यिक महत्तव उद्घाटित करते हुए आलोचनात्मक विश्लेषण बड़ी मेहनत से प्रस्तुत किया है। इसमें उन्होंने जगह-जगह संदर्भ में कुछ चीज़ों को बड़ी तलाश के बाद विवरण सहित लिखा है। उदाहरणार्थ नौरोज़ के सम्बन्ध में उन्होंने पूरा विवरण दिया है कि किन-किन देशों में यह मनाया जाता है और हमारे पारसी भाई इसे विशेष तौर पर मनाते हैं।

'नदिराते शाही' को 1944 में नाज़िमे कुतुबख़ाना, वर्तमान रामपुर रज़ा लाइब्रेरी ने आला हज़रत फ़रमारवाये रामपुर दामोइक़बालोहुम व मुल्कोहुम (नवाब रज़ा अली ख़ॉ) के आदेश पर सम्पादित करके प्रकाशित कराया था। दोबारा इसे 2006 में रामपुर रज़ा लाइब्रेरी ने प्रकाशित किया लेकिन इस संस्करण में परिवर्तन यह हुआ कि एक पृष्ठ पर देवनागरी लिपि में लिखा हुआ कलाम है और उसके सामने ब पृष्ठ पर फ़ारसी लिपि में वही कलाम है जबकि इम्तियाज़ अली ख़ॉ अर्शी के सम्पादित किये हुए पत्रों की व्यवस्था इस प्रकार है कि देवनागरी लिपि के नीचे फ़ारसी लिपि में वही पंक्तियां लिखी हुई हैं। 2006 के एडिशन में एक इज़ाफ़ा यह भी हुआ है कि नादिराते शाही की मूल पाण्डुलिपि भी इसके साथ प्रकाशित कर दी गई है।

डॉ0 किश्वर सुल्ताना का यह काम हिन्दी जगत के लिये

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बड़ी अहमियत रखता है और ये पहली बार आलोचनात्मक दृष्टि से हिन्दी साहित्य में पाठकों के समक्ष आ रहा है। मैं इनके इस काम पर शुभकानायें देता हूँ।

17 फरवरी 2015

प्रो. सैयद मुहम्मद अज़ीज़ उद्दीन हुसैन
निदेशक, रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# अपनी बात

हिन्दी साहित्य अपने में कितना समृद्ध है इसका अंदाज़ा संभवतः स्वयं हमें भी नहीं है। शाह आलमें सानी, अज़ीज़ उद्दीन आलमगीर सानी के पुत्र, मुअज़उद्दीन जहाँगीर शाह के पोते और शाह आलम अव्वल के परपोते थे। अन्य मुग़ल शहज़ादों की भाँति यह भी साहित्य प्रेमी और साहित्यकार थे। इन्होंने पद्य और गद्य दोनों विद्याओं में रचनाएँ लिखी हैं। 'नादिराते शाही' अबुल मुज़फ़र जलाल उद्दीन मोहम्मद शाह आलमे सानी बादशाहे हिन्दुस्तान के उर्दू, फारसी और हिन्दी कलाम का मुरत्तब है। जिसे शाह आलमे सानी के आदेश पर 1212 हिजरी (1797 ईसवी) में मोस्तव किया गया था शाह आलम के फ़ारसी और उर्दू कलाम के मजमूए मिलते हैं। लेकिन हिन्दी के कलाम की कोई पाण्डुलिपि किसी पुस्तकालय में अभी तक नहीं मिली है। सौभाग्य से शाह आलम

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की हिन्दी कविताओं, दोहों, सीठनों, स्तुति पीराँ, मेंहदी, नायिका भेद आदि की पाण्डुलिपि रामपुर रज़ा लाईब्रेरी में सुरक्षित है। इसमे शाह आलमे सानी का हिन्दी, फ़ारसी, उर्दू और पंजाबी काव्य इस प्रकार लिखा मिलता है कि ऊपर देवनागरी लिपि में काव्य लिखा हुआ है और वही काव्य पंक्तियाँ नीचे फ़ारसी लिपि में लिखी हैं।

इस पाण्डुलिपि को इम्तियाज़ अली ख़ाँ अर्शी नाज़िमे कुतबख़ाना (लाइब्रेरियन) ने नवाब रामपुर के आदेश पर, 1944 में अपने दीबाचे के साथ प्रकाशित कराया था। यह पाण्डुलिपि हिन्दी और उर्दू टाइप में छपी है। दूसरी बार 2006 ई0 में लाइब्रेरी ने इसे पाण्डुलिपि की छाया प्रति के साथ प्रकाशित किया।

मेरी रुचि अबुल मुज़फ़र जलालउद्दीन मोहम्मद शाह आलमे सानी बादशाह–ए–हिन्दुस्तान से इस प्रकार प्रारंभ हुई कि 'नादिराते शाही' को जब मैंने पढ़ना शुरू किया तो मेरी हैरत की इंतिहा न रही। 1700 ई0 में एक ऐसा मुग़ल शहज़ादा जो फारस़ी और उर्दू का कवि है उसने पंजाबी और हिन्दी में भी काव्य रचना की। अपनी दिलचस्पी के तहत मैंने कई

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आलेख शाह आलम की हिन्दी कविता पर लिखे जो प्रकाशित और प्रशंसित हुए। मेरा हौसला बढ़ा और मैंने वृहद् स्तर पर काम करने का मन बनाया। नादिराते शाही पाण्डुलिपि का अभी तक साहित्यिक (हिन्दी) और सांस्कृतिक व ऐतिहासिक दृष्टि से मूल्यांकन नही किया गया है। मैंने इस पाण्डुलिपि के इस पहलू पर काम किया है। यह कृति एक ऐसी धरोहर है जिसका इन तीनों दृष्टियों से महत्त्व है।

शाह आलमे सानी का नाम मिर्ज़ा अब्दुल्लाह और ख़ानदानी नाम आली गौहर था। बचपन में लाल मियाँ और मिर्ज़ा बुलाक़ी भी कहलाते थे। बादशाह होकर अबुल मुज़फ़्र जलाल उद्दीन मोहम्मद शाह आलमे सानी लक़ब इख्तियार किया। नादिराते शाही देवनागरी और फ़ारसी में लिखी हुई हैं।

मेरे इस शोध कार्य के विशय प्रवेश के उपरांत पाँच अध्याय इस प्रकार हैं

**प्रथम अध्याय** में शाह आलमे सानी का जीवन वृत्त है। इसमें मुग़ल बादशाह बाबर से लेकर जहाँगीर, अकबर, दाराशिकोह आदि के संस्कृत से फ़ारसी में अनुवाद, भारतीय साहित्य और संस्कृति से प्रेम और अपने जीवन में उसे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आत्मसात करने की चर्चा करते हुए शाह आलमें सानी का जन्म, जन्मकाल, पालन–पोशण, शाह आलम के विभिन्न नाम, उपनाम, लक़ब, उसका सिक्का जारी होना आदि का वर्णन साहित्य और इतिहास की पुस्तकों के संदर्भ से किया है। उसके पुत्र जहाँदारशाह का बाग़ी होना, उसके ज़ीवन की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियाँ, इलाहाबाद, पटना आदि जाने की चर्चा विस्तार से की गई है।

द्वितीय अध्याय में साहित्यकार शाह आलमे सानी की कृतियों और उनकी भाषाओं का वर्णन है। जैसे दीवान–ए–फ़ारसी, अजायबुल क़सस (गद्य रचना), मसनवी मन्ज़ूमें अक़दस, नादिराते शाही, विभिन्न भाषाओं में पाण्डुलिपियाँ, रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में नादिराते शाही की पाण्डुलिपि और विशेषकर हिन्दी काव्य रचना जो कहीं नहीं है। इसका प्रकाशन और वास्तविक पाण्डुलिपि में कहीं–कहीं जो अंतर है उसे भी उद्‌घाटित किया है।

तृतीय अध्याय में नादिराते शाही का परिचय प्रस्तुत है। उसका रचनाकाल, उसमें संगीत के ताल और स्वर पर भी बहस की है। इसलिये कि शाह आलम ने अपने पदों के ऊपर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन राग–रागिनियों के नाम भी लिखे है जिन स्वरों में वे गाये जाये। वह संगीत का भी शैदायी था और संगीत की बारीकियों का ज्ञाता भी था। उसने भारतीय संस्कृति से संबंधित भी बहुत से पद रचे हैं। इस बिन्दु पर बहस की गई है और यह सिद्ध किया गया है कि वह भारत के त्योहारों को क़िले में मनाता था।

**चतुर्थ अध्याय** में आलोचनात्मक अध्ययन है। इसमें 'रेख़ता' पर बहस कर के बताया गया है कि रेख़ता किसे कहते है और उदाहरणों में रेख़ता की ग़ज़लों पर विचार विमर्श है। सीठने, मुबारकबादें, नौरोज़, होरी पर बहस की गई। नौरोज़ क्या है। इसका सामाजिक और ऐतिहासिक महत्त्व बताते हुए यह प्रमाणित किया है कि यह तीन हज़ार साल से विभिन्न देशो में मनाया जाता रहा है तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसे मानवता की इनटैनजिबल सांस्कृतिक विरासत का दर्जा प्राप्त है। अंत में सारी बहस का निष्कर्ष है।

**पंचम अध्याय** साहित्यिक अध्ययन से संबंधित है। इसमें कवित, दोहे, नायिका भेद का संक्षिप्त शास्त्रीय परिचय देते हुए शाह आलमे सानी के नायिका भेद संबंधी अधिसंख्य पदों में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रृंगार और मान का रीतिकालीन परिपाटी पर जो चित्रण है उसकी चर्चा है। इसके अलावा मेंहदी चढ़ाने का इतिहास, ग़ौसुल आज़म की मेंहदी और तरानों की विशेषता उद्‌घाटित की गई है।

**षष्ठ अध्याय** उपसंहार है। इसमें शाह आलम के जीवन की चुनौतियाँ, उसके जीवन की ऊँच–नीच, उसका अपने नाम का सिक्का जारी करना, उसका अंधा होना, महाराजा सिंधिया का बाद में उसकी सहायता करना आदि घटनाओं का ज़िक्र है। उसके पंजाबी कलाम की सोदाहरण चर्चा है। प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद 'नादिराते शाही' जैसी अमूल्य निधि हिन्दी साहित्य जगत को देना शाह आलम का उत्कृष्ट कारनामा है जिसका ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक महत्त्व है।

मैंने अपने इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए जिन विद्वानों और विचारकों के ग्रन्थों का लाभ उठाया उनकी मैं आभारी हूँ। निजी ख़ानदानी पुस्तकालय के दुर्लभ ग्रन्थों व पाण्डुलिपियों का उपयोग किया है। रामपुर रज़ा लाइब्रेरी के निदेशक प्रो0 एस0एस0 अज़ीज़ उद्‌दीन हुसैन साहब और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्टाफ़ के प्रति आभारी हूँ जिनके सहयोग से मेरा कार्य अपने अंतिम चरण तक पहुँचा।

डॉ0 किश्वर सुल्ताना
द्वारा डॉ0 ज़हीर अली सिद्दीक़ी
चौक मोहम्मद सईद खाँ
लंगरख़ाना, रामपुर 244901
मोबाइल : 9412587041,
9756220487

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# अनुक्रमणिका

विषय प्रवेश :– पृ0 सं0

भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक विरासत 35–42

'नादिराते शाही' का ऐतिहासिक महत्त्व

प्रथम अध्याय : 43–70

शाह आलमे सानी का जीवन वृत

1. परिवार और परिवेश
2. जन्म, जन्मकाल, पिता का नाम, माता का नाम
3. बाल्यावस्था और पालन–पोषण
4. शाह आलमे सानी के विभिन्न नाम और उपनाम
5. लकब, शाह आलम का सिक्का
6. निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : 72–91

साहित्यकार शाह आलमे सानी

1. शाह आलम की कृतियाँ
2. कृतियों की भाषाएँ
3. विभिन्न भाषाओं में रचित पाण्डुलिपियाँ
4. रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में सुरक्षित पाण्डुलिपि
5. प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष
6. निष्कर्ष

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीय अध्याय : 92–106

## नादिराते शाही का परिचय

1. रचनाकाल
2. कवित्व और सांगीतिक महत्त्व
3. भारतीय संस्कृति से संबंधित पद्य
4. विभिन्न त्योहारों व महल में मनाये जाने वाले उत्सव
5. निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : 107–149

## आलोचनात्मक अध्ययन

1. ग़ज़ले रेख़ता
2. सीठने
3. मुबारकबादें
4. नौरोज़
5. होरी
6. निष्कर्ष

पंचम अध्याय : 150–188

## साहित्यिक अध्ययन

1. कवित
2. दोहे
3. मेंहदी
4. नायिका–भेद
5. तराने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय : 189—197

## उपसंहार

1. ऐतिहासिक धरोहर
2. हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि
3. विषय वस्तु की प्रासंगिकता
4. सांस्कृतिक महत्त्व

## परिशिष्ट

| | |
|---|---|
| शाह आलम का सिक्का | 208 |
| फ़ारसी ग़ज़ल | 209 |
| फ़ारसी ग़ज़ल का अनुवाद | 210 |
| शाह आलमे सानी की हस्तलिखित दास्तान | 211 |
| मूल पाण्डुलिपि की छाया | 212 |
| बल बल के स्थान पर पल पल | 213 |
| ख के स्थान पर श का प्रयोग | 214 |
| देवनागरी लिपि में चार पंक्तियों में काव्य | 215 |
| शाह आलम का फ़रमान | 216 |
| शाह आलम का मक़बरा | आवरण |

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय प्रवेश :–

## भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक विरासत 'नादिराते शाही' का ऐतिहासिक महत्त्व

साहित्य की कोई भी विधा ऐसी नहीं होती जो अपने समाज समय की सभ्यता एंव संस्कृति से अछूती हो। वह किसी न किसी रूप में अपने समय की संस्कृति की प्रतिच्छाया होती है। हर मनुष्य का अपना सांस्कृतिक परिवेश होता है, जो उसके जीवन में गतिशीलता का संचार करता है। भौगोलिक पर्यावरण के साथ–साथ सांस्कृतिक स्पन्दन का मनुष्य के जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यही संकेत उसके संस्कारों को निर्मित करते हैं, इन्हीं से आदर्श समाज का निर्माण होता है। यह एक सृजनात्मक ऊर्जा है। संस्कृति और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण कर हम अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को सुदृढ़ करते हैं।

रामधारी सिंह 'दिनकर' के अनुसार 'संस्कृति एक ऐसी चीज है जिसे लक्षणों से तो हम जान सकते हैं, किंतु उसकी परिभाषा नहीं दे सकते।[1]

आजकल किसी समाज की वे सब बातें जिनसे विदित होता है कि उसने आरंभ से अब तक कुछ विशिष्ट क्षेत्र में कितनी उन्नति की है।[2]

कतिपय पाश्चात्य विद्वानों के विचार जान लेना भी समीचीन होगा : टायलर के अनुसार :

'संस्कृति वह जटिल अभिव्यंजना है जिसमें ज्ञान,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विश्वास, कला, आचार, कानून, प्रथा एवं अन्य आदतों एवं क्षमताओं का समावेश रहता है जिसको मनुष्य ने समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त किया है।[3]

एक अन्य विद्वान लुण्डबर्ग का विचार है कि

"संस्कृति को उस व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें हम सामाजिक रूप से प्राप्त कर एवं अगली पीढ़ी को हस्तांतरित कर दिये जाने वाले फैसलों, विश्वासों तथा व्यवहार के परम्परागत प्रतिमानों से उत्पन्न होने वाले प्रतीकात्मक एवं भौतिक तत्त्वों को सम्मिलित करते हैं।"[3]

संस्कृति, सभ्यता की अपेक्षा चिरंजीवी है। यह सभ्यता के भीतर उसी तरह व्याप्त है, जैसे फूलों में उनकी सुगंध अर्थात सभ्यता वह है जो हमारे पास है किन्तु संस्कृति वह चेतना है, जो हममें व्याप्त है।

'निष्कर्ष यह है कि संस्कृति सम्यता की अपेक्षा महीन चीज़ होती है।'[5]

संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान–प्रदान से बढ़ती है। जब भी दो जातियाँ मिलती हैं उनके संपर्क या संघर्ष से एक नवीन धारा फूट निकलती है। जिसका प्रभाव दोनों पर पड़ता है। आदान–प्रदान की यह प्रक्रिया संस्कृति का आधार है। यदि यह आदान प्रदान नहीं होता है तब संस्कृति विशेष मृतप्राय हो जाती है। इसलिये सांस्कृतिक दृष्टि से वह देश और जाति महान और और शक्तिशाली है जिसने विश्व के अनेक देशों अनेक जातियों की संस्कृतियों को अपने भीतर जज़्ब करके एक बड़े समन्वय को जन्म दिया हो। इस सृष्टि से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारत जैसा विशाल देश एक मिसाल है जहाँ प्राचीन काल से अनेक संस्कृतियों का समन्वय होता रहा है जिसकी कहानी रोचक है। भारत में मुगलों के आगमन से मिली जुली संस्कृति ने जन्म लिया।

बाबर ने इब्राहीम लोधी को पराजित करके दिल्ली पर कब्ज़ा कर लिया (1526 ई0)। इस प्रकार मुगल साम्राज्य की नींव पड़ी। बाबर के पोते अकबर के समय में हिन्दुस्तान ने कौमी रियासत की हैसियत इख़्तियार कर ली थी और एक नई कौमी तहज़ीब (संस्कृति) ने जन्म लिया जिसे नई हिन्दुस्तानी तहज़ीब कह सकते हैं। बाबर और हुमायूँ को मुगल़ सल्तनत की नींव डालने का तो मौका मिला लेकिन किसी नई संस्कृति को प्रांरभ करने का मौका नहीं मिला। अकबर का लक्ष्य सद्भावना पूर्ण शासन करने का था। संभव है कुछ लोग यह सोचें कि जब अकबर मुसलमानों का मज़हबी पेशवा होने का दावेदार था तो उसके शासन को मज़हबी शासन कहना चाहिये। लेकिन एक तो शरा–ए–कानून सिर्फ दीवानी में था और वह भी मुसलमानों के लिये परन्तु हिन्दुओं के ख़ानदानी मामले उनके धर्मशास्त्रों के अनुसार तय किये जाते थे। जिस तरह अंग्रेज शासक शरा–ए–मोहम्मदी के हिसाब से मुसलमानों के व्यक्तिगत मामलों के समाधान करते थे। जैसे अंग्रेजों के शासन को इस्लामी शासन नहीं कहा जा सकता। उसी तरह अकबर के शासन को भी इस्लामी हुकूमत नहीं कहा जा सकता।

अकबर ने अपनी रियासत में विभिन्न वर्गों को बराबरी का दर्जा दिया। अकबर के समय के शासन की वर्गहीन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कल्पना उसके मित्र दार्शनिक अबुल फ़ज़ल के मस्तिष्क में बहुत स्पष्ट थी। उसका मानना था हर धर्म के लोग भगवान के बनाये हुए हैं इसलिये भगवान अपनी कृपा प्रत्येक धर्म के व्यक्ति पर करता है। अबुल फ़ज़ल का कहना था कि

> 'ज़िल्ले इलाही का करम अपनी सारी प्रजा पर होना चाहिये और हर धर्म के व्यक्ति से उसे प्रेम होना चाहिये।' [6]

अकबर ने जज़िये को माफ कर दिया था जो हिन्दुओं की सुरक्षा के लिये उन पर एक तरह का टैक्स था। उसने यह फरमान जारी किया कि कोई भारतवासी किसी भी धर्म का हो उसे दास (गुलाम) नहीं बनाया जा सकता। इसका अर्थ यह हुआ कि शासन ने हर धर्म के व्यक्ति को बराबर माना। फौज में बड़े पदो के लिये हिन्दुओं और विशेष रूप से राजपूतों के लिये दरवाज़े खोल दिये गये। इस प्रकार एक नवीन संस्कृति ने जन्म लिया। हिन्दुओं में शासन के लिये एक विश्वास पैदा हुआ।

अकबर के शासन काल में सम्पूर्ण प्रजा को समान दृष्टि से देखने की प्रथा थी। जिस प्रकार मुसलमान फकीरों और सन्तों को रियायतें दी जाती थीं उसी तरह हिन्दू साधु–सन्तों को भी दी जाती थीं। मन्दिरों के लिये ज़मीनें दी गईं जिनके फरमान आज भी मौजूद हैं। यह परम्परा औंरगज़ेब के शासनकाल तथा उसके बाद के मुगल शासकों तक मिलती है।

मुगल शासकों के उत्साहवर्धन से मौलिक लेखन और अनुवाद के क्षेत्र में बहुत उन्नति हुई। इसमें हिन्दु और मुसलमान

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दोनों सम्मिलित दिखते हैं। हिन्दुओं को फारसी भाषा पर पूर्णाधिकार था तथा मुस्लिम विद्वानों को संस्कृत भाषा पर महारत हासिल थी।

रामायण और अथर्ववेद के प्रथम फारसी अनुवाद में अब्दुल कादिर बदायूंनी के साथ एक विद्वान पण्डित भी शामिल थे। महाभारत का अनुवाद कई हिन्दू–मुस्लिम विद्वानों का मिला जुला कारनामा है। भगवत् पुराण और अन्य संस्कृत पुस्तकों के अनुवाद दोनों धर्म के विद्वानों ने किया। दाराशिकोह ने उपनिषदों, भगवद्गीता और योगवशिष्ठ के अनुवाद करवाये और स्वंय भी किये। उसने स्वयं 'मजमआउल बहरीन' के नाम से एक पुस्तक हिन्दु और इस्लामी तसव्वुफ के तुलनात्मक अध्ययन पर लिखी। इतिहास के क्षेत्र में अबुल फ़ज़ल की अकबर नामे और आइने अकबरी, ग़ैरतख़ां की शाहजहाँनामे, चन्द्रभान ब्राह्मण की चहार चमन, भीमसेन की तारीख़ें दिलकुशा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पुस्तकें लिखी गईं। इन पुस्तकों से यह सिद्ध होता है कि उस काल के लेखकों, अनुवादकों, इतिहासकारों, मुंशियों और कवियों ने व्यक्तिगत विचार धारा से ऊपर उठ कर लेख़न के क्षेत्र में काम किया। इसी सिलसिले की एक कड़ी शाह आलमे सानी भी हैं। यह एक ऐसे शासक थे जो अरबी, फारसी, उर्दू, तुर्की, संस्:त, हिन्दी और पंजाबी भाषाओं में सिद्धहस्त थे (जन्म 14 जून सन् 1728 ई0)। उन्होंने केलिग्रांफी भी सीखी थी और 'नस्क' व 'नस्तालीक' खूब लिखते थे, शेर–ओ–सुख़न कहने का बहुत शौक था। फारसी और उर्दू में 'आफताब' और भाषा में 'शाह आलम' तख़ल्लुस करते थे।

'नादिराते शाही' शाह आलम की फारसी, उर्दू, हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और पंजाबी कविताओं का संकलन है। इस संकलन में सबसे अधिक काव्य पंक्तियाँ हिन्दी में हैं इस दृष्टि से इसका ऐतिहासिक महत्त्व बढ़ जाता है। इस संकलन की मौलिक पाण्डुलिपि रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में सुरक्षित है। सन् 1944 ई0 में पुस्तकालय ने इसका प्रकाशन करवाया। पुस्तक के अंत के हिन्दी दोहे से ज्ञात होता है कि इसका नाम बादशाह के हुक्म पर 'नादिराते शाही' रखा गया था:

मोद उपावे चित्त को, सबे रसन को धाम
"नादिराते–शाही" धरयो या पोथी को नाम

इसके बाद की फारसी रूबाई से ज्ञात होता है कि 1212 हिजरी (1797 ई0) में यह पुस्तक स्वयं बादशाह शाह आलम के आदेश से सुलेख की गई थी। और इसका नाम नादिराते शाही रखा गया।

नादिराते शाही पुस्तक का साहित्यिक, सांस्कृतिक, सांगीतिक और ऐतिहासिक इन सभी दृष्टि से महत्त्व है। बादशाह ने अपनी ग़ज़ले और अन्य काव्य पंक्तियों को लिखते समय विभिन्न राग–रागिनियों में बांधा है। पंक्तियों के ऊपर उस राग और ताल का नाम भी लिख दिया है जैसे :

(तोड़ी, बँधा तिताला)

ऐ री आली, यों जी चाहत मोरा रहे पिया के संग,
अब तो देखन को तरसत नैन, यौं कहत है नीको रंग [7]

स्पष्ट है कि बादशाह की कविताओं को रागिनियों के माध्यम से सहज गाया जा सकता है। इस पुस्तक में नात और हम्द का स्वरूप भी मिलता है :

हज़रत रसूल मकबूल का साया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"शाहे आलम" के सीस पर सदा रहे बनी
आदी अन्त लूं राज काइम रहे,
होवेगो सातों पादशाहत को धनी[8]

मुबारकबादें, जश्नें, नौरोज़, समधी–समधन हंसी मज़ाक से संबंधित अनेक कविताएँ जो उस काल में लाल किले में मनाये जाने वाले धार्मिक त्योहारों और रस्मों से संबंधित हैं। इनसे पता चलता है यह सारे त्योहार और समाजी रस्में किले में धूमधाम से मनायी जाती थीं जैसे ईद बकरीद, चहारशंबा, नौरोज़, बाग़ की सैर, शबबरात, ग़ौस उल पाक की मेंहदी, होली, दिवाली, वसंत, जन्मोत्सव, छठी मंगल गान, गोधनपूजन, सुरसती पूजन इत्यादि। इनमें बनने वाली खाद्य सामग्री जैसे पूरी कचौरी, समोसा, पापरी, सुहाली का ज़िक्र भी है। साम्प्रदायिक सद्भाव और सुखद साँस्कृतिक परिवेश की झलक मिलती है। इन जश्नों या समारोहों में गाने बजाने में प्रयुक्त होने वाले साज़ों के नाम भी हैं :

(तोड़ी, चौताला)

बीन रबाब, तंबूरा, सितार, कानून, दमामे, सारिंगी, मुहचंग
झांझ, मंजीरा और ढोलकी, दाइरा, बांसरी, करह और हीचंग
खटजरी और कटतार लिये सुरनाई भली करनाई अबपंग
गाय गुनी "शाहे आलम" को देत मुबारकी बजाये मिरदंग।[9]

उपर्युक्त पद्य में जिन वाद्य यन्त्रों के नाम हैं वे सभी भारतीय परिवेश में बजाये जाते हैं और हर्षोल्लास का माहौल निर्मित करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## सन्दर्भ

1. हमारी सांस्कृतिक एकता – रामधारी दिनकर, पृ0 1, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23, दरियगंज, नयी दिल्ली – 110002

2. मानक हिन्दी कोष, पांचवां खण्ड पृ0 243, सम्पादक रामचन्द्र वर्मा

3- 'Culture is that complex whole which includes knowledge, belief, art morals, Law, custom and any other capabilities and habits acquired by men as a member of society.'
-E. B. Tylor, Primitive culture, pg 1

4- Culture may be defined as a system of socially acquired and transferred standard of judgement, belief and conduct, as well as the standard of judgement, belief and conduct conventional patterns of behaviour.
-Lundberg, 'Sociology pg 172 (1968)

5. हमारी सांस्कृतिक एकता – रामधरी सिंह दिनकर पृ0 2

6. अबुल फज़ल आइने अकबरी बहलावा कौमी तहज़ीब का मसला : सैय्यद आबिद हुसैन, तरक्की उर्दू ब्यूरों, नई दिल्ली, पृ0 90, 1980

7. नादिराते शाही – शाह आलमे सानी, पृ0 210, हिन्दुस्तान प्रेस रामपुर 1944

8. नादिराते शाही – शाह आलमे सानी पृ0 71 हिन्दुस्तान प्रेस, रामपुर

9. वही पृ0 87

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथम अध्याय

# शाह आलमे सानी का जीवन वृत्त

## परिवार और परिवेश

मुगल बादशाह जब भारत में दाख़िल हुए तो यहाँ की जलवायु, यहाँ का रहन–सहन, भाषा, रीति–रिवाज, त्योहार, खान–पान, यहाँ तक की ऋतुएँ सब कुछ मुगलों के लिये नया था। चूंकि उन्हें यहाँ रहना और बसना था इसलिये सम्पर्क की भाषाएँ (देसी भाषाएँ) सीखना उनके लिये आवश्यक था। अतः मुगल शासक बाबर जब भारत में दाख़िल हुआ तो देशी भाषा से इतना प्रभावित हुआ कि उसने अपने एक तुर्की शेर की प्रथम पंक्ति पूरी की पूरी देशी भाषा में और उसी शेर में दूसरी पंक्ति में दो शब्द हिन्दी में नज़्म किये :[1]

मुझ का ना हुआ कुच हवसे मानक व मोती
फुकरा हलीग़ा बस बूलगू सैदूर पानी व रोती

जहांगीर ने अकबर के आदेश पर हिन्दी पढ़ी थी दाराशिकोह की रुचि इतनी बढ़ी कि उसने संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। जहांगीर के आदेश पर सादुल्लाह मसीह ने रामायण को फारसी में नज़्म किया था। दाराशिकोह ने उपनिषदों का अनुवाद सिर्रे अकबर के नाम से फारसी में स्वयं किया था। रामपुर रज़ा पुस्तकालय में 'योग वशिष्ठ' सुरक्षित है। यह भी दाराशिकोह से मन्सूब[2] है। इसकी लिपि फारसी है। इसमें वह विभिन्न धर्मों के बारे में लिखते हुए कहता है कि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारत में हिन्दु कौम के पास वेद हैं और उसे आसमानी किताब कहा जाता है। पूर्ण मुगल दौर पर दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं कि मुगलों ने भारतीय साहित्य, भारतीय भाषाओं और ललित कलाओं को समुन्नत करने में अपना विशिष्ट योगदान दिया है। अकबर भारतवर्ष के संगीत और उसकी राग–रागिनियों का अनन्य प्रेमी था। तानसेन को मियाँ तानसेन का ख़िताब उसी के काल में प्राप्त हुआ। अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना के दोहों से कौन परिचित नहीं है। उनकी कला सृष्टि को और निखारने के लिये अकबर ने उन्हें पूर्ण प्रश्रय दिया।

अकबर के काल में अनुवाद का एक विभाग स्थापित था। इसके माध्यम से संस्कृत की प्रसिद्ध पुस्तकों के अनुवाद फारसी में हुए। इन पुस्तकों में मुख्य रूप से सिंहासन बत्तीसी, रामायण, महाभारत और लैलावती हैं। महाभारत का नाम 'रज़्मनामा' उसी के समय में रखा गया। खुशनवीसों (सुलेख केलीग्राफर) ने अपनी उत्कृष्ट कला का प्रदर्शन करते हुए इन पुस्तकों को अत्यंत सुन्दर हस्तलिपि में लिखा और चित्रकारों ने अपनी कलम द्वारा उन्हें सुन्दर चित्रों से आरास्त किया। औरंगज़ेब आलमगीर धार्मिक दृष्टि से कट्टर मुसलमान था। कुछ इतिहासकारों ने उसे अत्याचारी भी लिखा है परन्तु कवि भूषण, चिन्तामणि हिन्दी भाषा के कवि थे और आलमगीर ने इनकी सरपरस्ती की। एक बार शहज़ादे मोहम्मद आजम ने उन्हें भेंट में आम भेजे और प्रार्थना की, कि इनके नाम रख दीजिये। उन्होंने एक का नाम 'रसनाविलास' और दूसरे का 'सुधारस' रखा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## शाह आलमे सानी का जन्म, जन्मकाल

शाह आलमे सानी (द्वितीय) इसी सिलसिले और मुगलिया ख़ानदान का एक चिराग है।

पिता अज़ीज़उद्दीन आलमगीर सानी को फर्रुख़सैर ने कैद कर लिया था। इसी कैद के समय में सन् 1140 हिजरी (14 जून सन् 1728 ई0) को शाह आलम का जन्म हुआ।[3] लगभग छब्बीस वर्ष की आयु तक शहज़ादा आली गौहर (शाह आलमे सानी) अपने पिता अज़ीज़उद्दीन के साथ नज़र बन्दी का जीवन व्यतीत करते रहे। शाह आलमे सानी का नाम अब्दुल्लाह था। बाल्यावस्था में लाल मियाँ कहलाते थे। उनके पिता आलमगीर सानी ने उन्हें 16 अगस्त 1754 ई0 को आली गौहर का ख़िताब दिया। 24 अप्रैल 1756 ई0 को आलमगीर सानी ने उन्हें आमगीर सानी का ख़िताब दिया।[4]

## पिता का नाम, माता का नाम :–

अज़ीज़उद्दीन आलमगीर सानी के शाह आलम पुत्र हैं।[5] मोअज़उद्दीन जहाँदार शाह के पोते और जहाँदार शाह के परपोते थे। शाह आलमे सानी की माँ का नाम लालकुंवर था। मुताह–उत–तवारीख़ पृष्ठ 343 पर और कामूस– उल– मशाहीर के पृष्ठ 02 पर माँ का नाम लालकुंवर ही मिलता है। शाह आलम की माँ की मृत्यु के उपरांत ज़ीनत महल नें उन्हें गोद ले लिया था। थॉमस विलियम बेल ने अपनी पुस्तक Oriental Biographical Dictionary पृष्ठ 109 पर तथा 361, 428 पर माँ का नाम ग़लती से बिलालकुंवर लिखा है और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कामूस–उल–मुशाहीर में भी यही ग़लती दोहरा दी गयी है। अर्शी साहब ने शाह आलम नामे पृष्ठ 151, पृष्ठ 174, के हवाले से लिखा है कि नवाब ज़ीनत महल सैय्यद थीं। वाक्यात–ए–अज़फरी के अनुसार नवाब ज़ीनत महल शाह आलमे सानी की सौतेली माँ थीं। ख़ैरुन्निसा बेगम के अलावा उनकी कोई और सन्तान न थी। चूँकि ज़ीनत महल ने उन्हें गोद ले लिया था।

सैर–उल–मुताअख़रीन में भी पृ0 02 और पृ0 59 पर यही लिखा है कि वे उनकी सौतेली माँ थीं। इसलिये शाह आलम नामे के अनुसार लालंकुवर को शाह आलमे सानी (मिर्ज़ा अब्दुल्लाह, आली गौहर, लालमियाँ, जलालउद्दीन मोहम्मद शाहआलम सानी)[6] की माँ कहना उचित है।

## बाल्यावस्था और पालन पोषण

इतिहास की पुस्तकों में यह लिखा है कि शाह आलमे सानी बाल्यावस्था से ही कुशाग्र बुद्धि और परिश्रमी थे। उर्दू, फ़ारसी, हिन्दी, पंजाबी, संस्कृत, अरबी और तुर्की भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। कविता और गद्य लेखन में पारंगत थे। उन्होंने ख़त्ताती (केलीग्राफी) भी सीखी थी। उन्होंने गुलिस्ताँ (फारसी की प्रसिद्ध पुस्तक) की पाण्डुलिपि 1785 ई0 में पूर्ण की (हस्तलिखित)। सैय्यद–उस–शोअरा ने शाह आलम नबशस्त से उसकी तारीख़ निकाली। वे पुस्तकों के अलावा कतबे, (मोटे कलम में बड़े साइज़ पर ख़त्ताती (केलीग्राफी) का आला नमूना प्रस्तुत करना)। कुरान शरीफ की किताबत भी किया करते थे।[7] उन्होंने Sufism पर गहन अध्ययन किया था और सैय्यद मोहम्मद मुराद दरवेश के मुरीद थे।[8]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## शाह आलमे सानी के नाम, उपनाम और लकब

शाह आलमे सानी के पारिवारिक परिवेश और नाम की चर्चा मैनें पहले की है परन्तु अब पुनः विस्तृत विवरण प्रस्तुत है। कुंवर प्रेम किश्वर फिराकी ने वाक्याते आलम शाही में 'अबु नस्र हामी उद्दीन मोहम्मद शाह आलम' लकब लिखा है (पृ0 5)।

## शाह आलम का सिक्का :–

वास्तव में शाह आलम के सिक्के पर यह शेर है :

सिक्का जद बर हत किश्वर साया–ए–फजले एलाह
हामिये दीन–ए–मोहम्मद, शाह आलम बादशाह

एक तो यह शेर फिराकी ने ग़लत तहरीर कर दिया। सिक्के पर शेर इस प्रकार है :

हामिये दीन–ए–मोहम्मद, साया–ए–फजले एलाह
सिक्का ज़द बर हत, किश्वरे शाह आलम बादशाह

चूंकि शेर के पहले मिसरे में 'हामिये दीन–ए–मोहम्मद' को 'हामिउद्दीन' पढ़ा गया और इस प्रकार मोहम्मद के दीन के हामी के स्थान पर हामिउद्दीन मोहम्मद को शाह आलम के नाम का एक हिस्सा समझ लिया गया और इसे 'लकब' समझ कर, हामिउद्दीन मोहम्मद शाह आलम लकब करार दे दिया गया। वास्तव में हामिये दीन–ए–मोहम्मद 'सिफत'[9] है। ना कि लकब का एक हिस्सा। वास्तव में बादशाह का नाम तो मिर्ज़ा अब्दुल्लाह है जिसे इतिहासकारों ने इस्लामी कहा है और ख़ानदानी नाम आली गौहर है। बचपन में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लाल मियाँ और मिर्ज़ा बुलाकी भी कहलाते थे। बादशाह होकर अबुल मुज़फर जलालउद्दीन मोहम्मद शाह आलम सानी लकब इख़्तियार किया।

उपनाम :

शाह आलम को कविता और गद्य लेखन दोनों में बहुत रुचि थी। वह स्वयं बहुत बड़ा शायर था। फारसी और उर्दू में 'आफताब'' और भाषा में 'शाह आलम'' तखल्लुस (उपनाम) करते थे। कभी–कभी ख़ुर्शीद को भी उपनाम के लिये इस्तेमाल किया है :

तौसीफ[10] कोई कर सके क्या! ऐ 'शहे आलम'
रुतबा है तरे शेऽर का गुफ़्तार[11] से आली[12]

उपर्युक्त उदाहरण में 'शहे आलम' बादशाह का नाम नहीं बल्कि उपनाम है। शेर का अर्थ है कि ऐ शहे आलम कोई तेरे शेर की क्या प्रशंसा कर सकता है इसलिये कि तेरे शेर का जो स्तर है वह गुफ़्तगू (बातचीत) से ज़्यादा ऊँचा है। अर्थात् तेरे शेर की तारीफ और ऊँचाई, बुलन्दी और मर्तबे का जो ऊँचा मुकाम है उसे नहीं बयान किया जा सकता।

यह अर्ज़ आफताब की है तुझसे या करीम!
तख़्ते–शही पे मेरे तई रखियो जावेदां!

ऐ खुदा आफताब की तुझ से प्रार्थना है कि तू हमेशा मेरे लिये तख़्ते शाही को कायम रखना।

ख़ुर्शीद उपनाम को शाह आलम ने फारसी के एक शेर में प्रयुक्त किया है :

ना मम के दरीं बहर न गुंजद ज़े बुलन्दी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हम्माना ए ख़ुर्शीद बलज़े दिगर ए बूद

शहज़ादा आली गौहर (शाह आलमे सानी) का शुमार उन शहज़ादों में है जो एशिया की अनेक भाषाएँ जानने के बाद उस से स्वयं भी पूर्णतः लाभान्वित हुए और समाज की सेवा साहित्य, और संगीत के माध्यम से की। उनकी उर्दू फारसी नज़्में, कविताएँ जिसमें उन्होंने शहे आलम, आफताब और ख़ुर्शीद का उपनाम इस्तेमाल किया है वे राग–रागिनियों और ताल से भरपूर हैं। वह शहज़ादा जो किले की चहारदिवारी की कैद में पैदा हुआ हो और जीवन के छब्बीस वर्ष पिता के साथ नज़र बन्दी में गुज़ारे हों उसका इतनी अधिक भाषाएँ सीखना, जानना और उन पर इतनी पुस्तकें लिख देना अपने में एक बहुत बड़ा कमाल है। उसके पिता मोहम्मद अज़ीज़उद्दीन, अमादुल मुल्क गाज़ीउद्दीन ख़ाँ की मदद से 1754 ई0 में तख़्तनशीन हुए और आलमगीर सानी का लकब दिया गया तो उनके पिता ने शाह आलम की ओर ध्यान दिया और उन्हें 16 अगस्त 1754 ई0 को आली गौहर का ख़िताब दिया। 24 अप्रैल 1756 ई0 को शाह आलम का ख़िताब उन्हें दिया गया। वह अपने जीवन में बहुत कुछ करना चाहते थे लेकिन हालात यह थे कि उनके पिता आलमगीर सानी नाम के तख़्तनशीन थे। असल बादशाह अमाद–उल–मुल्क गाज़ीउद्दीन था जो बादशाह के नाम पर जो चाहता था वो करता था। शहज़ादा आली गौहर पढ़ा लिखा और ज़हीन था उसे ख़तरा यह हुआ कि कहीं वह शाह आलम को कैद में न डाल दे। इसलिये वह पिता की अनुमति से देहली छोड़कर चला गया। उस ज़माने में भारत देश के हालात ख़राब हो चुके

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थे। 1757 ई0 में पलासी का युद्ध हो चुका था। अंग्रेज़ों ने सिराजउद्दौला को शिकस्त देकर उसे तख़्त से उतार कर मीर जाफर को तख़्त नशीन कर दिया। बावजूद इसके कि 1757 ई0 में अहमदशाह अब्दाली ने आली गौहर (शाह आलमे सानी) को वारिस–ए–तख़्त करार दे दिया था लेकिन उसके साथ उसे कोई इलाका नहीं दिया गया था। इसी अन्तराल में अमाद–उल–मुल्क ने बादशाह मोहम्मद आलमगीर सानी पर दबाव डाला कि वह शहज़ादा आली गौहर (शाह आलमे सानी) को देहली वापस बुला ले। शहज़ादा देहली वापस आ गया परन्तु दरबार में नहीं गया। अमाद–उल–मुल्क के सिपाहियों ने मौका पाकर हमला कर दिया परन्तु शहज़ादा मुकाबला करता हुआ बच निकला। मराठा सरदार विट्ठल शिव देव के ख़ेमे में चला गया। अमाद–उल– मुल्क ने बादशाह पर दबाव डाला कि वह शहज़ादे को आक (विलग) कर दे। हिदायत बख़्श को बिहार का सूबेदार बना दिया। दूसरी ओर राजा राम नारायन किला बन्द हो गया था और शहर के सारे दरवाज़े बन्द कर दिये थे। इसी ज़माने में आली गौहर ने पटना पर क़ब्ज़ा करने का प्रयास किया परन्तु सफल न हो सका। यहीं से वह देवा के राजा की दावत पर देवा पहुँचा और वहाँ से दक्षिण बिहार चला गया। यहीं उसे अपने पिता आलमगीर सानी की हत्या[13] की सूचना मिली (29 नवम्बर 1759 ई0) यह समाचार सुनते ही उसने 4 जमादि–उल–अव्वल 1173 हिजरी के अनुसार 24 दिसम्बर 1759 ई0 को अपनी बादशाही का ऐलान कर दिया।[14] तज़करा–ए–मुसर्रत अफज़ा[15] में लिखा है :

"चूं ई ख़बर बसमा मुबारकश रसीद चहारुम जमादि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अव्वल सन् यक हज़ार व यक सद हुताह दो सै दर हवाली अज़ीमाबाद औंरगफरमाखाए आरास्त व ख़ुद रा शाहआलम मुलक्कब साख़्तसाल–ए–जूलूस गुता शाएरे यक।

जहे शाह आली गोहोर अदले गुस्तर
बऊ ताज ओ तख्त व नगी शुद मुसल्लम
बरुं आरसाले जुलूसे हुमायूँ
जे सुल्तान हिन्दुस्तान शाह आलम।।"

ऐसी कठिन परिस्थितियों और राजनीतिक उथल–पुथल के बावजूद भी शाह आलमे सानी ऐसा साहित्य प्रेमी था कि वह सर्जनारत रहा और उसने अन्य भाषाओं के साथ हिन्दी भाषा में भी विपुल साहित्य की रचना की।

शाह आलमे सानी के जीवन की कथा अत्यन्त दर्द भरी है। एक समय उसके जीवन में ऐसा भी आया कि ग़ुलाम कादर खाँ ने उसकी आँखें निकाल कर उसे नाबीना (अंधा) कर दिया। इस ऐतिहासिक परख के लिए हमें इतिहास के पन्नों को भी उलट कर देखना होगा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## सन्दर्भ

1. दीवान ए बाबर, हस्तलिखित : रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, पृ0 33 1910 ई0 में डेनिसन रास ने इस पाण्डुलिपि की छाया एशियाटिक सोसायटी बंगाल के जर्नल में प्रकाशित की थी। इसके पृष्ठ 21 पर यह शेर कुछ शब्दों के उच्चारण के अंतर के साथ प्रकाशित किया है। "कज, मांग, हलेग़ा और बुल ग़ौसी"।

2. मन्सूब = संबंधित

3. मेरातुल अशबाह : पृ0 53, मुताह–उत–तवारीख़ा, कामूस–उल–मशाहीर, ताज–उत–तवारीख़, शाह आलम नामे के सम्पादक ने पृ0 105 पर 1172 हिजरी (1759 ई0) शाहआलम की आयु का बत्तीसवां वर्ष बताया है। तीरीख़–ए–आलमगीर सानी (ऐलट :– पृ0 8, 142) में सन् 1167 हिजरी 1754 ई0 में आलमगीर के बड़े बेटे (शाह आलम की आयु 28 वर्ष लिखी है) इन दोनों विवरणों से 1140 हिजरी प्रमाणित होती है। फ्रेंकलिन ने तारीख़–ए–शाह आलम पृ0 195 पर 1794 ई0 में बादशाह की उम्र का 75 वां वर्ष बताया है जिसके हिसाब से 1719 ई0 जन्म का वर्ष ठहरता है।

नादिराते शाही – इम्तियाज़ अली अर्शी पृ0 6

4- History of the Muslims of Indo Pakistan Sub continent Vol. I - Proffesor Shah Abdur Rashid Pg. 103, Research Soceity of Pakistan, Lahore 1978

* शाह आलमे सानी आफताब, अहवाल–ओ–अदबी ख़िदमात–डा0 जमील अहमद, एजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस 1999, पृ0 22

5. तबकात शोराऐ हिन्दी : करीमउद्दीन, उ0 प्र0 उर्दू एकेडेमी, लखनऊ पृ0 141

6. गुलशन–ए–हमेशा बहार : नसरूल्लाह ख़ाँ ख़बेशगी, अंजुमन–ए तरक्की–ए–उर्दू, कराची, पृ0 08

7. तज़करा–ए–हिन्दी गोयान : ग़ुलाम हम्दानी मुसहफी, उ0 प्र0 उर्दू ऐकेडमी, लखनऊ 1985, पृ0 12

8. रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में तोहफतुल मलूक फारसी की एक पाण्डुलिपि है, इसके कातिब सैय्यद हुसैनी ने पुस्तक के अंत में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपने आप को नबेरा–ए–सैय्यद मोहम्मद मुराद दरवेश मुर्शिद बादशाह ग़ाज़ी शाह आलमे सानी लिखा है। यह पुस्तक सन् 1212 हिजरी 1797 ईसवी में बहयाते शाह आलम लिखी गई थी। शाह आलम मज़ारात और दरवेशों का बहुत सम्मान करते थे चुनांचे शाहआलम नामा : ग़ुलाम अली खाँ, पृ0 68 पर लिखा है :

"16 जनवरी 1759 ई0 आलमगीरी
शाज़–दहम–जमादि–उल–अव्वल सन पंजुम आलमगीर मन
मुकाम मुस्तुफाबाद पीर अशरफ की ज़ियारत पर आये, यहाँ
दुआ मांगी और उसी रोज़ मानकपुर पहुँचे।"

9. सिफत :– विशेषता

* मजमुआ–ए–नग़ज़ यानि तज़करा ए शोअरा ए उर्दू, हकीम अबुल कासम मीर कुदरत उल्लाह तख़ल्लुस कासम, मुर्रत्तेबा महमूद शीरानी, नेशनल ऐकेडेमी, देहली पृ0 17 # 18 #

गुलशने हमेशा बहार नसरुल्लाह ख़ाँ ख़ेशगी, अंजुमन तरक्की ए उर्दू कराची 1967, पृ0 8

किताब, कालेज फोर्ट विलियम : कलीम उद्दीन अहमद, पृ0 5

गुलशने सुख़न : मुरत्तेबा मसूद हसन रिज़वी अदीब, अंजुमन तरक्की उर्दू (हिन्दी) अलीगढ़, पृ0 50 सन् 1962

10. तौसीफ = प्रशंसा

11. गुफ़तार = बातचीत

12. आली = ऊँचा

13. An Oriental Biographical Dictionary - Thomas William Bell edited Henry George Keene Pg. 49

14. History of the Muslims of Indo Pakistan - Pg. 103- 104

15. तज़करा–ए–मुसर्रत अफज़ा : अबुल हसन अमीरउद्दीन अहमद उर्फ अमरउल्लाह इलाहाबादी, पृ0 5–6 मुर्त्तबा काज़ी अब्दुल वुदूद, पटना तबकात–ए–हिन्द : करीमउद्दीन पृ0 141

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# इतिहास

## शाह आलम का बाग़ी पुत्र जहांदार शाह :–

शाह आलम बादशाह का बड़ा बेटा मिर्ज़ा जहाँदार शाह उर्फ जवां बख़्त, सरदारों की साजिश से देहली की ओर बढ़ रहा था, यूँ कहिये कि वह एक प्रकार से बाग़ी हो गया था। दूसरी ओर राजा बघेल सिंह और बेगम समरू सरदारों की साज़िश से बादशाह शाह आलम परेशान था। नाज़िर मंज़ूर अली खाँ ने शाह आलम को शहज़ादे की ओर से और भी बदगुमान कर दिया था। ऐसी परिस्थितियों में शाह आलम ने मंज़ूर अली ख़ाँ से ही मशवरा किया। इस मशवरे के बाद बादशाह ने ग़ुलाम कादर ख़ाँ रूहेला को हिसार (अलीगढ़) की किलेदारी दिलवाकर हुक्म भिजवाया कि जालेसर तक तमाम (मिलक–इलाका या जायदाद) मिलक अपने सर्फ में लाकर, शहज़ादे को जिसके साथ मोकरमुद्दौला भी है इलाके से बाहर कर दे। मोकरमुद्दौला मय मलिक मोहम्मद ख़ाँ के लूट मार कर रहा था। बादशाह का मकसद यह था कि वह ग़ुलाम कादर का नाम सुन कर वापस लौट जायेगा।[1]

चुनांचे शहज़ादे (जहांदार शाह उर्फ जवांबख़्त) ने जब ग़ुलाम कादर ख़ाँ के आने का सुना तो उसने ग़ुलाम कादर से मुकाबला या जंग करना उचित नहीं समझा और आगरे में इस्माईल बेग ख़ाँ के पास चला गया लेकिन बाद में शहज़ादा शाह आलम के पास आ गया। बादशाह ने उसे मुख़्तार बना दिया। नाज़िर मंज़ूर अली ख़ाँ को यह बात पसन्द नहीं आयी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और साज़िश के तौर पर बादशाह के दूसरे बेटे अकबर शाह से कहा कि शहज़ादा मिर्ज़ा जहाँदार शाह जवांबख़्त मुख़तार बन गया है। अब वो तुमको परेशान करेगा और जेल में डाल देगा। मिर्ज़ा अकबर शाह ने अपने पिता शाह आलम से शिकायत की और सलातीनों में जाकर बैठ गया लेकिन शाह आलम उसे जाकर ले आया और मिर्ज़ा जवां बख़्त से कहला भेजा 'सूबा अकबराबाद हमेशा से तुम्हारे नाम है तुम वहाँ जाओ और मिर्ज़ा अकबर सूबा ए अजमेर[2] अनकरीब जायेगा।' (तारीख़ इबरत अज़ा पृ0 4)

बादशाह शाहजहाँबाद में किसी दूसरे की दख़ल अन्दाज़ी नहीं चाहता था। शाह आलम चाहता था कि ग़ुलाम कादर ख़ाँ शहज़ादे को किसी तरह कैद कर शाहजहाँबाद भेज दे। ख़्वाजाहुसैन और नवाब मोकरमुद्दौला ग़ुलाम कादर के पास शहज़ादे का पैग़ाम लेकर आये और दोस्ती का हाथ बढ़ाना चाहा। ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने इस मौके से फायदा उठाया – अर्ज़ी के ज़रिये शहज़ादे को अपने पास तलब किया। शहज़ादा 7वीं तारीख रबीउस्सानी 1200 हिजरी (1785 ई0) को फिरोज़ाबाद से रवाना हुआ। तीसरे रोज़ जालेसर पहुँचा। ग़ुलाम कादर ख़ाँ शहज़ादे के इस्तकबाल के लिये अलीगढ़ से रवाना हुआ। जब यह बात शहज़ादे को मालूम हुई कि ग़ुलाम कादर ख़ाँ स्वयं आ रहे हैं, उसने अपने बेटे मिर्ज़ा हाज़ी को पेशवाई के लिये भेजा। मिर्ज़ा हाजी नवाब ग़ुलाम कादर ख़ाँ के हाथी के पास पहुँचा तो ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने दोनों हाथी बराबर करके हाथ से मुसाफा किया, हाथी पर से नीचे नहीं उतरा। नवाब ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने मुकर्रम उद्दौला के ज़रिये दरबारी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कपड़े और अशरफियाँ तलब कीं। शहज़ादे ने इक्कीस अशरफियाँ और कबा–ए–बानाती और दस्तार–ए–सरबस्ता और कमरबन्द शाली भेज दिया। ग़रज़ जब शहज़ादा ग़ुलाम कादर के पास पहुँचा तो दोनों हाथी पर से उतरे। नवाब कादर ख़ाँ ने सात अशरफी शहज़ादे को और तीनों बेटों को एक–एक अशरफी भेंट की। उसके बाद शहज़ादा अपनी ख़वासी (ख़ास सवारी) में सवार कराकर ख़ेमेगाह में लाया। शहज़ादे ने अब्दुल कादर ख़ाँ को रुख़सत करते वक्त ख़िलत[3] माला–ए– मखा–रीद[4] व सरपेंच[5] व फील (हाथी) व अस्प (धोड़ा) व शमशीर (तलवार) व सिपर (ढाल) व पालकी झालर अता की व ख़िताब बिरादर–ए–आली–कदर का दिया।

नवाब ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने यह सोचा कि शहज़ादे का साज़–ओ–सामान कम होना चाहिये। जब माली असबाब और असासा व साज़ ओ सामान कम होगा और परिणामतः उनके हमराही अलग होंगे। इस प्रकार शहज़ादा काबू में आ जायेगा। बादशाह का आदेश और नाज़िर मंज़ूर अली ख़ाँ की इच्छा पूरी हो सकेगी। ग़ुलाम कादर ख़ाँ जब भी शहज़ादे के पास आता उसको मिले हुए बेशकीमती तोहफे ले जाया करता। बहुत सा रुपया अरबाब–ओ–निशात (गाने बजाने वाला विभाग) को दिलवाया। उसने आहिस्ता–आहिस्ता बाअसर साथियों को अलग करना शुरू कर दिया। रुहेला अक्सर शहज़ादे के लश्कर में लूटपाट करते। लश्कर वालों को किसी न किसी बहाने गिरतार कर ले जाते। शहज़ादा और उसके लश्कर में ग़ुलाम कादर ख़ाँ का ऐसा रोब था कि कोई चूँ नहीं कर सकता था। ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने शहज़ादे से तीस हज़ार रुपया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्ज़ मांगा। उसने मजबूर होकर सोलह हज़ार रुपया भिजवा दिया।

## ग़ुलाम कादर ख़ाँ का अलीगढ़ के किले पर कब्ज़ा

दसवीं तारीख़ अलीगढ़ का किला ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने ले लिया और दूसरे रोज़ किला दिखाने के बहाने शहज़ादे को अपने साथ ले आया। ग़ुलाम कादर ख़ाँ का इरादा था कि किले में शहज़ादे को गिरतार कर लेंगे। किले के दरवाज़े पर जब शहज़ादे ने फौज़ का मोर्चा और तोपख़ाने को देखा तो उसने अंदाज़ा लगा लिया कि मुझे धोखा देकर गिरतार करने की तैयारी है। उसने कहा किला बहुत अच्छी जगह है। मैं चाहता हूँ कि बेगमसाहब और शहज़ादों के साथ मैं यहाँ आना चाहता हूँ ताकि दो तीन रोज़ किले में कयाम कर सकूं। ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने सोचा कि यह और भी अच्छा है। इस तरह मैं शहज़ादे के पूरे परिवार को गिरतार कर सकूंगा। शहज़ादे ने अपने परामर्शदाताओं से परामर्श किया और यह तय किया कि सिकन्दरा की ओर कूच किया जाय और फरार का रास्ता अपनाया जाय। रात में शहज़ादा और उसके साथियों ने सिकन्दरा की तरफ कूच किया। लेकिन ग़ुलाम कादर ख़ाँ रुहेला को जैसे ही ख़बर हुई वह शयन–वस्त्रों में ही उसका पीछा करने निकल पड़ा। तारीख़–ए–इबरत अज़ा मिर्ज़ा अली मख़ज़ूम मुरादाबादी ने पृ0 7 पर लिखा है :

"उस वक्त ग़ुलाम कादर ख़ाँ के साथ कुल पाँच घुड़सवार थे। छः कोस पर जाकर पकड़ लिया। घोड़े से तलवार लेकर उतरा और शहज़ादे को बुरा–भला कहते हुए बोला कि तूने मुझे धोखा दिया। शहज़ादे ने कहा तुम्हें आकाओं

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से इस प्रकार बात नहीं करनी चाहिये। ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने जवाब दिया कि कौन मसख़रा तुझ को अपना आका मानता है। मेरा और तेरा आका दूसरा शख्स है जिसने मुझे तेरे कैद करने का हुक्म दिया है।'' शहज़ादे के लश्कर में किसी की यह जुर्रत नहीं हुई कि ग़ुलाम कादर ख़ाँ के पाँच सवारों से लड़कर शहज़ादे की हिफाज़त कर ले। शहज़ादा ग़ुलाम कादर ख़ाँ की दिल जोयी करने लगा और रुमाल–ए–शाही जो ओढ़े हुए था वो उसे दिया और कहा कि मैंने धोखा नहीं दिया है। राजा उमरावगर ने मेरे हाकिमों को फिरोज़ाबाद से उठा लिया है। मैं उस पर सख़्ती करने के लिये जा रहा हूँ। ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने कहा आज कयाम करते हैं कल मैं अपने लश्कर के साथ तुम्हारे हमराह चलूँगा और हिसार, अलीगढ़ फतेह करूँगा। ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने अपने दो पहरेदारों को शहज़ादे के ख़ेमे के बाहर छोड़ दिया और स्वयं वापस चला आया। शहज़ादे ने अपने परामर्शी के परामर्श से सिकन्दरा की ओर कूच किया। ग़ुलाम कादर ख़ाँ जब लश्कर लेकर आ रहा था, उसे दोबारा से शहज़ादे के भाग जाने की सूचना मिली। उसने फिरोज़ाबाद को चारों ओर से घेर लिया। उमरावगरने कुछ देर मुकाबला किया। उसके बाद वह हिसार को छोड़कर आगरे इस्माइल बेग के पास चला गया। इस्माइल बेग ख़ाँ ने ग़ुलाम कादर ख़ाँ के पास अपने प्रतिनिधि हकदार ख़ाँ नामी सरदार को भेजा ताकि उसके बीच सुलह और सफाई हो सके। इस्माइल बेग ख़ाँ स्वयं भी यह चाहता था कि ग़ुलाम कादर ख़ाँ उसका शरीक होकर उसकी मदद करे। इसलिये कि इस्माइल ख़ाँ के बहुत से सरदार उसे छोड़ कर चले गये थे। उसका मुकाबला जुनूबी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(दक्षिण) सरदारों (जाटों) से था। चुनांचे इस्माइल ख़ाँ और ग़ुलाम कादर ख़ाँ के बीच यह तय हुआ कि जीत में जो सम्पत्ति मिलेगी वो दोनों के मध्य आधी–आधी बंटेगी। दोनों के बीच अहदनामा सरदारों की मोहरों के साथ लिखा गया। इस्माइल ख़ाँ और ग़ुलाम कादर ख़ाँ आगे बढ़े और भरतपुर में ठहरे। राजा सिंधिया के पास से राना ख़ाँ मदद के वास्ते दो पल्टन मेजर दोबाइन लेकर गया था। सरदाराने जाट बहुत अधिक डरे हुए थे और हर कोई भागने के लिये तैयार था। लेकिन इस्माइल ख़ाँ और कादर ख़ाँ को नज़फ अली ख़ाँ की वजह से धौलपुर जाना पड़ा। नज़फ अली ख़ाँ उस समय घिरा हुआ था। इन दोनों ने दुश्मनों को खदेड़ दिया। ग़ुलाम कादर ख़ाँ और इस्माइल बेग विजय प्राप्त करके वापस हुए।

राना ख़ाँ व राजे पटेल सरदाराने जुनूबी, मलिक मोहम्मद सरदाराने जाट अपनी फौज लेकर आगे बढ़े। पच्चीसवीं माह रजब 1202 हिजरी (1787 ई0) जाट सरदारों, इस्माइल बेग ख़ाँ और ग़ुलाम कादर ख़ाँ की ओर से फौजें अरास्ता हो गयीं। जहाँगीर ख़ाँ, इस्माइल से मिल गया था इसलिये इस्माइल ख़ाँ जब जहाँगीर की तरफ से दाख़िल हुआ तो जहाँगीर ख़ाँ के सिपाहियों ने बन्दूकें ख़ाली छोड़ दीं। ग़ुलाम कादर ख़ाँ और इस्माइल की फौजें जहाँगीर के लश्कर के बीच से दाख़िल हुईं। घमासान लड़ाई हुई। ग़ुलाम कादर ख़ाँ इस्माइल ख़ाँ की विजय हुई। इस तरह कामयाबी कादर ख़ाँ के कदम चूमने लगी।

गुल मोहम्मद ख़ाँ ने मलका–ए–ज़मानिया (बेदार शाह की दादी) की तरफ से पैग़ाम दिया कि अगर शाह आलम को

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तख़्त से उतार कर बेदार शाह बेटा अहमद शाह को तख़्त पर बैठा दो और किले और शहर में हमारा बन्दोबस्त हो जाय तो दस लाख रुपया हम तुमको देंगे। छब्बीसवीं शव्वाल 1202 हिजरी (1787 ई0) में 500 सवार और पाँच सौ प्यादे लेकर ग़ुलाम कादर ख़ाँ किले के दरवाज़े पर आया और उसने यह ज़ाहिर किया कि मेरे पास फौज को तनख़्वाह देने के लिये पैसे नहीं हैं। फौज बलवा कर देगी। बादशाह ने नाज़िर मंज़ूर ख़ाँ से मशवरा किया कि ग़ुलाम कादर ख़ाँ क्या चाहता है। मंज़ूर अली ख़ाँ ने जवाब दिया कि वह अपनी फौज का इन्तेज़ाम किले के अन्दर चाहता है क्योंकि उसे अपनी जान का ख़तरा है। बादशाह ने शक का इज़हार करते हुए कहा कि मुझे इस्माइल अली ख़ाँ और ग़ुलाम कादर ख़ाँ की नीयत पर शक है। मंज़ूर अली ख़ाँ जो ख़ुद भी बादशाह को तख़्त पर से उतरवाना चाहता था। उसने ग़ुलाम कादर ख़ाँ और मोहम्मद इस्माइल ख़ाँ की तरफदारी करते हुए कहा कि वह कुरान पर मोहर लगाकर और अहदनामा लेकर आये हैं, आप ख़ुद बात कर लीजिये। बादशाह ने जवाब में कहा कि मैं अपने आपको तुम्हारी रज़ा पर ख़ुद को कुरान मजीद की पनाह में देकर राज़ी हूँ। जब बादशाह राज़ी हो गया तो उसी समय किले का दरवाज़ा रोहेला नवाब ग़ुलाम कादर के सुपुर्द करने का हुक्म दिया गया। ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने बादशाह के सिपाहियों को किले का कुल इन्तेज़ाम दे दिया। महल सरा–ए–बादशाही, तोशाख़ाना, फराशख़ाना और कुल कारख़ानेजात, ख़ानसामा वग़ैरा अमला ए शाही से निकालकर अपने से संबंधित के हवाले कर दिया। इस अर्से में गुल मोहम्मद ख़ाँ बेदार बख़्त

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को अपने साथ लाया। नवाब ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने आगे बढ़कर बादशाह की कमर से पेश कब्ज़ निकाल लिया, शहज़ादों के हाथों से तलवारें ले लीं। इसके बाद बादशाह को मय 18 शहज़ादो के सलातीनों (जहाँ सुल्तान रहते थे) में भेज दिया।

## बेदार बख़्त की तख़्त नशीनी :–

ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने बेदार बख़्त का हाथ पकड़कर तख़्त पर बैठा दिया और नज़रें दिलवाना शुरू कर दीं। नक्कार ख़ाने में बेदार बख़्त के नाम की नौबत बजने लगी।

"मिर्ज़ा बेदार बख़्त अहमद शाह का बेटा और मोहम्मद शाह का पोता 27 शव्वाल 1202 हिजरी (1787 ई0) में ऐन आलमे शबाब में तख़्त पर बैठा। उस समय उसकी आयु 29 वर्ष थी। वह अपनी दादी मलका ज़मानिया और साहेबा महल की कारसाज़ी ' से इस मकसद को व बहिमायतं ' नवाब ग़ुलाम कादर ख़ाँ पहुँचा था। नासिर उद्दीन जहाँशाह अपना लकब किया और ये सिक्का जारी किया[6] :

बज़र सिक्का ज़द साहिबे ताजो तख़्त
मोहम्मद जहाँ शाह बेदार बख़्त"

ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने शहज़ादों, बेगमों और बच्चों पर जुल्म करना शुरू किये। छुपे हुए ख़जानों और दफीने उनसे मालूम करता रहा। एक दिन उसने मौका पाकर शाह आलम को गिराया और कटार से उसकी दोनों आँखे निकाल कर उसे नाबीना (अन्धा) कर दिया।

बेगमात, बच्चों का खाना पीना बन्द कर दिया। मिर्ज़ा इस्माइल ख़ाँ ने इन ज़ुल्मों को देखकर ग़ुलाम कादर ख़ाँ से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहा कि शहज़ादों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया जाता। गुलाम कादर यह सुनकर क्रोध से आग बबूला हो गया और कहा कि क्या तुम हमारे मित्र नहीं हो? यह सुनकर इस्माइल ख़ाँ किले से निकलकर अपने लश्कर में चला गया। गुलाम कादर ख़ाँ ने शहज़ादे की औरतों और बच्चों को सलीमगढ़ भेज दिया। इसके बाद उसने बेगमों के मकानों और विभिन्न विभागों की छतें तुड़वा दीं। मिर्ज़ा अकबर शाह के मकान से चार हज़ार अशर्फियाँ, चौदह हज़ार रुपया, एक मन सोने के बर्तन, चार मन चाँदी के बर्तन और पैंतीस मन तांबे के बर्तन, दस तख़्ते दुशाले और पन्द्रह गट्ठर कमरवाब के प्राप्त हुए। तमाम शहज़ादों के मकानों से सोना–चाँदी की सामग्री मिली। मलका ज़मानिया ने परित्यक्त बादशाह के महल में जाकर नवाब ताजमहल, नवाब शाहाआबादी, मुबारक महल दुर्रानी के सामान ज़ब्त किये। नवाब शाहा आबादी के मकान से मोहर लगे दो बड़े सन्दूक, दस हज़ार अशर्फियाँ, चालीस हज़ार रुपया, जवाहरात का एक सन्दूकचा, एक मन सोने के बर्तन, एक सन्दूक सादे और जड़ाऊ आभूषण का, कुछ तख़ते दुशाले कमख़ाब के उपलब्ध हुए। चारों बेगमों को जो वस्त्र जो वे पहने थीं उन्हीं में सलीमगढ़ भेज दिया। बेलदारों ने जब एक मकान की दीवार तोड़ी तो तीस हज़ार रुपया और दो हज़ार अशर्फियाँ निकलीं। बेदार बख़्त ने सरफराज़ और तमकीन ख़्वाजा सरा को हुक्म दिया कि शाह आलम की बेगमों की नौकरानियों को रस्सी से बांधकर कोड़े मारो ताकि ये छुपे हुए ख़जाने बतायें। उन्होंने दो स्थानों को चिह्नित किया जहाँ से भरपूर मात्रा में सोने और चाँदी के बर्तन प्राप्त हुए।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नवाब मलका ज़मानिया ने ग़ुलाम कादर ख़ाँ से कहलवाया कि मुझ से जो रुपया देना तय हुआ था, वह मैं तुम्हें देती हूँ। तुम किला छोड़कर अपने लश्कर को चले जाओ। ग़ुलाम कादर ने जवाब दिया कि तुमको शहज़ादों के माल और दौलत से क्या सरोकार? यह सब ग़ौसगढ़ से लूटा हुआ है। जो ख़ुदा वन्दे आलम ने मुझे वापस दिलाया है। उसने लूटा हुआ किले का सारा कीमती सामान ऊँटों और टट्टुओं पर सवार कर आख़ून्द के साथ दो हज़ार सवार और एक पल्टन ग़ौसगढ़ को भेजा। ग़ौसगढ़ के निकट जब यह लूटा हुआ माल पहुँचा तो सिखों और गूजरों ने घेर लिया, आख़ुन्द मारा गया और सिपाही भाग गये। सारा सामान सिखों और गूजरों ने अपने कब्ज़े में ले लिया। तीस ऊँटों पर सामान और चालीस ऊँट ज़रे–नग़द (रुपये और अशरफियों की सूरत में) रास्ते में ज़मींदारों ने लूट लिये।

रुद्रजी सिंधिया ने किले में जाकर बादशाह को ढूढाँ, वह बदहाल ज़मीन पर पड़ा था। भूख के कारण निढाल था, इशारे से खाने के लिये मांगा। किले में खाने के लिये कुछ नहीं था। राना ख़ाँ को जब बादशाह का यह हाल मालूम हुआ तो उसने उनके खाने पीने की व्यवस्था की। मराठों ने किले में घुस कर जो माल शेष था उसे लूटना आरंभ किया। रुद्रजी सिंधिया ने पहरे लगवा दिये। बादशाह ने साहिबा महल से मलका ज़मानिया को सवारियाँ भेजकर ससम्मान बुला लिया। दरोग़ा दारुल ज़र्ब (सिक्का ढालने वाला विभाग) को आदेश दिया कि तीस जुलूस (राज्याभिषेक) शाह आलम का सिक्का जारी करे।[7]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन परिस्थितियों में ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने यह तय किया कि किसी तरह ग़ौसगढ़ पहुँच जाय। कुछ साथियों के साथ रात के अंधेरे में उसने कूच किया। साथी अलग–2 रास्तों पर चले। ग़ुलाम कादर अंधकार में अकेला रह गया। रास्ता दुर्गम था घोड़े का पैर एक स्थान पर दलदल में फंस गया। ग़ुलाम कादर ख़ाँ घोड़े पर से गिर गया और घोड़ा भाग गया। वह अंधेरे में भटकता रहा। प्रातः काल उसे एक बस्ती दिखायी दी। वह एक ब्राह्मण के घर के सामने पहुँचा और उस के घर के अन्दर चला गया और ब्राह्मण से कहा कि तू मुझे अपने घर में आश्रय दे और बीच रात मुझे ग़ौसगढ़ का रास्ता बताकर पहुँचा दे। अलमास (हीरा) की एक अंगूठी हाथ से उतार कर उसको दी। ब्राह्मण उस अंगूठी को देखकर यह समझ गया कि ग़ुलाम कादर अपने किये की सज़ा को पहुँचा है। यह ब्राह्मण भी किसी समय ग़ुलाम कादर का सताया हुआ था। ब्राह्मण अपने दरवाज़े को बन्द करके मराठों के लश्कर में आया और अली बहादुर के ख़ेमे में चला गया। उन लोगों को ग़ुलाम कादर ख़ाँ के अपने घर में छुपे होने की सूचना दी। नवाब अली बहादुर ख़ाँ ने ब्राह्मण के साथ कुछ सवार किये और स्वयं भी कुछ सवारों के साथ जा पहुँचा। ग़ुलाम कादर ख़ाँ को अली बहादुर ख़ाँ गिरतार करके लश्कर में ले आया। और हिसारे (घेराबन्दी) मेरठ में नवाब नाज़िर को साथियों के साथ कैद में डाल दिया। शहज़ादों को वहाँ से अपने लश्कर में ले आया। जब यह अच्छी ख़बर महाराजा सिंधिया के पास पहुँची तो वह बहुत प्रसन्न हुआ पाँच सौ रुपये की शीरनी मंगा कर अपने पीर की नियाज़ की। राना ख़ाँ को आदेश भेजा कि शहज़ादों को

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बादशाह के हुज़ूर में भेज दो। नवाब ग़ुलाम कादर ख़ाँ, नाज़िर मंजूर अली ख़ाँ और उसके साथियों को हमारे हुज़ूर में भेज दो। यकुम रबीउस्सानी (14 दिसम्बर 1787 ई0) नवाब ग़ुलाम कादर ख़ाँ नवाब सिंधिया के पास पहुँच गये। दो रबीउस्सानी को ग़ुलाम कादर ख़ाँ और नाज़िर मंज़ूर अली ख़ाँ को महाराजा ने अपने सामने बुलाकर लोहारों को आदेश दिया कि ज़म्बूरों से इनका माँस खींचो और लोहे की सलाखों से इन्हें जलाओ।[8] ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने कहा कि मैंने जो कुछ भी किया है, नाज़िर मंजूर के कहने पर किया है। मुझे शहज़ादों और बादशाह से क्या दुश्मनी थी। नाज़िर मंज़ूर अली ख़ाँ ने जवाब में कहा कि मैंने बादशाह की आँखें निकालने और बेगमों को बेपर्दा करने के लिये कब कहा था? एक बार ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने फिर मक्कारी से काम लिया। उसने कहा मैं अपनी माँ को पत्र लिखता हूँ, जो दस–बारह करोड़ रुपया लूटा हुआ है मैं उस का पता बता सकता हूँ। बाबू विट्ठल राव ने महाराजा सिंधिया से कहा कि अगर रुपया निकल आये तो क्या हर्ज है। महाराजा सिंधिया ने यह राय पसन्द की। म0 सिंधिया ने एक ख़ेमा इन्हें रहने को दे दिया और शाही खाने की व्यवस्था कर दी। महाराजा सिंधिया के पास ग़ुलाम कादर ख़ाँ की मां की अर्ज़ी आयी कि जो "माल ओ असबाब मेरे पास था सिक्खों ने छीन लिया और मुझे कैद कर लिया है। अगर आप कुछ कूवत रखते हैं तो उनसे रुपया वापस लीजिये और मुझे भी कैद से रिहा करवाइये।"[9]

महाराजा सिंधिया ने माँ का जवाब सुनकर ग़ुलाम कादर से कहा कि तूने मुझे भी चन्द रोज़ धोखे में रखा। अब

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मैं चाहता हूँ कि तेरी भी आँखे निकलवा कर ज़िन्दा शाहजहाँबाद को भेज दूँ। उसके पावों में बेड़ियाँ और गले में तौक डालकर उलटा लटकाया गया तथा शरीर पर खौलता तेल डलवाया गया जिससे वह तड़पने लगा। एक पिंजरा लोहे का जो ग़ुलाम कादर ने बादशाह के लिये बनवाया था उसमें ग़ुलाम कादर को बन्द कर दिया गया। बाद में महाराजा सिंधिया ने ग़ुलाम कादर के नाक–कान काटकर उसकी प्रसिद्धि की फिर पिंजरे में बन्द कर दिया। छठी जमादि–उस–सानी (19 दिसम्बर 1787 ई0) को उस को पिंजरे से निकाल कर ज़मीन पर गिराया और उसके हाथ–पांव बांध कर छुरी से आँखें निकलवा लीं। बाद में उसके हाथ पैर काटे और उल्टा लटका दिया। उसके कटे नाक–कान और हाथ–पांव शाहजहांबाद बादशाह के पास भेज दिये। शाह आलम को दोबारा तख़्त पर बैठा दिया गया। सिंधिया ने जो सेवायें कीं उसके कारण किले में उसका हुक्म चलने लगा और शाह आलम सिर्फ नाम का बादशाह हो कर रह गया। देश मराठों के कब्ज़े में आ गया। परन्तु सन् 1802 ईसवी में लॉर्ड लेक ने देहली पर विजय प्राप्त की और मराठों के कब्ज़े से बादशाह को छुड़ाकर एक लाख पच्चीस हज़ार माहवार पेंशन नियत कर दी। किले पर शाह आलम का ही इख़्तियार रहा। राजा और नवाब यहाँ से मिले ख़िताब पर गर्व करते थे। बादशाह का इख़्तियार नहीं था मगर सिक्के पर बादशाह का नाम शाह आलमे सानी का रहता था।[10]

सात रमज़ानुल मुबारक 1221 हिजरी (19 नबम्बर 1806 ई0) शाह आलमे सानी 78 वर्ष की आयु में इस संसार से विदा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो गया। सूबा ए बंगाल और शाहजहाँबाद में बराए नाम मुद्दते सल्तनत 48 साल पाँच महीने रही।

निष्कर्ष :—

शाह आलमे सानी एक ऐसा बादशाह है कि जो अपने पिता के कारण नज़रबन्दी के दौरान युवा हुआ। बादशाहत का ऐलान करने के बाद (1759 ई0) उसने अपने नाम का सिक्का जारी किया। ग़ुलाम कादर रूहेला उसे एक लम्बे समय तक परेशान करता रहा लेकिन उसने ग़ुलाम कादर से मुकाबला करने की हिम्मत नहीं की। उसका पिता आलमग़ीर सानी अमादुल मुल्क ग़ाज़ीउद्दीन के हाथों कठपुतली बना रहा। 1757 ई0 में पलासी का युद्ध हो चुका था। मीर जाफर अंग्रेज़ों के कारण बंगाल में सिंहसनारुढ़ हो चुका था परन्तु 1757 ई0 में अब्दाली ने शाह आलमे सानी आली गौहर को तख़्त का वारिस करार दे दिया था। अमादुल मुल्क ने बादशाह पर यह दबाव डाला था कि वह आली गौहर को देहली बुला ले परन्तु वह देहली नहीं गया। अमादुल मुल्क के सिपाहियों ने मौका पाकर आली गौहर पर हमला कर दिया। शहज़ादा मुकाबला करता हुआ बच निकला और मराठा सरदार शिव देव के ख़ेमे में चला गया। इसके बाद आली गौहर ने पटना पर कब्ज़ा करने की कोशिश की परन्तु कामयाब नहीं हुआ। यहाँ से वह बिहार चला गया।

इसका अर्थ यह हुआ कि वह जंग करके दूसरे सूबों पर कब्ज़ा करना भी जानता था और कमज़ोर पड़ने पर लड़ते हुए बच कर भागना भी जानता था। इसलिये उसे कमज़ोर बादशाह कहना उचित नहीं है। उसे अच्छे साथी नहीं मिले

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु जीवन की उथल–पुथल के बावजूद साहित्य के क्षेत्र में सृजन करता रहा। वह अपने समय का एक बड़ा साहित्यकार, हिन्दी, उर्दू, फारसी और पंजाबी का कवि था। उसके समय में किले में त्योहारों पर ऐसी रस्में अदा की जाती थीं जो भारतवर्ष के साम्प्रदायिक सद्भाव सर्वधर्म–समभाव को चिह्नित करती हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## सन्दर्भ

1. तारीख़ इबरत अज़ा – मुरत्तेबा : मिर्ज़ा अली महजूं मुरादाबादी हस्बे फरमाइश जनाब मोहम्मद सफी उल्लाह ख़ाँ साहब, रईस–ए–मुरादाबाद, बिरलास प्रेस मुरादाबाद में तबाअ हुई।

2. शाह आलम का बड़ा बेटा जहांदार शाह उर्फ मिर्ज़ा जवां बख़्त था इसे बादशाह ने अकबराबाद भेज दिया और यह कहा दूसरा बेटा अकबर शाह जल्द ही अजमेर भेज दिया जायेगा, शाहजहांबाद (देहली) के इंतेज़ाम मे मैं अपने अलावा किसी दूसरे का दख़ल पसन्द नहीं करता।

3. ख़िलत – सम्मानसूचक वस्त्र

4. माला–ए–मरवा रीद – सच्चे मोती की माला

5. सरपेंच – हुक्का

* कारसाज़ी – सूझ बूझ * बहिमायत – तरफदारी

6.तारीख़ इबरत अफज़ा – संपा0 मिर्ज़ा अली (पृ0 31) महजूं मुरादाबादी,

तबकातुश शोअरा–ए–हिन्द : करीमउद्दीन (मोअल्लेफा) उ0 प्र0 उर्दू अकादमी, पृ0 142

"ज़ाब्ते ख़ाँ की मृत्यु के उपरांत 21 जनवरी 1785 ई0 को उसका बेटा ग़ुलाम कादर ख़ाँ उत्तराधिकारी बना। उसकी इच्छा थी वह मीर बख़्शी के पद पर आसीन हो। वह शाहदरे की ओर बढ़ा। मुगल फौजें उसे नहीं रोक सकीं। 26 अगस्त 1787 ई0 को शाहआलम ने उससे बातचीत करने के लिये उसे बुलाया 15 सितम्बर 1787 ई0 को बादशाह शाह आलमे सानी ने ग़ुलाम कादर ख़ाँ को अपना नायब नियुक्त करके बख़्शी # के पद पर आसीन कर दिया और उसे 'ख़िलत' और जागीरदारी का 'फरमान' भी दिया (ख़िलत = बादशाह की ओर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से सम्मान के साथ दी जाने वाली पोशाक व तलवार और ज़र ओ जवाहर। फरमान = बादशाह की ओर से दिया हुआ आदेश)। इसके बाद ग़ुलाम कादर दोआबा में चला गया। यहाँ उसने अलीगढ़ के किले पर कब्ज़ा किया। 18 जुलाई 1788 ई० से 2 अक्टूबर 1788 ई० तक तकरीबन ढाई माह देहली पर काबिज़ रहा। इस बीच उसने शाही परिवार को बहुत अपमानित किया। 20 जुलाई 1788 ई० को शाह आलम को तख़्त से उतार दिया और 10 अगस्त 1788 ई० को उसे अंधा कर दिया। आँख़ों का एक ढेला ग़ुलाम कादर और दूसरा कंधारी ख़ाँ ने निकाल लिया।"

# शब्द 'बख़्शी

'बख़्शी' संभवतः संस्कृत शब्द भिक्षु से बना है। यह शब्द मुगलों के शासन काल में मिलता है। प्रथमतः यह शब्द बौद्धमत के पेशवा को अभिव्यक्त करता है। चीनी में होशिंग, तिब्बती में लामा और अज़तोइन (Uighur Toin) का समानार्थक है। मुगल सल्तनत में बख़्शी का पद फौज में भर्ती करने वाले और उनका वेतन देने वाले अधिकारी को कहते थे। (इन साइक्लोपीडिया ऑफ इस्लाम – पृ0 600)

श्री0 सर डेनिसन रास ने अपनी पुस्तक मारको पोलो के सफर (*Travel of Marco Polo*) में इस बात को चिह्नित किया है। इस विषय में उसने *Tong Poo* 1916 का संदर्भ दिया है। इन पृष्ठों में बारथोल्डलाफर का वह आलेख है जिसका शीर्षक 'तिब्बती भाषा में आगत शब्द' है। वह कहता है कि चन्दरदास ने इस शब्द का संबंध बक्सी से मिलाया है। मंगोल शब्द बक्सी का अर्थ गुरू अथवा आचार्य के लिये है। वह कहता है कि ये शब्द भिक्षु से नहीं बना बल्कि तिब्बती शब्द (Hor) होर की ज़ुबान अर्थात Uighur से लिया गया है। बख़्शी का पद बादशह की ज़ात से जुड़ा रहता था। वह तख़्तेशाही दायीं ओर खड़ा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता और बादशाह को फौज के बारे में बताता था। #

# सल्तनते मुगलिया का मरकज़ी निज़ामे हुकूमत–इब्ने हसन, अनुवादक आई0 ए0 भट्टी, पृ0 231–232 कौमी काउंसिल बराये फरोग़े उर्दू, नई दिल्ली, संस्करण 1999 ई0

7. तारीख़–ए–इबरत अफ़ज़ा : संपादित – मिर्ज़ा अली रज़ा, महज़ूं मुरादाबादी, (पृ0 75) बिरलास प्रेस, मुरादाबाद

8. तारीख़–ए–इबरत अफ़ज़ा : संपादित – मिर्ज़ा अली रज़ा, महज़ूं मुरादाबादी, बिरलास प्रेस, मुरादाबाद पृ0 89

9. तारीख़–ए–इबरत अफ़ज़ा : पृ0 90 संपादित – मिर्ज़ा अली रज़ा, महज़ूं मुरादाबादी, बिरलास प्रेस, मुरादाबाद

10. तोहफतुल मलूक के पृष्ठ सं0 18 पर लिखा है :

"अली गौहर ने 1761 ई0 में तख़्तनशीन होकर अपना लकब शाह आलम किया लेकिन थोड़े दिनों के बाद ग़ुलाम कादर ख़ाँ रुहेला ने उसको अंधा कर दिया। मराठो के सरदार सिंधिया को देहली पर विजय प्राप्त करने के बाद गिरतार कर लिया गया। 1830 ई0 में अग्रेज़ों ने देहली पर कब्ज़ा कर लिया तो शाह आलम को मराठों की कैद से छुड़वा कर एक लाख रुपया शाह आलम की पेंशन अंग्रेज़ों ने नियत कर दी। शाह आलम का देहावसान 1806 ई0 में हुआ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## द्वितीय अध्याय

# साहित्यकार शाह आलमे सानी

मुगल बादशाह और शहज़ादे साहित्य प्रेमी, लेखक और कवि हुए है। अतः तुज़क–ए–बाबरी प्रकाशित हो चुकी है। बाबर का एक तुर्की दीवान रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में सुरक्षित है। उसके एक शेर की चर्चा मैंने पूर्व पृष्ठों में की है। बाबर के बेटे मिर्ज़ा कामरान का फारसी दीवान प्रकाशित हो चुका है। तुज़क–ए–जहांगीरी जहांगीर की प्रसिद्ध जीवन कथा है। दाराशिकोह के उपनिषदों के अनुवाद सिर्रे अकबर से कौन परिचित नहीं है। शाह आलमे सानी के पिता आलमगीर सानी की दो पुस्तकों की पाण्डुलिपियाँ

1. मुन्तख़ब–ए–अज़ीज़ी[1] 2. मजमुआ–ए–रोज़गार[2]

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में सुरक्षित हैं।

## शाह आलम की कृतियाँ

शाह आलमे सानी आफताब ने भी मुग़लों की इस परम्परा को आगे बढ़ाया और निम्नलिखित पुस्तकें लिखीं :–

1. दीवान–ए–फारसी
2. अजायब–उल–कसस (गद्य रचना) किस्सा–ए–शाह शुजा उशशम्स
3. नादिराते शाही
4. मसनवी मन्ज़ूम–ए–अकदस
5. दीवान–ए–उर्दू

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## कृतियों की भाषाएँ

शाह आलमे सानी अनेक भाषाओं का ज्ञाता था इसलिये उसके द्वारा उचित ग्रन्थों की भाषाएँ भी अलग–अलग हैं। उनकी मुख्य कृतियाँ दीवान–ए–फारसी, अजायब–उल–कसस, नादिराते शाही, मसनवी मन्ज़ूमे अकसद और दीवान–ए–उर्दू है। जैसा कि कृतियों के नाम से स्पष्ट है दीवान, फारसी और उर्दू भाषा में हैं। अजायब–उल–कसस गद्य रचना है जोकि उर्दू में है। इसमें एक लम्बा और रोचक किस्सा है। इस कथा का उल्लेख कृतियों के अंतर्गत किया गया है। इस दास्तान को लिखने के लिये अनेक संदर्भों में 'ज़बाने हिन्दी' शब्द प्रयुक्त हुआ है। यहाँ पर यह स्पष्ट कर देना अभीष्ट होगा कि उस दौर में रेख़ता शब्द का प्रयोग उर्दू गद्य के लिये किया जाता था। मैंने यह बात अजायब–उल–कसस की भूमिका में कही है। नादिराते शाही में उर्दू, फारसी, पंजाबी और हिन्दी भाषा में रचित काव्य पंक्तियाँ हैं। सर्वाधिक रचना हिन्दी भाषा में है। होली, दिवाली, ईद, जन्मोत्सव, विवाहोत्सव, समधी–समधन के बीच हँसी ठिठोली, नायिका भेद, संयोग, वियोग, विरह का उद्दीप्त होना। यह सब कुछ हिन्दी भाषा में अभिव्यक्त किया गया है। इस कारण इस रचना का हिन्दी साहित्य के अंतर्गत साहित्यिक महत्त्व है।

दीवान–ए–उर्दू और मसनवी मन्ज़ूमे अकदस की भाषा भी उर्दू है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# विभिन्न भाषाओं में रचित पाण्डुलिपियाँ

## दीवान–ए–फारसी

दीवान–ए–फारसी के कलमी नुस्ख़े के बारे में इम्तियाज़ अली ख़ाँ अर्शी ने लिखा है कि इसकी जानकारी का माध्यम काज़ी अब्दुल वुदूद हैं। प्रोफेसर सैय्यद हसन असकरी ने इस नुस्ख़े को देखा था। पटना विश्वविद्यालय (इतिहास विभाग), इन्होंने अर्शी साहब के लिये कुछ ग़ज़लों का चयन किया था। इस दीवान का पहला शेर इस प्रकार है :

इलाही, अज़ करम चूं बादशाही दादा–ए–मारा
मोति–ए–हुक्मे मा अज़ लुत्फे कुन अकली में दिल हारा

यह पाण्डुलिपि प्यारे लाल अल फती देहलवी से हकीम नसीरउद्दीन साहब, पटना (बिहार) के पास आयी और उनसे इस पाण्डुलिपि को बिहार रिसर्च सोसायटी पटना ने ख़रीदा था। इस पाण्डुलिपि में इक्यानबे पन्ने हैं और प्रत्येक पन्ने में सतरह पंक्तियाँ हैं।

ग़ज़लों और कतात की संख्या 221 है। इस पाण्डुलिपि को ग़ुर्रा ए सफर सन् 1206 हिजरी (28 दिसम्बर 1791 ई0) को कयामउद्दीन मोहम्मद बर्दवायी ने लिख कर पूर्ण किया था।

ब्रिटिश म्यूज़ियम लंदन में एक पाण्डुलिपि शाह आलमे सानी आफताब सुरक्षित है। इसमें 147 पृष्ठ हैं और प्रत्येक पृष्ठ पर ग्यारह पंक्तियाँ हैं। इसमें शाह आलम की एक तस्वीर भी है। यह पाण्डुलिपि लखनऊ के शाही पुस्तकालय की सम्पत्ति

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थी। वहाँ से जार्ज विल्यिम हैमिल्टन के पास पहुँची और इस प्रकार ब्रिटिश म्यूज़ियम की शोभा बन गयी। इस पाण्डुलिपि के पूर्ण होने की तिथि सन् 1209 हिजरी (अप्रैल 1795 ई0) है। इसका पहला शेर इस प्रकार है :

खुदा बन्दा, बरअफरोज़ां बे नूर–ए–चिराग़म रा
लबालब अज़ शराब–ए–मार्फत गर्दान अया ग़म रा

डा0 स्प्रेंगर ने शाह अवध के कुतुबख़ानों की सूची में दो पाण्डुलिपियों की चर्चा की है प्रथम, बिहार रिसर्च सोसायटी और दूसरा ब्रिटिश म्यूज़ियम की पाण्डुलिपि की भाँति प्रारंभ होता था। ओस्लो और म्यूनिख लाइब्रेरी में भी एक–एक पाण्डुलिपि है।

एक पाण्डुलिपि नेशनल म्यूज़ियम कराची में भी सुरक्षित है। उक्त पाण्डुलिपि बारहवीं सदी हिजरी की लिखी हुई है। इसमें 358 पृष्ठ हैं और ग़ज़लों का प्रारंभ बिहार रिसर्च सोसायटी पटना वाली पाण्डुलिपि वाले शेर से होता है।

## अजायब–उल–कसस

अजायब–उल–कसस उर्दू गद्य की एक दास्तान है और इस दास्तान में शहज़ादा शुज़ा असशम्स और मलका निगार का किस्सा बयान किया गया है। अपने समय में यह दास्तान बहुत प्रसिद्ध थी और शाह आलम के किस्से के नाम से भी जानी जाती थी। मुंशी ज़काउल्लाह ने लिखा है :

"चार जिल्दों में एक किस्सा लिखा है जिससे हर ज़माने के आदमी अदना (साधारण) मुतावस्सत (बीच के) आला (उच्च वर्ग) की तर्ज़ मोआशरत (रहन–सहन)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मालूम होती थी। इसका नाम शाह आलम का किस्सा है। फसाहत और सलासत में मीर अम्मन के चहार दरवेश से कम नहीं है।"[3]

मजमुआ–ए–नग़ज़ में लिखा है :

"दीवान–ए–फारसी व रेख़ाता मरदफ मुश्तमिल बर कसाइद व ग़ज़लियात व दीगर अनवा–ए–सुख़न व किस्सा शाह शुजा अशशम्स दर नसर रेख़ाता रेख़ाता बिल जुमला बहुक्मे आंके कलाम अलमुलूक, मुल्कुल कलम बीस्त।"[4]

{(शाह आलम) ने दीवान–ए–फारसी और उर्दू (रेख़ता) कसीदे और ग़ज़लों पर आधारित और दूसरे प्रकार का साहित्य, किस्सा शाह शुजा–उश–शम्स रेख़ता गद्य में लिखा।}

## अजायब–उल–कसस की कथा

कथा इस प्रकार प्रारंभ होती है कि देश ख़ता व ख़तन का एक राजा मुज़फर शाह था। उसके कोई संतान न थी। इस कारण वह सदा दुःखी रहता था। एक दिन जब उसने अपना मुख शीशे में देखा तो उसे दाढ़ी में एक सफेद बाल दिखा। उसकी आँखें भर आयीं। उसने वज़ीर को बुलाकर कहा कि मैं सोचता हूँ कि तख़्त–ए–सल्तनत तेरे हवाले कर पहाड़ पर निकल जाऊँ। शायद के इनायत–ए–इलाही से किसी साहिबे कमाल या औलिया से मुलाकात हो जाय (भगवत् .पा से किसी ऋषि मुनि से भेंट हो और मैं अपना लक्ष्य पा लूं)। वज़ीर के भी कोई संतान न थी। दोनों मदाइन नामक एक कस्बे में पहुँचे एक बुज़ुर्ग का आशीर्वाद लिया। दोनों को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। शहज़ादे का नाम शुजा–उल–शम्स और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वज़ीर ज़ादे का नाम अख़्तर सईद रखा गया। बादशाह के आदेश से दोनों का पालन पोषण महल में एक साथ होने लगा। एक दिन सपने में शहज़ादे ने एक हसीन शहज़ादी को देखा जो कहती है मेरा नाम मलका निगार है और मैं शाहरूम कन्दलग़ की बेटी हूँ। शाहरूम और उसके वज़ीर के भी कोई सन्तान न थी। उन दोनों के यहाँ भी बेटियाँ एक सन्यासी के आशीर्वाद से हुई थीं। शहज़ादा शुज़ा उस शम्स मलका ज़रनिगार पर मोहित हो गया था। परन्तु शहज़ादे को पता चला कि शहज़ादी हर एक के पैग़ाम को ठुकरा देती है। शहज़ादा व्यापारी बन कर पानी के ज़हाजों पर सामान लाद कर समुद्र के रास्ते चला। लक्ष्य यह था कि इस प्रकार शायद बादशाह रूम की पुत्री मलका निगार तक पहुँच जाय। रास्ते में गुलरुख़ नाम के द्वीप में पड़ाव डाला ही था कि एक ख़तरनाक देव के गरजने की आवाज़ आयी। पचास गज़ लम्बा देव, दो–दो गज़ लम्बे दांत, हज़ार मन का गुरुज़ हाथ में लिये, कसरे ज़ुमरुद में दाख़िल हुआ। एक औरत खटोले पर दुशाला ओढ़े सो रही थी। देव ने उसके सरहाने रखी छड़ी को पैताने रखा और पैताने की छड़ी को सरहाने रखा। वह औरत कलमा पढ़ती हुई उठ बैठी। उस देव ने कहा मेरे तई ग़ुलामी कुबूल कर। औरत कहती है माँ बाप का ग़म दूर हो तो मैं हाज़िर होऊँ। देव के चले जाने के बाद शहज़ादा और वज़ीरज़ादा पेड़ों की आड़ से निकलते हैं और अपना हाल बताते हैं। औरत ने कहा मैं शमशाद परीज़ाद की बेटी गुलरूख़ परी हूँ। एक चाँदनी रात में सोते में यह मलाऊन मुझे उठा लाया था। अब इसकी कैद में हूँ। शहज़ादे अल–शम्स ने औरत को तसल्ली

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दी और कहा कि अब जब देव आये तो तुम उससे पूछना कि तेरी जान किस चीज़ में है। इसी बीच आँधी के साथ देव के गरजने की आवाज़ आयी। यह लोग पंड़ों के पीछे छुप गये। देव ने औरत की छड़ियाँ बदलीं। वह उठ कर बैठ गयी। औरत ने देव से कहा तुम यह बताओ कि तुम्हारी जान किसमें है कभी किसी दुश्मन ने तुम्हें मार दिया तो मैं तो यहाँ सोती रह जाऊँगी। यही कारण है कि मैं तुम्हें अभी तक अपनी गुलामी में नहीं ले पायी। देव हंसा, उसने कहा मुझे कौन मार सकता है। यह जो उंगली में अंगूठी है, मेरी जान इस में है। इसे जब कोई लेकर शोर नदी पर जायेगा तो आंधी और तूफान आयेगा। एक सन्दूक बरामद होगा। इस सन्दूक के दो टुकड़े करने पर एक डिबिया निकलेगी, डिबिया के दो टुकड़े करने पर उसमें से एक स्याह ज़म्बूर निकलेगा। अगर कोई उसे अपनी तलवार में पिरो ले तो मैं हलाक हो जाऊँगा। उस औरत ने कहा यह अंगूठी मेरे पास रख दो। इसलिये कि अगर यह तुम्हारे हाथ से कहीं गिर गयी और दुश्मनों के हाथ लग गयी तो मेरा क्या होगा? आज से पाँच रोज़ बाद मैं तुम्हें अपनी गुलामी में ले लूंगी। देव ख़ुश होकर अंगूठी औरत को दे देता है और चला जाता है। शहज़ादा शुज़ा उल शम्स और वज़ीरज़ादा पेड़ों की आड़ से निकलते हैं और गुलरुख़ परी की छड़ियाँ बदल कर उसे जगाया। परी ने सारा माजरा बयान किया। शहज़ादे ने परी से अंगूठी ली और जाकर देव को हलाक कर दिया। गुलरुख़ परी शहज़ादे की एहसानमन्द हुई और शहज़ादे को एक पर देते हुए कहा कि तुम जब मुझे याद करोगे मैं हाज़िर हो जाऊँगी। शहज़ादा और वज़ीरज़ादा यहाँ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से रुख़सत होकर अपने जहाज़ो में बैठकर चलते हैं। अचानक समुद्री तूफ़ान आता है। जहाज़ टकरा कर टूट जाते हैं और एक पटरे पर बैठकर दोनों एक सहरा के किनारे पहुँचते हैं। यह जादुई सहरा है। यहाँ पहुँच कर देखते क्या हैं कि एक सायेदार पेड़ है जिसकी शाखाएँ दो–दो कोस नीचे हैं। एक ज़िन्नारदार वहाँ खड़ा है। यह अपना हाल बयान करते हैं। भूखे–प्यासे हैं। ज़िन्नारदार उनकी मदद करता है और एक देव के पेट से सोने की चाबियाँ निकाल लेते हैं। सोने की चार चाबियों से चार अलग–अलग महल खोलते हैं जहाँ ज़र–ओ–जवाहर और माल–ओ–दौलत के ढेर लगे हैं। परियाँ इनका स्वागत करती हैं। परियों के साथ कुछ समय व्यतीत करने के बाद अपना लक्ष्य पाने के लिये शहज़ादा रोम जाना चाहता है ताकि मलिका निगार को पा सके। परियाँ कहती हैं तुम्हारा इस तरह जाना ठीक नहीं है। वे चार सौ देवों की फौज तैयार करके इनकी मदद के लिये रोम को पहले भेज देती है। चार सौ देव शहर पनाह के चारों ओर घूम कर लोगों को डराते हैं उनके जानवरों को खा जाते हैं जनता परेशान होकर बादशाह से फरियाद करती है। शहज़ादा शुज़ा उल शम्स मलका निगार के लिये अपना पैग़ाम भेजता है। मलका कुछ प्रश्न शहज़ादे के पास भेजती है। वह उसका जवाब लिख कर भिजवा देता है। बादशाह–ए–रोम और शहज़ादी शादी के लिये तैयार हो जाते हैं। शहज़ादा शुज़ा उल शम्स परियों को अपनी शादी में आमन्त्रित करता है। परियाँ बहुत खुश होती हैं और शादी का सामान लेकर आसमान परी अपनी वज़ीर ज़ादी ख़ुर्शीद परी, गुलशन परी, रूह अफ़ज़ा परी, राहत परी और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्य परियाँ परिज़ादों की फौज़ लेकर तख़्त–ए–हवादार पर सवार होकर रोम की तरफ चल पड़ते हैं। यहाँ आकर किस्सा टूट जाता है। क्योंकि इसकी शेष दो जिल्दें नहीं मिलतीं।

शाह आलमे सानी आफताब ने अजायबुल कसस दास्तान उर्दू में लिखी। डा0 ख़ावर जमील ने लिखा है :

"उस ज़माने में उर्दू ज़ुबान आमतौर पर हिन्दी और रेख़ता के नाम से मौसूम 1 थी और यही वजह है कि शाह आलमे सानी ने अपनी इस दास्तान की ज़ुबान को ज़ुबाने हिन्दी कहा है। रेख़ता का लफ़्ज़ आमतौर पर शायरी के लिये और हिन्दी का लफ़्ज़ आमतौर पर उर्दू नस्र 2 के लिये इस्तेमाल होता था।"[7]

डा0 सैय्यद अबदुल्लाह ने यह शक ज़ाहिर किया है कि एक व्यक्ति जो देख नहीं सकता वह किसी भी दास्तान को इस निरन्तरता के साथ नहीं लिख सकता।

शाह आलमे सानी को ग़ुलाम कादर रूहेला ने 10 अगस्त 1788 ई0 को नाबीना (अंधा) कर दिया था। परन्तु वह दास्तान को बोल कर लिखवा सकते थे। अजायबुल कसस की भूमिका में लिखा है :

> "जब चन्द दीवान बज़ुबाने फारसी और बजुबाने रेख़ता इरशादे हुज़ूरेवाला मुरत्तब हुए और कवित्त, दोहरे हद से गुज़रे, यकायक ये मिज़ाजे अकदस अरफे आला में आया के किस्सा ज़ुबाने हिन्दी में बइबारते नस्र कहिये।"[8]

इस कथन से यह अनुमान होता है कि पद्य लिखने के बाद उन्होंने इस दास्तान को लिखवाना शुरू किया। क्योंकि इसमें साफ लिखा है कि जब फारसी और रेख़ता के दीवान

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इरशांदे हुज़ूरेवाला (बादशाह के आदेशानुसार) पूर्ण हो गये तो शाह आलम ने यह सोचा कि एक किस्सा भी हिन्दी गद्य में कहा जाय। ऊपर की पंक्तियों में मिज़ाजे अकदस, अरफे आला शब्दों से स्पष्ट है कि यह पंक्तियाँ कोई दूसरा लिख रहा है जिसमें अलकाब[9] का ध्यान रखा गया है। यह बात भी ऊपर कही जा चुकी है कि उर्दू गद्य के लिये हिन्दी शब्द का प्रयोग होता था। अगर दास्तान अजायबुल कसस के शब्दों पर ग़ौर करे तो इससे स्पष्ट होता है कि यह दास्तान उर्दू की है। जैसे मुज़फर शाह के यह शब्द :

"सिवाय तुम्हारे किससे इज़हारे मुदुआ करें।" [10]

इस प्रकार के और बहुत से शब्द स्थान–स्थान पर प्रयुक्त हुये हैं।

इस दास्तान का नाम अजायबुल कसस रखा। वैसे इसे किस्सा शाह शुजा उस शम्स[11] और शाह आलम का किस्सा भी कहा जाता है।

शाह आलमे सानी 10 अगस्त 1788 ई0 को ग़ुलाम कादर रूहेला के ज़रिये अंधे कर दिये गये थे। इसलिये यह दास्तान उन्होंने बोल कर लिखवायी होगी। इस दास्तान में विभिन्न रस्मों की चर्चा की गयी है। उस दौर में महलों में खुशी के मौके पर नेग लेने की रस्म थी। एक अन्य रस्म 'तारे देखने' की होती थी। इसमें छठी के दिन जच्चा–बच्चा को आंगन के किनारे दालान में एक चौकी पर बैठा दिया जाता है। दोनों के सिर पर कारचोबी रूमाल बांधा जाता है। दो दासियाँ हाथ में तलवार लिये चौकी पर खड़ी होकर सात तारे गिनती हैं और दोनों तरवारों की नोंक मिला देती हैं। कुरान शरीफ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जच्चा–बच्चा के सिर के ऊपर साये की तरह पेश किया जाता है। इस सब का अर्थ होता है कि किसी तरह की बुरी बला से दोनों सुरक्षित रहें।

## नादिराते शाही

शाह आलमे सानी द्वारा रचित उर्दू, फारसी, पंजाबी और हिन्दी पदों का संकलन नादिराते शाही है। उर्दू, फारसी, में ग़ज़लें और अन्य शेर हैं पंजाबी भाषा के मात्र छः पद हैं। पंजाबी पद कहीं–कहीं बीच में संकलित हैं। सब से अधिक काव्य पंक्तियाँ हिन्दी भाषा की हैं। उर्दू में विशेष रूप से ग़ज़ले हैं, फारसी में धार्मिक विषयों, प्रेम संबंधी और नीतिपरक पद हैं। बहुसंख्य पद हिन्दी में हैं इसलिये इस पुस्तक का महत्त्व हिन्दी जगत के लिये उल्लेखनीय है। मेरी दृष्टि में इसका महत्त्व इस लिये और भी बढ़ जाता है कि शाह आलम ने अपने पदों को राग रागिनी और ताल में भी बांधा है। सम्पूर्ण ग्रंथ को पढ़ने पर शाह आलम के उस व्यापक दृष्टिकोण और साम्प्रदायिक सौहार्द का पता भी चलता है जिसे उन्होंने सफलतापूर्वक अभिव्यक्त किया है। इस प्रकार इसका सांस्कृतिक और साहित्यिक मूल्य अप्रतिम है।

नादिराते शाही का हिन्दी कलाम पढ़ने पर जो तथ्य सामने आता है वह है लाल किले के अन्दर की सेक्यूलर सोच। इसलिये कि होली, दिवाली और वसंत की मात्र चर्चा ही नहीं मिलती बल्कि इन त्योहारों पर क्या रस्में होती थीं वे सब किले में मनायी जाती रही हैं। यदि एक ओर रोज़े रखने की चर्चा है तो दूसरी ओर मंदिर में थाल सजा कर सखियों के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साथ सज–धज कर जाने की बात भी है। कुछ रस्में सिर्फ विश्वास या आस्था की बुनियादों पर मिलती हैं जैसे बीमारी के बाद अंतिम चहारशंवे (बुधवार) को बाहर जाकर बाग़ की सैर करना या सेहत के लिये छल्लों का बांटा जाना। इसी के साथ–साथ मेंहदी का चढ़ाया जाना और शाह आलम के राज सिंहासन को सदा बरकरार रहने के लिये दुआएँ और प्रार्थनाएँ और पूजा करना। इस प्रकार नादिराते शाही में रचित काव्य पंक्तियाँ भारतीय संस्ःति की मिली जुली तसवीर प्रस्तुत करती हैं।

## दीवान–ए–उर्दू

मोहम्मद हुसैन आज़ाद ने शाह आलम के चार उर्दू दीवान बताये हैं लेकिन डा0 स्प्रिंगर ने केवल एक दीवान की चर्चा की है।[12] उसका नाम दिवान–ए– आफताब लिखा है। मिर्ज़ा अली लुत्फ ने अपने तज़करे गुलशन–ए–हिन्द में इसका पहला शेर इस तरह लिखा है :

कीजिये हम दम भला क्यूंकर न शिकवा यार का
हम तो बन्दे उसके हों, वो यार हो अग़यार का

डा0 स्प्रिंगर ने लिखा है कि यह दीवान कुतुब ख़ाना मोती महल में है और इसमें 244 पृष्ठ हैं। तबकात–उंश शोअरा –ए हिन्द–करीमउद्दीन, गुलशने हिन्द : मिर्ज़ा अली लुत्फ, उमदा–ए–मुन्तख़ेबा : आज़मउद्दौला, मजमूआ–ए–नग़ज़ : कुदरतउल्लाह कासम और अब्दुल्ल ग़फूर नस्साख़ ने सुख़ने शोअरा में एक ही दीवान की चर्चा की है। इस दीवान का संदर्भ कहीं किसी कैटलॉग में नहीं मिलता परन्तु तज़करों में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शाह आलम का फुटकर कलाम ज़रूर मिल जाता है।

## मसनवी मन्ज़ूम–ए–अक़दस

मसनवी मन्ज़ूम–ए–अकदस शाह आलम की उर्दू मसनवी है। मन्ज़ूम–ए–अकदस 1 से 1201 हिजरी (1786 ई0) तिथि निकलती है। इसका अर्थ यह हुआ कि यह शाह आलम के नाबीना होने से पहले पूर्ण हो चुकी थी। 2 इस मसनवी में शाह आलम ने चीन के बादशाह मुज़फर शाह का किस्सा नज़्म किया है। यह मसनवी लगभग पन्द्रह सौ पृष्ठों की है। प्रत्येक पृष्ठ पर पन्द्रह पंक्तियाँ हैं। इस मसनवी के बारे में तबकात–उश–शोअरा–ए–हिन्द में करीमउद्दीन ने लिखा है एक मसनवी बनाम अकदस है। गार्सा द तासी ने लिखा कि एक मसनवी मंज़ूम–ए–अकदस है। पहला शेर इस में इस प्रकार है :

हम्द–ख़ुदाये अज़–ओ–व जल कीजिये बयां
मख़लूक जिसकी हैं चे ज़मीन व चे आसमां.

यह मसनवी आज उपलब्ध नहीं है।

## रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में सुरक्षित पाण्डुलिपि

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर में नादिराते शाही की हस्तलिखित पाण्डुलिपि सुरक्षित है। देवनागरी और उर्दू दोनों ही भाषाएँ अत्यंत सुन्दर ढंग से सुलिखित हैं। ऊपर देवनागरी लिपि में हस्तलिखित पंक्तियाँ हैं जिन्हें मोटे नेज़े के कलम से स्याह रोशनाई से लिखा गया है। ऊपर देवनागरी में पद लिखे हैं और नीचे फारसी (उर्दू) लिपि में लिखे हैं। पाण्डुलिपि का

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आकार 47 से0 मी0 ग 34 1/2 से0 मी0 है। मतन (Text) का आकार 35 से0 मी0 x 32 से0 मी0 है। बादामी रंग का हाथ का बना घोटा किया हुआ काग़ज़ है। प्रत्येक पन्ने पर पुश्ता पड़ा हुआ है। इस पर मोहर किताब ख़ाना–ए–आलिया रियासत रामपुर बैज़ावी (अण्डे के आकार की) शक्ल की पड़ी हुई है। स्याह (काली) गहरी रोशनाई है, कहीं–कहीं राग और रागनियों के नाम हिन्दी और उर्दू दोनों में लाल रोशनाई से लिखे हैं। जैसे– घनासरीइ कताला

पाण्डुलिपि में पृष्ठों की संख्या का तरीका पाण्डुलिपि के तरीके से नहीं है। पाण्डुलिपि का तरीका यह होता था कि पहले पन्ने का अंतिम शब्द उसके पहले आरंभ होने वाले पन्ने पर वह शब्द लिख दिया जाता था। लेकिन इसमें यह तरीका नहीं अपनाया गया है। बाद में पन्नों पर पेंसिल से नम्बर डाल दिये गये हैं।

वास्तविक पाण्डुलिपि में कुछ पदों में उर्दू (नस्तालीक लिपि) शब्दों के नीचे पूरे नुक्ते नहीं हैं। पृ0 153 पर एक पद हिन्दी में इस प्रकार है–

(कामोद, होरी)

लेवत मेरे जीय को पल पल मैं सुष चैन
दिखाय सलोनी आपनो दै दै कजरा नैन

इसमें ख के स्थान पर ष का प्रयोग है। उर्दू में पल–पल को बल–बल लिखा है। पे (پ) के पूरे नुक्ते नहीं लगाये गये हैं।

पाण्डुलिपि कैटलॉग हिन्दी काल न0 9 पर पंजीकृत है। पाण्डुलिपि पर सूची के अनुसार नम्बर 38 पड़ा हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मौलिक पाण्डुलिपि में स्थान–स्थान पर कीड़ों के खाये हुए निशान हैं और मरम्मत के निशान भी हैं। पेबन्दकारी की गई है। फटे स्थान पर बारीक काग़ज़ लगाया गया है। इस पाण्डुलिपि पर दूसरे सफे पर न0 6707 मौजूदात कलाम (प्राचीन कैटलॉग) लिखा है। इसी के नीचे मोटे कलम से नादिराते शाही दर कबत हिन्दी अंकित है।

ख़रीद मार्फत नवाब मिर्ज़ा ख़ाँ लिखा है।

(मिर्ज़ा ख़ाँ से तात्पर्य है दाग़ देहलवी)

इससे पहले भूरे पन्ने पर हाफिज़ अहमद अली शौक की हस्तलिखित निम्न इबारत उर्दू भाषा में है–

## नादिराते शाही

हज़रत शाह आलम बादशाह देहली मरहूम ने हिन्दी शायरी मय उर्दू और फारसी के जो कुछ लिखी थी। यह उस कलाम का मजमुआ है। दोहरे, कबत, मेंहदी, सेहरे, ग़ज़ल, कतात हर किस्म का कलाम है, और हर नज़्म को जिस राग और ताल में बांधा है उसको भी लिख दिया है। ख़त उर्दू के साथ नागरी में भी लिखा है ताकि हिन्दी शायरी के पढ़ने में ग़लती न हो। हर हर कलाम के बाद सफात सादा भी है जिससे मालूम होता है कि ये असल मसविदा है जो तरतीब न हो सका। इब्तेदा में एक कते में किताब का नाम और तारीख़ तसनीफ भी दर्ज है जिससे सन–ए–तसनीफ 1212 हिजरी निकलती है। अहमद अली ख़ाँ[15] हाउस होल्ड सुपरिन्टेडेंट, रामपुर स्टेट।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष

नादिराते शाही का प्रथम संस्करण हिन्दुस्तान प्रेस, रामपुर से सन् 1944 में प्रकाशित हुआ। बशीर हुसैन ज़ैदी चीफ मिनिस्टर स्टेट रामपुर का तकरीब शीर्षक से प्राक्कथन लिखा है। इसके बाद इम्तियाज़ अली ख़ां अर्शी ने शाह आलमे सानी के जीवन के बारे में लिखा है। उसकी कृतियों का परिचय दिया है। इस पुस्तक का प्रिंट उर्दू टाइप के हुरुफ (अक्षर) में है। पुस्तक के अंत में इंडेक्स दिया गया है।

नादिराते शाही का दूसरा संस्करण रामपुर रज़ा लाइब्रेरी ने 2006 में प्रकाशित किया। इसकी विशेषता यह है कि वास्तविक पाण्डुलिपि की छाया भी बांये से दायीं ओर दी गई है। ऊपर देवनागरी लिपि में हस्तलिखित पंक्तियाँ हैं जो देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि मोटे नेज़े के कलम से काली रोशनाई से लिखा गया है। पाण्डुलिपि के तरीके पर इसमें पन्नों के नम्बर प्रकाशित पन्नों पर नहीं डाले गये हैं। इसकी छपाई में एक विशेष बात यह है कि ऊपर देवनागरी में कलाम लिखा है और नीचे फारसी (उर्दू) लिपि में। दूसरी बात यह है कि फारसी लिपि में अगर किसी हर्फ (अक्षर) के नुक्ते (बिन्दी) उड़ गये हैं तो वो नुक्ते नहीं लगाये गये हैं। जैसे– बायें से दाये तरफ प्रकाशित पुस्तक के नाम के तुरन्त बाद अ पन्ने पर पहली पंक्ति इस प्रकार है :

पाता नहीं हूँ और किसी काम से लज़्ज़त

नीचे उर्दू लिपि में पाता के (پ) पे के नीचे नुक्ते उड़े हुये हैं, ये उर्दू लिपि में नहीं लगाये गये हैं। इसका अर्थ यह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ कि वास्तविक पाण्डुलिपि में जहाँ कोई हर्फ उड़ गया है उसको उसी की छाया के रूप में प्रकाशित किया है। इससे पाण्डुलिपि की वास्तविक सूरत सामने आती है।

तीसरी विशेषता है कि देवनागरी में पहली पंक्ति में
पाता नहीं हूँ और किसी काम से लज़्ज़त।।

किसी के बाद काम से लज़्ज़त के बीच जगह (Gap) छोड़ी गई है। परन्तु उर्दू में और किसी काम शब्दों के बीच जगह नहीं छोड़ी गई है। चौथी विशेषता है कि देवनागरी में चार पद दो पंक्तियों में प्रकाशित हैं जबकि उर्दू में बीच में गैप के साथ शेर एक ही पंक्ति में छपा है अर्थात् दोनों मिसरे आमने सामने हैं। (पृ0 प्रथम, न0 नहीं है)

इस दूसरे संस्करण में जो 2006 में प्रकाशित हुआ। इसमें पाण्डुलिपि के अनुसार न होकर आज के उच्चारण के अनुसार शब्दों को लिखा गया है जैसे मेहदी शब्द को मेंहदी ही लिखा गया और यही तरीका उर्दू में भी अपनाया गया है। उर्दू में मेंहदी शब्द में नून (ں) का नुक्ता दर्शाया गया है ताकि पाठक को पढ़कर अर्थ निकालने में सुविधा हो।

## निष्कर्ष

शाह आलमे सानी उन मुगल शहज़ादों में से हैं जिसे पिता की नज़र बन्दी के दौरान स्वयं भी नज़र बन्दी में रहना पड़ा था। परन्तु जब वह अट्ठाईस वर्ष का हुआ (2 जून 1754 ई0) तो अमादुल मुल्क ने तख़्त पर बैठा दिया। अर्थात् उत्तराधिकार प्राप्त हुआ। जीवन की धूप–छांह और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद वह साहित्य–प्रेमी रहा। गुलाम कादर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रुहेला उसे आजीवन परेशान करता रहा परन्तु उसने साहित्य क्षेत्र में उर्दू, फारसी और हिन्दी के दीवान साहित्य जगत को दिये जिनकी चर्चा इस अध्याय में की गई है। उसने अजायबुल कसस दास्तान भी लिखी। उसके समय में सरकारी भाषा फारसी थी। फारसी और अरबी साहित्य विपुल मात्रा में लिखा जा रहा था। रेख़ता जो गद्य में लिखी जाती थी उसे हिन्दी कहा ज़रूर जाता था परन्तु अधिकतर फारसी लिपि में लिखी गई। शाह आलम वो मुगल शहज़ादा है जिसने हिन्दी भाषा में रचना देवनागरी में लिखी। नादिराते शाही इस का बहुत बड़ा प्रमाण है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## सन्दर्भ

1. मुन्तख़ब–ए–अज़ीज़ी = फारसी भाषा में 'अख़लाकियात' पर महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। इस पुस्तक में कुछ दूसरी पुस्तकों से बहुत सी अच्छी बातें एकत्र की हैं। 1170 हिजरी (1756 ई0) में कातिब मोहम्मद अली ने इसे ख़ुशख़त सोने के कलम में (मुतल्ला) आलमगीर के लिये लिखा था। इसका कैटलॉग न0 1801 है। अख़लाक

2. मजमुआ–ए–रोज़गार = फारसी भाषा में वज़ाइफ (मंत्र) का मजमुआ है। जिसे 15 मार्च 1783 ई0 को शाह आलम के आदेश से फज़ल अली कातिब जो याकूत रकम का भाई था, अरबी लिपि में लिखा। इसका रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में कैटलॉग न0 307, इल्मे अख़लाक है।

3. तारीख़–ए–हिन्दुस्तान, जिल्द (Vol.) नौ, मुंशी ज़काउल्लाह पृ0 311 देहली 1898 ई0

4. मजमुआ–ए–नग़ज़ यानि तज़किराह शोअराए उर्दू, दर दो जिल्द अज़ हकीम अबुलकासम मीर कुदरत उल्लाह कासम, मुरत्तेबा महमूद शीरानी (मरहूम), नेशनल अकादमी, 9 अंसारी मार्केट दरया गंज, दिल्ली।

5. प्रचलित

6. गद्य

7. अजायबुल कसस – शाह आलमे सानी आफताब, मोरत्तोबा राहत अफज़ा बुख़ारी, पृ0 26, मजलिस तरक्की अदब लाहौर पृ0 73

8. अजायबुल कसस – शाह आलमे सानी आफताब पृ0 26 मोरत्तेबा राहत अफज़ा बुख़ारी मजलिसे तरक्की अदब लाहौर 1965

9. खिताब या टाइटिल

10. अजायबुल कसस – शाह आलमे सानी 'आफताब' पृ0 33, मोरत्तेबा राहत अफज़ा बुख़ारी, मजलिस तरक्की अदब लाहौर पृ0 1965

11. मजमुआ–ए–नग़ज़ कुदरत उल्लाह कासम, मुरत्तेबा हाफिज़

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शीरानी पृ0 19 लाहौर 1933

12. A Catalogue of the Arabic Persian and Hindustani Manuscript of the Libraries of the king of Oudh pg. 597, Springer Vol. I Calcutta 1854

13. मंजूमे अकदस की अंतिम पंक्ति इस प्रकार है–

मंजूमे अकदस इस की है तारीख़ खत्म व नाम

14. शाह आलम को ग़ुलाम कादर रुहेला ने 1202 हिजरी (10अगस्त 1786 ई0 को अंधा कर दिया था) को नाबीना किया था।

15. अहमद अली शौक चूंकि हाफिज़ थे इसलिये उनके नाम से पहले हाफिज़ शब्द प्रयुक्त होता है। शौक इनका उपनाम है। 'ख़ाँ' बाहदुरी का ख़िताब इनके बुज़ुर्गों को मिला था। इसलिये पूरा नाम हाफिज़ अहमद अली ख़ाँ शौक था। 20 अप्रैल 1891 ई0 के रामपुर के स्टेट ग़ज़ट में एक रोबकार (फरमान/आदेश) में लिखा है "अहमद अली ख़ाँ मुशाहेरा (वेतन) बीस रुपये माहवार कायम मुकाम मुन्सरिम नज़ूल मोकरर हों।" हाफिज़ अहमद अली ख़ाँ शौक तेरह फरवरी 1897 ई0 को मुन्सरिम कुतबख़ाना मौजूदा रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर नियुक्त हुए। 15 फरवरी 1897 ई0 के रामपुर के स्टेट ग़ज़ट में उनके उक्त नियुक्ति पत्र का आदेश मिलता है। यह ग़ज़ट रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में उपलब्ध है। रियासत रामपुर की सिविल लिस्ट प्रकाशित 1916 ई0, रियासत रामपुर, 'इजलासे हिमायूं' के अनुसार इन्हें सुपरिन्टेन्डेंट ज़ाते ख़ास नियुक्त किया गया। 23 जुलाई 1904 को कुतबख़ाने के अलावा उन्हें सेक्रेटरी बन्दोबस्त और 1906 में उन्हें रियासत रामपुर में अफसर कारख़ाना– ए– जात का अधिकारी नियुक्त किया। ये वक्फ के इंचार्ज भी रहे। 1906 ई0 को उन्हें रियासत रामपुर का सबसे बड़ा पदक तमग़ा–ए–हामिदिया मिला। उन्होंने तज़करा–ए–रामपुर के अलावा रामपुर रज़ा लाइब्रेरी की तारीख़, तारीख़–ए–कुतबख़ाना, दारुल रियासत मुस्तुफाबाद उर्फ रामपुर लिखी। उनके अनेक शोध पूर्ण आलेख प्रकाशित हुए।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीय अध्याय

# नादिराते शाही का परिचय

## रचनाकाल :

नादिराते शाही का रचनाकाल नादिराते शाही के अंतिम पृष्ठ 309 पर रचे एक पद से 1212 हिजरी (1797 ई0) मिलता है। यह समाप्ति की रुबाई निम्न लिखित है :

ई नुसखः कि हस्त जामिये जुमलः उलूम
गर्दीद बहुक्मि शाहि–आलम मरकूम
इस्ना अशर अज़ अहादू हम बूद मिआत
1212 हिजरी
कीं गश्त व नादिराति–शाही मौसूम[1]

शाह आलमे सानी के पिता अज़ीज़उद्दीन आलमगीर सानी फर्रुख़सैर की कैद में थे। उस कैद के समय में ही 17 ज़ीकद सन् 1140 हिजरी (14 जून 1728 ईसवी) को शाह आलम का जन्म हुआ।[2] वे किले में अपने पिता के साथ छब्बीस वर्ष की आयु तक नज़रबन्दी का जीवन व्यतीत करते रहे। इनका नाम मिर्ज़ा अब्दुल्लाह था। बचपन में लाल मियाँ और मिर्ज़ा बुलाकी भी कहलाते थे। बादशाह बनने के बाद अबुल मुज़फर जलालुद्दीन मोहम्मद शाह आलमे सानी लकब इख़तियार किया। मुगल शहज़ादे ज्ञान के पिपासक तो थे ही, कविता भी करते थे। शाह आलमे सानी के पिता आलमगीर सानी स्वयं भी रचनाकार थे। इनकी दो पुस्तकें[3] मजमुआ–ए–रोज़गार (फन, इल्मे अख़लाक, कॉल नं0 307)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फारसी भाषा में रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में सुरक्षित है। इसके पन्नों की कुल संख्या 608 है। प्रत्येक पृष्ठ पर ग्यारह पंक्तियाँ हैं। इसका आकार 32 X 22 सेंटीमीटर है। इसका कातिब मोहम्मद अली है।

2. मुन्तख़ब–ए–अज़ीज़ी, फारसी भाषा में रचित है। यह भी इल्मे अख़लाक, कॉल न0 1801 पर अंकित है। इस पाण्डुलिपि का प्रारंभ बिस्मिल्लाह से हुआ है। यह ग्रन्थ सोने के काम से सुसज्जित है। बिस्मिल्लाह के बाद विषय सूची दी गई है। इसमें आश्चर्य का विषय यह है कि एक अध्याय में संविधान भी दिया गया है। इस प्रकार के इल्मी वातावरण में नज़रबन्दी के बावजूद शाह आलमे सानी ने आंखें खोलीं।

नादिराते शाही का एक नुस्ख़ा रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में सुरक्षित है। इम्तियाज़ अली ख़ाँ अर्शी के अनुसार यह नुस्ख़ा दाग़ देहलवी (शायर) के ज़रिये क्रय किया गया था। हिन्दी के कलाम की चर्चा तो मिलती है लेकिन शाह आलमे सानी का हिन्दी कलाम नादिराते शाही के अलावा और कहीं नहीं मिलता। पुस्तक के अन्त में हिन्दी भाषा के एक पद से मालूम होता है कि इसका नाम बादशाह के आदेश पर नादिराते शाही रखा गया :

मोद उपावे चित को, सबे रसन को धाम
"नादिराते–शाही" धरयो या पोथी को नाम [4]

## कवित्व और सांगीतिक महत्त्व

सामान्यतया कविता दो प्रकार से की जाती है। भावप्रधान और विषय प्रधान। भाव प्रधान कविता में कवि की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यक्तिगत भावनाओं की प्रधानता रहती है। इसमें कवि की दृष्टि अंतर्मुखी और आत्मनिष्ठ होती है। वह अपनी अन्तरात्मा में प्रवेश करके अपनी निजी अनुभूतियों और भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। वह अपनी अंतरात्मा से बाहर जाकर सामूहिक या समष्टिगत सांसारिक जीवन का चित्रण करता है। भाव प्रधान कविता में कवि के व्यक्तित्व का प्राधान्य रहता है। उसमें समष्टिगत सामाजिक जीवन कवि के व्यक्तित्व के पीछे छिपा रहता है दूसरी ओर विषय प्रधान कविता में कवि का व्यक्तित्व समाज या समष्टि के जीवन में लीन हो जाता है। जब कवि अपनी रचना संगीतात्मक भाषा में व्यक्त करता है तो उसका प्रभाव दो गुना हो जाता है। क्योंकि संगीत कला काव्य से निरपेक्ष होकर स्वतन्त्र रूप में भी मानव–हृदय को मुग्ध करने की क्षमता रखती है, पर जब वह काव्य कला के साथ सामंजस्य स्थापित कर लेती है तब उसका प्रभाव अधिक स्थायी, व्यापक एवं शक्तिशाली हो जाता है।

'नादिराते शाही' शाह आलमे सानी के मुख्य रूप से हिन्दी और उर्दू, फारसी, पंजाबी काव्य का संकलन है। उनकी हिन्दी कविताओं की कहीं–कहीं चर्चा तो मिलती है लेकिन नादिराते शाही पाण्डुलिपि जो रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में सुरक्षित है, इसके अलावा कहीं नहीं मिलती।

शाह आलमे सानी ने अपने मुक्तक काव्य संकलन नादिराते शाही में अत्यंत कोमल कांत, मनोरम और संरल भाषा में अपने हृदस्थ भावों और अनुभूतियों को अभिव्यक्त किया है। जिन्हें पढ़कर अनुमान लगाया जा सकता है कि वे सहज ही गेय स्वर–लहरी में व्यक्त होती गयीं हैं। यह कवि की अपनी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेषता है कि उसने अपने आन्तरिक भावों और अनुभूतियों को सशक्त, मर्मस्पर्शी, संगीतमयी, भाषा में अभिव्यक्त किया है। शाह आलमे सानी ने काव्य की अनेक विधाओं में कविता की है जैसे ग़ज़ल, गीत, दोहे, कवित, तराने इत्यादि। उसकी कविताओं का सांगीतिक महत्त्व इस दृष्टि से है कि कवि शाह आलमे सानी संगीत प्रेमी होने के साथ संगीत शास्त्र का ज्ञाता भी था। संपूर्ण 'नादिराते शाही' में उसने नादिराते शाही के अनेक पदों के ऊपर राग–रागिनी अंकित की है और तरानों में टुकड़े भी दिये हैं जैसे राग–रागिनी का अंकित होना – ग़ज़ल में–

(तोरी, इक ताला)

जब वह नज़रें दोचार होती हैं तीर सी दिल के पार होतीं हैं
रंजिशें मेरी और उस गुल की रात–दिन में हज़ार होती हैं[5]

हिन्दी मुक्तक में –

(देवगरी, अड़ा चौताला)

आसरो राखत है तुम्हरो, अब हज़रत पीर रसूल सुनीजे
जी के मनोरत पूरे करो, "शाहे आलम" को भूमण्डल दीजे[6]

तराने में राग–रागिनी के साथ टुकड़े भी दिये हैं :–

(गौरी, बँधा तिताला)

दिर ना दीम तना तारि दानी तनोम तारि दानि
जो इन दिनों में हम सिती तुम ने यह देखी है
लाचार क्या करें, पिया, तुम सेती सीखी है [7]

श्रृंगार रस विषयक पदों में शाह आलमे सानी ने अपनी उत्कृष्ट कवित्व शक्ति और पांडित्य दोनों का अद्भुत समन्वय प्रदर्शित किया है। उन्होंने संयोग श्रृंगार के मादक और वासनामय चित्र अंकित किये हैं जिनका उल्लेख हमने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नायिका–भेद (पंचम अध्याय) में किया है। प्रेम की विह्वलता, लालसा, अतृप्ति, मिलन–सुख की तल्लीनता, आत्मविस्मृति आदि विविध मानसिक दशाओं का चित्रण शाह आलम ने सफलता के साथ किया है। मनोभावों के चित्रण में उन्होंने विशेष कुशलता दिखायी है। नायिका के हृदय की उत्कंठा, कातरता, शंका, लज्जा आदि विविध भावों की व्यंजना उन्होंने सुन्दर ढंग से की है। विरह वर्णन के अंतर्गत शाह आलमे सानी के कवित्व का निखरा हुआ रूप हमारे सामने आता है। इसमें कवि की गहन प्रेमानुभूति की अभिव्यंजना हुई है। यहाँ उनका सहज कवित्व, सहज भाषा और गतिमय छोटे छन्दों का प्रयोग विरह–वेदना को उत्कटता, स्वाभाविकता प्रदान करता है। उदाहरण प्रस्तुत है : विरह श्रृंगार –

(गौंड, इकताला)

चैन गयो सब जीय : तें, पीतम जब तें ओट,
राखी, पड़ी तन बूंद जो, लगी जिया में चोट [8]

संयोग श्रृंगार का चित्र –

(किदारा, बंधा तिताला)

चाहत हूँ, अब पीय : कूं देखूं भर भर नैन
लागी रहूँ अंग रैन कूं, बैठी करूं, सखी, बैन[9]

इस प्रकार शाह आलमे सानी के पदों में जहाँ श्रृंगार, भक्ति और तसव्वुक का रंग है वहाँ ख़्वाजा मुईनउददीन चिश्ती, हज़रत कुतुबउददीन बख़्तियार काकी का केवल ज़िक्र ही नहीं मिलता बल्कि वह आस्था भी स्पष्ट देखी जा सकती है जो इन औलियाओं के लिये वह अपने दिल में रखते हैं। ख़्वाजा मुईनउददीन चिश्ती के लिये अपने पीर का शब्द प्रयुक्त किया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं ख़्वाजा मुईनउद्दीन चिश्ती के वसीले[10] से वे अपने ख़ज़ाने को मालामाल देखना चाहते हैं और कुतुबउद्दीन बख़्तियार काकी के वसीले से अपनी मनोकामनाओं को पूर्ण होता देखना चाहते हैं–

माल मुल्क "शाह आलम" को दो, और ख़ज़ाने तुम्ही भरना
सैर करे अमराई तले लख छूटत चादर और झरना[11]

× × × × ×

हज़रत कुतुबउद्दीन की देख जागती जोत
"शाहे आलम" पादशाह की इच्छा पूरन होत[12]

काव्य रसिकों के लिये शाह आलमे सानी की कविता आत्मविभोर कर आनन्द देने वाली और शास्त्रीय संगीत पर काम करने वालों के लिये एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

## भारतीय संस्कृति से संबंधित पद –

मानव जाति ने देश और काल में विश्व के रंगमंच पर जो कुछ मन से सोचा, कर्म से किया है और भौतिक माध्यम से निर्माण किया है वही मानव संस्कृति है। ज्ञान, कर्म और रचना को संस्कृति की कोटि में रखने के लिये आवश्यक है कि वह संस्कार सम्पन्न हो और विश्व की प्राणधारा के अनुकूल हो। विश्व के गंभीर रहस्य अनन्त हैं। मनुष्य ने उन्हें समझने के अनवरत प्रयास किये हैं। अनेक संस्कृतियों का इतिहास यही बताता है। विश्व का कोई नियामक है और सारा सृष्टि चक्र सुनियोजित अनुशासन के तहत नियमन करता है। विश्व के नियमों की बुद्धिपरक व्याख्या मानवीय संस्कृति का बहुत ही मूल्यवान अंग है। इसे ही हम तत्त्व, ज्ञान, दर्शन, धर्म नीति

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदि अनेक नामों से जानते हैं। प्राणों की शक्ति का कर्ममय पराक्रम मनुष्य की अर्पूव उपलब्धियों का क्षेत्र रहा है। उसमें धर्म और नीति की जो उदात्त प्रेरणा रहती है वह संस्कृति का अंग हैं। इस तरह दर्शन, धर्म, साहित्य, जीवन और कला के क्षेत्र में मनुष्य की जो भी कृतियाँ और रचनाएँ हैं वे उसकी संस्कृति हैं। इन बातों के आलोक में हम शाह आलमे सानी की कृति 'नादिराते शाही' का मूल्यांकन करें तो पांयेगे कि उसमें पूरी एक संस्कृति सिमटी हुई है। उसमें प्रारंभ से लेकर अंत तक भारतीय संस्कृति से संबंधित पद्य संकलित हैं। ग़ज़ले रेख़ता से प्रारंभ होकर इसमें विवाह गीत, शुभकामना अथवा मुबारकवादें, नौरोज़ अर्थात् पारसी नव वर्ष के बधाई गीत, होरी गान, कवित, दोहे, मेंहदी, नायिका भेद के अंतर्गत संयोग और वियोग श्रृंगार का रस सिक्त चित्रण, तराने सभी में भारतीय सांस्कृतिक धारा प्रवाहित दिखती है। उदाहरण :

(एमन, चौताला)

गावत मंगल चार गुनी मिल नाँच लखें घन वारि दियो है
दादी, फूफी, ख़ुशहाल फिरें मन अंग समात न फूल गयो है[13]

(एमन, चौताला)

तारे दिखाए के लेत बलाऐं सो मन्दिर बीच बिनोद नयो है
अकबर शाह के नन्द भयो, सब के घर बीच आनन्द भयो है [14]

अकबर शाह के घर नन्द का जन्म, भारतीय परिवेश में पुत्र जन्म घर–आंगन में आनन्द का विषय होता है। मंगल गान गाये जा रहे हैं, कलावंत नृत्य कर रहे हैं। धन न्यौछावर में बांटा जा रहा है। बच्चे की दादी और बुआ ख़ुशी से फूली नहीं समा रहीं। तारे दिखाने की रस्म[15] और साथ ही बलायें ली

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जा रही हैं। किले में मन्दिर की अवस्थिति भारतीय परिवेश है। ख़ुशी का माहौल है।

(ऐमन, इकताला)

'देखन निकसीं मेंहदी अकबर शाह की सब नार बनीं परियाँ
सब सममधन मिल द्वार रोक खरीं ले हाथों छरियाँ[16]

अकबर शाह के विवाह का उत्सव है, मेंहदी आने वाली है, सभी नारियाँ परियों की भाँति सुसज्जित होकर मेंहदी देखने निकली हैं। भारतीय विवाह रस्मों में कहीं–कहीं समधनों द्वारा द्वार रोकने की रस्म होती है। उसी का चित्रण है। समधनें फूलों की छड़ियाँ लेकर द्वार रोकने के लिये खड़ी हो गई हैं।

(ऐमन, बँधा तिताला)

आज री आनन्द के सब तराने माई, देहो शाह को मुबारकबादी
सखी सहेली सब मिल बन बन आवो 'शाहे आलम' घर शादी[17]

शाह आलम के घर शादी का वातावरण है। उन्हें मुबारकबादें दी जा रही हैं। आनन्द के गीत गाये जा रहे हैं।

(भूपाली, बँधा तिताला)

गोधन पूजन [18] बन बन आई सब ही ब्रज की नारी
गावत राग हुलास भरे अतहीं अनन्द सूं नाचत गोप कुमारी[19]

गोधन पूजन भारतीय संस्.ति का विशिष्ट अंग है। ब्रज प्रदेश में इसका विशेष महत्त्व है। ब्रज की नारियाँ सज–धज कर गोधन पूजन को आई हैं। उल्लसित होकर राग–रागिनियों का गान और नृत्य कर रहीं हैं, आनन्द मना रही हैं।

(अड़ाना, चौताला)

आज पहरे जरी बसन निकसी सब नार पूजने को सरसुती नीकी सुहाली
सोलह सिंगार किये बेस की नारी सबे रूप की उजारी आई संग लिये आली

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाल पर तिलक लगाय हातन पायन मेंहदी महावर सजे सिंगार कर कर ले धर आई थाली
जबे आनन्द भयो नाचत गावत मिदंग बजावत दे कर ताली रात दिवाली 120

उपर्युक्त पद्य में भारतीय परिवेश व संस्कृति का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत है। सरस्वती पूजन हेतु नारियाँ सुन्दर वेश में (ज़री, गोटा लगे वस्त्र) निकली हैं। भारत में सरस्वती पूजन वसंत पंचमी पर होता है। सभी सोलह सिंगार किये हुए हैं। हाथ में पूजा की थाली लिये है। वसंतोत्सव फाग का उत्सव भी होता है। गीत–नृत्य, और मृदंग बज रहा है, आनन्द का वातावरण है।

(अड़ाना, इकताला)

राज करो सुख सूं 'शाहे–आलम' शत्रुन को घर खोज गयो है
हर रात तुमहे शबरात भई, और हर दिन ईद नौरोज़ भयो है[21]

शाह आलमे सानी को सुख से राज–पाट करने हेतु बधाई है, उनकी हर रात शबरात और हर दिन ईद और नौरोज़ की ख़ुशियाँ भरा हो ऐसी शुभकामना है। विभिन्न त्योहार व महल में मनाये जाने वाले उत्सव शाह आलमें सानी की रचना 'नादिराते शाही' में अनेक त्योहारों और महल में मनाये जाने वाले उत्सवों से संबंधित पदों की भरमार है। ये सभी पद हिन्दी भाषा में लिखे गये हैं। इन पदों के माध्यम से .ति का सांस्.तिक पक्ष तो उदघटित होता ही है साथ ही हिन्दी साहित्य की समृद्धि में एक कड़ी की वृद्धि भी हो रही है। जो मानव समुदाय अध्यात्म और धर्म, तत्त्व–ज्ञान और दर्शन, भौतिक जीवन और सत्य, प्रेम और करुणा, सौन्दर्य और पवित्रता इन दैविक तत्त्वों की अधिकतम श्रद्धा करता है और जीवन के विधान को उनके अनुकूल नियमित करता है वही विश्व

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृतियों के इतिहास में स्थिर रह पाने के योग्य है।

शाह आलमे सानी ने किस प्रकार अपने जीवन की परिस्थितियों से संघर्ष किया और अपने भावों की अभिव्यक्ति अपनी रचनाओं में की और एक ऐसी सांस्‍तिक विरासत छोड़ी जो अपनी पूर्णता मे अभिनन्दनीय है। शाह आलमे सानी के तख़्त नशीन होने पर महल में उत्सव का माहौल रहता था। इस उत्सव से संबंधित मुबारकबादों के अनेक पद 'नादिराते शाही' में मिलते हैं। शाह आलमे सानी स्वयं अत्यंत आस्थाशील, सैय्यद मुहम्मद मुराद के मुरीद और धर्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। धर्म, कर्म की सभी रस्में उनके महल में बाकायदा होती थीं। चाहे हज़रत रसूल (सल्ल0) से संबंधित बाग़ की सैर, चार शंबा पर छल्ले बांटने की रस्म हो, ग़ौसुल पाक की मेंहदी हो, हज़रत ख़्वाज़ा मुइनउदीन चिश्ती के प्रति अकीदत हो, रमज़ान, ईद, बकरीद, शबरात, नौरोज़, दिवाली, गोधन पूजन, जन्मोत्सव, तारे देखना, विवाहोत्सव आदि समारोहो से संबंधित भरपूर पदों की रचना कवि ने की है। कतिपय उदाहरण दृष्टव्य है : ख़्वाज़ा ग़रीब नवाज़ के प्रति आस्था वर्णित है :

तुम्हारे दर पे आया 'आफताब', उसकी जो मुश्किल है
करो जल्दी से आसां, हज़रते ख़्वाज़ा मुईनद्दी 22

**पैग़म्बर रसूल अल्लाह (सल्ल0) के प्रति श्रद्धा :**

(तोड़ी, चलता तिताला)

किया ग़ुस्ले – शिफा आज साहिबे – मेऽराज
सफर के माह का आया चहार शन्बा आज
बहक्के–ताजे–रुसुल, रहियो, ऐ "शाहे आलम"
अज़ल तलक तेरा काइम हमेशा तख़्त और ताज। 23

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपने पीर के प्रति आस्था :

(किदारा, बंधा तिताला)

हो तुम पीर मेरे दस्तगीर आलम में,
हूँ फिदा मुरीद तुम्हारो
मांगत हूँ तुम से, दीन दुनिया के
"शाह आलम" के सब काज संवारो [24]

रमज़ान के बाद ईद की मुबारकबाद संबंधी पद :

कीनी नमाज़ और राखे रोज़े,
कबूल करे हैं अल्लाह नबी ने
होय मुबारक ईद तुम्हें, "शाहे आलम",
दीनी मुबारकबाद सबी ने [25]

बकरीद का चित्रण इस प्रकार है :

बैठ दिल्ली तख़्त करो सुख सदाई, या बकरीद महासुखदानी
देत हैं मुबारकबादी तुमको, "शाहे आलम",करो आज कुरबानी[26]

तख़्त नशीनी पर जुलूस की मुबारकबादी :

(सूहा, एकताला)

आज तख़्त पर बैठे जश्न कर "शाहे आलम" नज़र सभी की लीनी
चलो सब सखी सहेली आनन्द सेती मिल जलूस की मुबारकी दीनी [27]

वर्ष गांठ संबंधी पद :

(पूरबी, होरी)

आज भई ऐ भली बरस गाँठ जहाँदार शाह पियारे की
साथ सखी मिल बन बन आओ, देहो मुबारकबाद अल्लाह निस्तारे की[28]

बेगम जान के घर पुत्र जन्मोत्सव पर मंगल गान :

(जीत सरी, चौताला)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्दिर के सब नार बुलाय के, आनन्द सूं मिल मंगल गाये
सुन्दर वास बिछाये सुगन्धत ता, पर ये ललना को झुलाये 29

दिवाली का त्योहार :

(हमीर, बँधा तिताला)

ऐ री माई, आज अतिहीं आनन्द सूं सब गुनी करें पूरी सुहाली
'शाहे–आलम' पिया के मन्दिर भई रोशनी जगमगात की रात दिवाली 30

चाँद दिखने पर शबरात की खुशी संबंधी पद :

(हमीर, इकताला व हम कामोद, अड़ा चौताला)

दीखत चाँद 'शाहे–आलम' को देत सब के मुबारकबादियाँ
जैसी आज हुई शबरात, तैसी लाख करोर साल बसाल होवें नित शादियाँ 31

अपने पीर दस्तगीर के प्रति आस्था का चित्रण है :

(गौड, चौताला)

बाजत नौबत द्वारे, गावत गुनी जन, देखने चलो सोभा हज़रत पीर दस्तगीर की
नीके जवाहिर के ख़्वानन में बनाय धरी रौशन भई क्या ऐसी जिन्दाः पीर की
मुक्ता की झालरें लगी हैं ख़्वानपोश[32] में, तैसी बनी है बहार के चीर की
कैसी ही प्यार आज 'शाहे–आलम' बादशाह ने मेंहदी बनाय क्या, अच्छी तदबीर की[33]

निष्कर्ष :–

शाह आलमे सानी द्वारा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी नादिराते शाही का लिखा जाना हिन्दी साहित्य के लिये अभूतपूर्व घटना है। अपने हृदयस्थ अनुभूतियों को मर्मदर्शी, संगीतमयी भाषा में ढाला है। उसकी रचनाओं का साहित्यिक और संगीतिक दोनों दृष्टियों से महत्त्व है। कवि की रचनाएँ काव्य की दृष्टि से साहित्य की अमूल्य निधि हैं और संगीत की दृष्टि से अध्येताओं के लिये शोध का अच्छा स्रोत है। उनकी कविता में एक ओर श्रृंगार है तो दूसरी ओर अगाध आस्था से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिपूर्ण पद हैं। एक ओर ख़्वाज़ा मुइनउद्दीन चिश्ती का ज़िक्र है, चादर, हार, फूल चढ़ाना, मेंहदी के चढ़ाये जाने का वर्णन है तो दूसरी ओर मंदिर में मंगलगान, होली, दिवाली, फाग के चित्र भी हैं। अनेक त्योहार और उत्सवों का भारतीय परिवेश में रंगारंग चित्रण है। पूरे संकलन में एक ऐसा सांस्कृतिक प्रवाह प्रवाहित है जो गंगा–जमुनी तहज़ीब का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। साथ ही यह रचना मुगल दौर में 1780 ई0 के लगभग भारतीय संस्कृति और साम्प्रदायिक सौहार्द का परिचय देती है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## सन्दर्भ


1. नादिराते शाही – पृ0 309

2. इससे संबंधित पूर्ण विवरण प्रथम अध्याय में दिया गया है। मिरातुल अशबा, 53 – वाक्यात अज़फरी : पृ0 8

3. नादिराते शाही – पृ0 309

4. नादिराते शाही – पृ0 309

5. नादिराते शाही – पृ0 14

6. वही – पृ0 64

7. नादिराते शाही – पृ0 304

8. नादिराते शाही – पृ0 292

9. वही – पृ0 263

10. वसीले – जरिये से

11. नादिराते शाही – पृ0 61

12. नादिराते शाही – पृ0 61

13. नादिराते शाही – पृ0 112

14. वही – पृ0 112

15. तारे दिखाने की रस्म जोकि उस दौर में महल में भी प्रचलित थी, बड़ी रोचक है। इस रस्म का विस्तृत वर्णन द्वितीय अध्याय के पृ0 52 पर किया जा चुका है। इस पूरी रस्म के पीछे नवजात और उसकी माँ को बुरी बला से सुरक्षित रखने का भाव निहित है।

16. नादिराते शाही – पृ0 113

17. वही – पृ0 112

18. गोधन पूजन – दीवाली के दूसरे दिन गोधन पूजने की प्रथा है।

19. नादिराते शाही – पृ0 113

20. नादिराते शाही – पृ0 120

21. वही – पृ0 121

22. नादिराते शाही – पृ0 62

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

23. वही – पृ0 64
24. वही – पृ0 72
25. वही – पृ0 77
26. नादिराते शाही – पृ0 79
27. वही – पृ0 83
28. वही – पृ0 92
29. वही – पृ0 97
30. वही – पृ0 105
31. वही – पृ0 107
32. ख़्वानपोश – प्राचीन समय में रईसों में जब एक दूसरे के यहाँ कोई चीज़ उपहार में या नज़र करने के लिये भेजी जाती थी तो उन चीज़ों को ख़्वान (ख़्वान = ये लकड़ी का बहुत बड़ा हश्त पहल अर्थात् आठ कोनों वाला एक बड़ा तश्त या थाली होती थी जो बीच में हाथी दांत की पच्चीकारी या फूल पत्ती से जड़ाऊ सजी होती थी या रंगों से फूल पत्ती बना दी जाती थी) इसके ऊपर एक कपड़ा ढका जाता था जिस पर कारचोबी (ज़री) काम बना होता था। ये थाली ख़्वान कहलाता था और इसे ढका जाने वाला कपड़ा ख़्वानपोश कहलाता था। पोशीदन का अर्थ फारसी में ढकना या छिपाना होता है। पोशीदन से पोश बना है।
33. नादिराते शाही – पृ0 122

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्थ अध्याय

# आलोचनात्मक अध्ययन

## ग़ज़ले रेख़ता

ग़ज़ल एक ऐसी विधा है जिसमें प्रेम भावनाओं का वर्णन या चित्रण होता है। यह मात्र एक विधा नहीं बल्कि सांस्कृतिक विरासत है। ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ बायार गुफतन है, यानि महबूब से बातें करना। परन्तु यह 'बायार गुफतन' तक सीमित नहीं रही, इसमें हर तरह का मज़मून शामिल होता है। ग़ज़ल हमारे एशियाई साहित्य की पहचान है। ग़ज़ल के रूपात्मक और कथ्यात्मक इतिहास को खोजते हुए विद्वानों ने इस काव्य विधा को अरबी कसीदे से जोड़ा है। यूं देखें तो साहित्य की हर विधा का जन्म सांस्कृतिक, भौगोलिक और मनुष्य के भीतर छिपि रचनात्मक शक्ति के माध्यम से होता है।'[1] (कमलेश्वर)

ग़ज़ल के शेर की प्रशंसा इस प्रकार भी की गई है कि इसे सुनकर 'वाह' या 'आह' निकले अर्थात् दिल पर असर करे। ग़ज़ल पढ़ने वाले यह समझें कि यह तो उन्हीं के दिल की बात है। सांसारिक प्रेम के अलावा ग़ज़ल में ईश्वरीय प्रेम या 'तसव्वुफ' की अभिव्यक्ति भी होती है। भक्ति रस में डूबे अनेक शायरों ने अपनी अभिव्यक्ति ग़ज़ल के माध्यम से की है। तसव्वुफ का रास्ता वज्द (भक्ति में पूरी तरह डूबा) से होता हुआ ईश्वर तक पहुँचता है।

किसी भी प्रकार की साहित्यिक और सांस्कृतिक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परंपराएँ किसी एक व्यक्ति या उसकी रचना से जन्म नहीं लेती है बल्कि उसके पीछे एक लम्बे दौर में जन्में विचारों, भावों और सहअस्तित्व, सद्‌भाव की सहज धरती से पैदा होती है। ग़ज़ल विधा के पीछे भी एक लम्बा भारतीय सांस्‍तिक प्रवाह है जिसने उसे साहित्य जगत में मकबूल किया है। ग़ज़ल दक्षिण एशियाई सभ्यता की एक केन्द्रीय विधा रही है। इस विशिष्ट काव्य को बुद्धिजीवियों और साहित्यकारों ने पहचाना तथा इस सांस्त्रतिक विरासत को कायम रखने में अपना योगदान दिया। शाह आलमे सानी की ग़ज़लों पर बात करने से पहले यदि मैं यह कहूँ तो अन्यथा न होगा कि ग़ज़ल विधा ने साहित्यिक जगत में जिस दार्शनिक, भौगोलिक और सांस्‍तिक सद्‌भाव को जन्म दिया वह आज का सहित्यिक और सामाजिक यथार्थ बन चुका है। यह एक ऐसा दकनी एशियाई सभ्यता का महत् स्वर है जो अरब को ईरान से, ईरान को भारत से और भारत से मिस्त्र, लीविया, इराक, अफ़ग़ानिस्तान और आज के पाकिस्तान को जोड़ने की कड़ी है। राजनीतिक इकाइयाँ टूटती और बनती रहती हैं परन्तु सांस्‍तिक सच्चाईयाँ कभी हीं टूटतीं।

ग़ज़ल के शेर में दो पंक्तियाँ होती हैं, यह पंक्तियाँ मिसरा कहलाती हैं। दोनों पंक्तियों में कोई विषय संपूर्ण होता है अर्थात् शेर में पूरी एक बात कही जाती है जैसे :

इबने मरयम हुआ करे कोई    मेरे दुःख की दवा करे कोई

कभी–कभी ऐसा भी होता है कि एक मज़मून दो पंक्तियों में न कह कर चार में अर्थात् दो शेरों में कहा जाता है। ऐसे शेर को कता बन्द शेर कहते हैं। ग़ज़ल में पाँच से सतरह शेर होते हैं। परन्तु उर्दू साहित्य में इस संख्या के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पालन में कोई पाबन्दी नहीं है। हर शेर के अंत में जितने शब्द बार–बार आंय उनको 'रदीफ' और रदीफ के पहले के एक ही आवाज़ वाले शब्दों को 'काफिया' कहते हैं। अक्सर ग़ज़ल के पहले शेर के दोनों मिसरे एक ही 'काफिया' और 'रदीफ' में होते हैं ऐसे शेर को 'मतला' कहते हैं। अन्त में जिस शेर में शायर का उपनाम या तख़ल्लुस हो, वह 'मकता' कहलाता है। भारत में ग़ज़ल की सर्वप्रथम रचना करने वाला व्यक्ति ख़्वाजा मुईनउद्दीन चिश्ती थे। इनके बारे में उल्लेख मिलता है कि इन्होंने फारसी और भारतीय भाषाओं में ग़ज़ले कही थीं। दक्खिनी भाषा में ग़ज़ल कहने वाला प्रथम व्यक्ति बीजापुर की आदिलशाही राज्यवंश–परम्परा का पाँचवाँ राजा इब्राहीम आदिल शाह (सन् 1579–1626 ई0) हुआ। इनकी रचनाएँ नहीं मिलतीं।[2] दक्खिनी में कुली कुतुबशाह (सन् 1580–1611 ई0) की रचनाएँ उपलब्ध हैं। उर्दू के प्रांरभिक कवियों में वली (ई0 सं0 1668–1744) ने ग़ज़लें कही हैं।

उर्दू को विभिन्न नामों से याद किया गया। कभी इसे हिन्दुस्तानी, कभी उर्दू और कभी रेख़ता कहा गया। मीर तकी 'मीर' के बारे में एक बहुत प्रसिद्ध शेर है :

रेख़ता के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो ग़ालिब
कहते हैं अगले ज़माने में कोई मीर भी था

जहाँ तक मीर तकी 'मीर' उस्ताद–ए–ग़ज़ल का संबंध है उनकी भाषा अत्यंत साफ सुथरी, प्रगतिशील और निखरी हुई है। कुछ शेर इस प्रकार है :

पत्ता–पत्ता बूटा बूटा हाल हमारा जाने है
जाने न जाने गुल ही न जाने बाग़ तो सारा जाने है

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(नोट :– इसका दूसरा मिसरा कतिपय पुस्तकों में इस प्रकार भी मिलता है :

जाने न जाने दिल ही न जाने सारा आलम जाने है)

हिन्दी काव्य की यह परम्परा रही है कि यहाँ काव्य में अभिव्यक्ति नारी की ओर से हुई है। लेकिन उर्दू शायरी की परम्परा है कि उसका महबूब स्त्रीलिंग नहीं पुल्लिंग है और इसमें यह प्रभाव फारसी शायरी से आया। यह पंरपरा इतनी प्रचलित हुई कि नारियों (कवयित्री) ने भी पुल्लिंग का प्रयोग किया है। प्रायः उर्दू के तज़करा निगारों ने यही माना है कि कवयित्रियों ने भी पुल्लिंग का प्रयोग किया है परन्तु सदा ऐसा हो यह आवश्यक नहीं है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं!

मिसेस आरचिस्टन एक अंग्रेज़ मेजर आरचिस्टन की पत्नी थीं और उपनाम जमईयत था। फारसी और उर्दू में शायरी करती थीं। ब्रज भाषा में उनकी ठुमरियाँ, द्रादरे और होरी इत्यादि उपलब्ध हैं। उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं :

रूठा है जो हमारा जो दिलबर[3] कई दिन से
इस वास्ते मैं रहती हूँ मुस्तर[4] कई दिन से
मकसूम[5] की ख़ूबी है या किस्मत का है एहसां
रहता है ख़फा मुझ से वह दिलबर कई दिन से।

एक दूसरी शायरा कुदसिया बेगम रानाई फतेहपुरी फतेहपुर की थीं। इनका तज़करा अबुल कासम मोहतशिम ने अपनी पुस्तक 'सरापा बहार' में पृष्ठ 24 पर किया है : इसमें भी उन्होंने स्त्रीलिंग का ही प्रयोग किया है :

मैं जानती थी आँख लगी दिल को सुख हुआ
कमबख़्त कैसी आँख लगी और दुःख हुआ[6]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमीर बेगम असीर देहलवी, शाह फख़उद्दीन देहवली की शिष्या थीं उनके मात्र दो शेर अब्दुल बारी आसी ने उल्लेख किये हैं:

इश्क दार–ओ–मदार है अपना, बेकरारी करार है अपना
ख़ाक में मिल गई हूँ जिसपे असीर इसी दिल में ग़ुबार हैअपना

उपर्युक्त पंक्तियाँ जो विभिन्न कवयित्रियों की हैं इनको रेख़ती में शामिल किया गया है। डॉ0 नैय्यर मसूद ने लिखा है :

''दिलचस्प बात है कि कदीम[7] दकनी के मोताअद्दित (अनेक) शोअरा[8] कलाम[9] में अपने लिये मोअन्नस[10] का सीधा इस्तेमाल करते थे। दकनी शायर हाशमी बीजापुरी ने औरतों की तरफ से औरतों के ख़यालात, औरतों की बोली और मोहावरात[11] में अदा की है।''

मुझे पकड़े हैं कि छोड़ो और देखो हांक[12] मारुंगी
ख़ुदा की सूं मैं हंसती हूँ बड़ी बू[13] को पुकारुंगी
सजन आवें तो परदे को निकाल कर भार[14] बैठूंगी
बहाना करके मोतियों का पिरोती हार बैठूंगी
अगर कोई आके देखेगा तो दिल में क्या कहेगा जी
मुझे बदनाम करते हो कहीं नहीं जांऊगी, छोड़ो[15]

दक्खिनी हिन्द की उर्दू शायरी में यह परम्परा समाप्त हो गई थी कि कोई कवि स्त्रियों की भाषा में स्त्रियों की कविता करे। लेकिन सादत यार ख़ाँ रंगीन ने इसको फिर जीवित किया क्योंकि शुमाली (उत्तर) हिन्द की उर्दू रेख़ता कहलाती थी। इसलिये रंगीन ने अपनी इस ज़नानी शायरी का नाम रेख़ाती रखा। सादत यार ख़ाँ रंगीन ही रेख़ाती के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आविष्कारक हैं। सादत यार ख़ां रंगीन से लेकर बाकर हुसैन रंगीन तक रेख़ती में कहने वालो की एक लम्बी शृंखला है। इस कड़ी में इंशा और जान साहब अधिक प्रसिद्ध हुए। मौलवी सैय्यद मोहम्मद मोबीन ने 'तारीख़े रेख़ती' में चन्द रेख़ती कहने वालों की चर्चा की है। जिनमें मोहम्मद सिद्दीक कैस, अमजद अली ख़ाँ असमत और जमीयत अली सुरैय्या, आबिद मिर्ज़ा बेगम हैं।

अमजद अली ख़ाँ असमत ने कहा है :

नतीजा ऐ बुआ अच्छा नहीं मर्दों की सोहबत का
खुलेगा नौ महीने बाद इस ऐश ओ इश्रत का

इस प्रकार वह रेख़ती जो औरतों की ज़ुबान से कहलवायी गई उसमें अश्लीलता की झलकी मिलती है। परन्तु उस समय भी कतिपय ऐसे कवि और कवयित्रियाँ हैं जिन्होंने साहित्य की लाज रखी है। चाहे विषय कोई भी हो जैसे जमीयत अली सुरैया ने लिखा :

दिन गुज़ारा था जहाँ शब को भी रह जाते वहीं
हांफते कांपते क्यूं रात को भागे आये।

सादत यार ख़ाँ रंगीन, जान साहब और दूसरे कवि और कवयित्रियों ने रेख़ती लिखी। वह उन औरतों के इर्द–गिर्द घूमती है जिनका जीवन अपनी ज़िदगी की रंगीनियों और यौनेच्छा के चारों ओर घूमता है। इनके जीवन को उनकी विचार धारा के अनुसार और कुछ स्थान पर उन्हीं के शब्दों में हम यूं भी कह सकते हैं कि जहाँ कविता करने वाला स्वयं कोई बात कहता है और उसमें पुल्लिंग के माध्यम से अभिव्यक्ति है वह रेख़ता है और जहाँ स्त्रीलिंग के माध्यम से अभिव्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होती है। वह रेख़ती है।

मुल्ला वजही की छः रेख़तियो का पता चलता है। मलकुशशोअरा मुल्ला असदउल्ला वजही (मृत्यु 1659 ई0) मोहम्मद कुली कुतुब शाह के दौर के दरबारी कवि रहे हैं। 'सबरस' और 'कुतुब–ए–मुश्तरी' उनकी रचनाएँ हैं। इनकी रेख़तियों की विशेषता यह है कि उनमें अश्लीलता के बजाय गांभीर्य है और स्त्री की भावनाओं का चित्रण किया गया है। उनकी पंक्तियाँ हैं :

यकता मैं सहेली मरना दिल दूजे पे मत धरना
इस पिउ को अपना करना, इस पापी जिउ कूं खोय कर
पिउ अपने कूं टुक आज में नस सपने देखी सोय कर
जब पिउ चला सट बीच मज तब सोती उठी रोय कर[16]

रेख़ती प्रारंभिक उर्दू शायरी की वह विधा है जिसमें हिन्दी कविता की भाँति ही अभिव्यक्ति नारी की ओर से होती है। अभिव्यक्ति पुल्लिंग में होने पर कविता की विधा को रेख़ता कहते हैं।

## शाह आलम की ग़ज़लें

नादिराते शाही में शाह आलमे सानी की सैंतालीस ग़ज़ले हैं। इन ग़ज़लों में 'शहे आलम' और 'आफताब' दोनों तख़ल्लुस कवि ने प्रयुक्त किये हैं :

ऐ 'आफताब' अब्र में उस जां अज़ीज़ साथ
दिल की सभी उमंग को जी चाहे देखिये[17]

☆☆☆

रखता है हवस बोसे की तेरे 'शहे आलम'

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पावेगा बहुत तेरे इस इनआम से लज़्ज़त [18]

लेकिन 'आफताब' का प्रयोग अधिक मिलता है। ग़ज़ल के मिज़ाज के अनुरूप शाह आलम ने अपने भावों की अभिव्यक्ति उसी तरह की है। महबूब के प्रति आसक्ति, उसकी बेरुखी, उस से न मिलना, महबूब के हुस्न–ओ– अदा का ज़िक्र उनके अशआर में मिलता है। उस काल कि विशेष क्लासिकल ग़ज़ल का मज़मून निम्नलिखित पंक्तियों में दृष्टव्य है :

पाता नहीं हूँ और किसी काम से लज़्ज़त
जो कुछ कि मैं पाता हूँ तेरे नाम से लज़्ज़त [19]

शाह आलमे सानी 'आफताब' सिर्फ महबूब के नाम से ही लज़्ज़त नहीं पाते बल्कि उसकी मदभरी आँखों में एक ख़ास नशीली कैफयत है उसे देखकर उन्हें जो लज़्ज़त मिलती है वह 'बादा' ' और 'जाम' से भी हासिल नहीं होती। महबूब की आँखों को वह नर्गिस से उपमा देते हैं और उसकी आँखों की मस्ती को देखकर वह कल्पना करते हैं कि उससे भी शराब टपक रही है और यह सब देखकर उन्हें एक विशेष लज़्ज़त का एहसास होता है। उनकी ग़ज़ल के यह दो शेर दृष्टव्य हैं :

कैफयतें उस दीदए–मैगूं # से जो पाई
पाई न कभी बादे से और जाम से लज़्ज़त
ज़ाहिर है तेरी नर्गिसे – मखमूर से मस्ती
टपके है तेरे लाऽले – मैं – आशाम से लज़्ज़्त [20]

कवि कह रहा है कि मैं क़िसी और काम में इतनी लज़्ज़त नहीं पाता जितना मज़ा मुझे तेरा नाम लेने में आता है अर्थात् अपने महबूब के रंग में पूरी तरह सराबोर है। महबूब की मदभरी शराबी आँखों को देखकर जो कैफियत हुई वो 'बादा'

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और 'जाम' को पाकर भी वैसी लज़्ज़ात नहीं पायी। उन नशीली, मस्ती भरी आँखों से जो मय टपकती है उसका मज़ा ही कुछ और है। महबूब से न मिल सकने की बेचैनी और र्दद भी मज़ा देते हैं जैसे किसी को आराम करते वक्त मिलता है। शाह आलम महबूब के एक बोसे (चुम्बन) की हवस रखते हैं। अगर वह इनाम उन्हें मिल जाय तो और भी मज़ा आ जाय। तीसरी ग़ज़ल का शेर है :

गो सुध नहीं उस शोख़ सितमगर ने सँभाली
तिस पर भी कोई बात अदा से नहीं ख़ाली [21]

कवि का महबूब हुस्न–ओ–अदा से लबरेज है। महबूब के सौंदर्य और अदाओं पर नायक तो फिदा है लेकिन महबूब की अदाओं में बेरुख़ी झलकती है। अंतिम शेर है :

तौसीफ कोई कर सके क्या! ऐ 'शहे–आलम'
रुतबा है तेरे शेर का गुतार से आली.[22]

शाह आलमे सानी उक्त पद में अपने कलाम की प्रशंसा स्वयं कर रहें हैं।

जीवन के एक दुःखद मोड़ पर बादशाह शाह आलमे सानी की आँखे जाती रही थीं। तब से अन्धे होने का दुःख उनके दिल को कचोटता रहता था। उसकी यह आंतरिक पीड़ा उसके लेखन में बराबर अभिव्यक्त होती रही है। निम्न उदाहरण दृष्टव्य है :

लाचार हूँ मैं अपनी आँखों के हात, यारो!
करती है दुश्मनी नित यह मेरे सात, यारो!

देख सकने की लाचारी में उसके दिन और रात बड़े कष्ट में गुज़रते हैं परन्तु कवि बड़ा आशावादी दिखता है वह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपने आंतरिक नूर को हर ज़र्रे (कण) की चमक में देखता है और कहता है कि इस बात को सारी कायनात जानती है। संभवतः यह वही प्रकाश है जिसने उसकी रचनाओं को अमरत्व दिया है–

नूर 'आफताब' के से हर ज़र्रे की चमक है
इस बात को है जाने सब कायनात, यारो।[23]

महबूब से दूरी अथवा 'फिराक' उर्दू ग़ज़ल की बुनियाद है।

चूंकि शायर का महबूब उससे दूर है। इसलिये न तो शायर को महबूब को अपने ख़्वाब में देख कर चैन आता है और न खाने–पीने में कोई मज़ा है। –

बिन देखे तेरे, दिलबर,[24] दिल को न चैन आवे।
दूरी में तेरी, दिलबर, टुक[25] ख़्वाबो[26]–ख़ुर[27] न भावे!

बादशाह ने अपनी ग़ज़लों में उर्दू और हिन्दी दोनों भाषाओं के शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया है। महबूब की शोख़ी की चर्चा उन की ग़ज़लों में है :

उल्फत[28] से जब कि हमने दामन को तेरे पकड़ा
तूने वहीं छुड़ाया, ऐ शोख़,[29] देके झटका

कवि का कहना है कि पुष्प के समान हसीन महबूब ग़ैरों से हिल–मिल कर बातें करता है परन्तु तेरी नज़रों में मैं ही कांटा जैसा खटकता हूँ :

ग़ैरों के साथ कैसी बाशुद[30] है तुझको, गुलरू[31]!
कांटा सा, एक मैं ही नज़रों में तेरी खटका

महबूब की आँखें, रुख़सार, लब, गेसू, जुल्फें, जफा और वफा के शब्द अगर उर्दू ग़ज़ल से विलग कर दिये जांय तो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग़ज़ले रेख़ता का बहुत बड़ा सरमाया (दौलत) समाप्त हो जायेगा। संभवतः यही कारण है कि इन शब्दों का प्रयोग शाह आलम 'आफताब' ने प्रचुर मात्रा में किया है और महबूब की आँखों की प्रशंसा करने के कारण एक ग़ज़ल की रदीफ ही आँखें कायम कर ली, महबूब की आँखें ऐसी सुन्दर हैं जो उन पर अत्याचार करती हैं। इस अत्याचार का किसी के पास कोई इलाज नहीं है। उन्होंने कहा है :

करती हैं मेरे दिल पर जो कुछ जफा, [32] सो आँखें
तकसीर [33] नहीं किसू की जो है बला, सो आँखें

मेरे दिल पर जो कुछ अत्याचार हो रहा है वह मेरे महबूब की आँखों के सौंदर्य का कुसूर है। वास्तविक कारण महबूब की आँखें हैं।

ख़ाना ख़राब होना उर्दू का मुहावरा है। इसका अर्थ है बरबाद हो जाना। आफताब ने अपनी ग़ज़ले रेख़ता में मुहावरों का प्रयोग किया है :

ख़ाना–ख़राब, इन्होंने अरशाक का किया है
है दिल के तईं फँसाती हर जा बजा, सो आँखें

उर्दू ग़ज़ल पर यह ऐतराज़ भी है कि इसमें महबूब की कल्पना इस प्रकार की गई है कि उसके अनेक चाहने वाले होते हैं और वो उसकी गली के या कूचे के चक्कर लगाते रहते हैं। इस पंरपरा से शाह आलम 'आफताब' भी अपना दामन नहीं बचा सके। उन्होंने अरशाक शब्द का प्रयोग किया है जो आशिक का बहुवचन है अर्थात् उसके बहुत से चाहने वाले हैं जिनका 'ख़ाना ख़राब' है।

महबूब की आँखें जा बजा (जगह–जगह) लोगों के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिलों को फँसा लेती है। लेकिन आफताब इस परंपरा से आगे बढ़े हैं। उनका महबूब उनसे गर्मजोशी से मिलता भी था और उन पर मेहरबानी और करम भी करता था। अतः वह कहते हैं कि तू पहले की तरह मेरे ऊपर गर्मजोशी के साथ मेहरबानी कर :

फिर वह ही गर्मजोशी, अल्ताफो – मेहरबानी
करता था आगे जितनी, अब मेरे साथ कर ले। [34]

आफताब की शायरी की विशेषता यह है कि उन्होंने उपमा और उत्प्रेक्षा का प्रयोग बड़े ढंग से किया है। 'ज़ुल्फ' (बालों की लट) काली होती है और सूर्य 'मग़रिब' (पश्चिम) में अस्त होता है। सूर्यास्त के बाद अंधकार गहन होने लगता है और रात हो जाती है। रात को व्यक्ति तनहा होता है। इन सारे विषयों पर आफताब ने उस्तादी के साथ शेर कहा है :

मग़रिब में ज़ुल्फ के फिर दिल आफताब [35] कर लें
फुर्कत के दिन को, ऐ मह, वसलत की रात कर लें! [36]

आफताब यह कहना चाहते हैं कि पश्चिम में सूर्यास्त हो रहा है। तू फुरकत (तन्हाई) के इस दिन को ऐ चाँद मिलन की रात कर ले।

उर्दू शायरी के महबूब के दहन (मुख) की प्रशंसा, उसकी बात–चीत के अंदाज़ की चर्चा अनेक शायरों ने की है परन्तु आफताब कहता है कि जब मेरे महबूब के मुख से कोई शब्द निकलता है तो ऐसा मालूम होता है कि जैसे किसी बाग़ में किसी फूल की कली चटख़ी हो :

उस नाज़नी[37] दहन[38] से हर्फ [39] इस अदा से निकला
गोया के गुन्चए [40] – गुल[41] सहने [42]– चमन [43] में चटका[44]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शाह आलमे सानी आफताब की 'नादिराते शाही' की ग़ज़ले उर्दू के उस दौर की हैं जब अलंकारों और शब्दों का चमत्कार शायर अधिक दिखाता था। शाह आलम की ग़ज़लों की मौलिकता यह है कि उन्होंने क्लासिकल ग़ज़ल की अलामात (प्रतीकों) और शब्दों को नवीन रूप से प्रस्तुत किया है। प्रचीन काल में उर्दू ग़ज़लों में कुछ शायरों ने ऐसे शेर भी कहे हैं जिससे अनुमान होता है कि उर्दू शायरी का महबूब चिलमन या झरोखे से झांकता रहता है और अक्सर लोग उसकी गली या कूचे के चक्कर काटते रहते हैं। अलताफ हुसैन हाली का दौर शाह आलम के बहुत बाद का है लेकिन हाली के समय में भी शायरों ने ऐसी ग़ज़लें कहीं जिनके कारण हाली को कहना पड़ा :

यह शेर ओ कसाइद का नापाक दतर
अफूनत में है जो सण्डास से बदतर।

शाह आलम की उर्दू ग़ज़लों में ऐसे शब्द या विषय नहीं मिलते जिसे 'परागन्दा'' कहा जा सके। इस प्रकार उन्होंने ग़ज़ल की आबरू को बनाया संवारा। उनकी ग़ज़लों में बहुत सी रस्मों का ज़िक्र मिलता जो हमारे त्योहारों और अन्य अवसरों पर मनायी जाती थीं। ग़ौस–ए–पाक की मेंहदी की चर्चा भी पूर्ण श्रद्धा से की गई है। उर्स के मौके पर जहाँ सन्दल, हार–फूल और चादर मज़ारों पर चढ़ायी जाती है वहाँ बहुत सी मज़ारों पर मेंहदी भी चढ़ायी जाती है। अतः कलियर के उर्स के अवसर पर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ (अजमेर) के यहाँ से मेंहदी कलियर शरीफ हज़रत साबिर साहब के यहाँ आती है। इस पंरपरा की जड़ें वाकया–ए–करबला से जा मिलती हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाकया इस प्रकार है कि हज़रते कासम जो हज़रते इमाम हसन अलैहिस्सलाम के पुत्र थे। उनकी शादी हज़रते इमाम हुसैन की पुत्री से होना तय थी। अतः सात मोहर्रम को मेंहदी की यह रस्म अदा की जाती है। इसी तिथि को जो ज़री उठती है उसे मेंहदी उठाना भी कहते हैं।

ग़ौसुल आज़म का नाम हज़रत सैय्यद मोहीउद्दीन है। उन्हें पीर दस्तगीर भी कहा जाता है। आपको ग़ौसे समदानी भी कहा जाता है। अतः ग़ौसुल आज़म की मेंहदी की चर्चा शाह आलम के काव्य में मिलती है –

(सयाम, इकताला)

वह ग़ौसे–पाक मुहिये–दी, जिस के नूर से,
है रोशनी यह सब महो–मेहरे मुनीर की [45]

(ऐमन, चलता तिताला)

मेंहदी यह हज़रते ग़ौसुसमदानी की है
रोशनी उस शर्फ़े–इन्सियो जानी की है [46]

## सीठने :–

भारतीय परिवेश में शादी–ब्याह के अवसर पर अनेक रस्में निभायी जाती रही हैं। विवाह दो अलग–अलग परिवरों का आपसी समारोह होता है। आपसी अनौपचारिकता बढ़ाने के लिये विवाह गीतों में प्रचुर हँसी–मज़ाक हुआ करता है। जैसे चौथी की रस्म में फूल, फल और सब्ज़ी से चौथी खेली जाती है और वर–वधु पक्ष के लोग आमने–सामने खड़े होकर गीतों के माध्यम से सवाल जवाब और हँसी मज़ाक करते हैं।

(हमीर, इकताला)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समधन मलिक ज़मानी ने कहवे रात पुकार
समधी बस कर, अब मुझे फूलन गेंद न मार [48]

विवाह गीतों में समधी–समधन के परस्पर हँसी मज़ाक प्रसिद्ध हैं। आपस में बेतकल्लुफी बढ़ाने के लिये जो गीत गाये जाते हैं वे सीठने कहलाते हैं। उस समय की संस्.ति के अनुसार सीठनों में गालियाँ भी गायी जाती थीं जिसके सुरों का लोग आनन्द लेते थे। शाह आलम के सीठनों की विशेषता यह है कि उनके सीठनों की पंक्ति में कोई शब्द यदि निम्न स्तर का शब्द या विषय आ जाता था तो दूसरी पंक्ति में वे विषय को इस प्रकार मोड़ दिया करते थे कि वह विषय संभाला लेकर अपने निम्न स्तर से ऊपर उठ जाता था। जैसे निम्नलिखित सीठने की पंक्ति में निम्न स्तरीय विषय प्रतीत होता है परन्तु दूसरी पंक्ति में कवि शाह आलम ने विषय को मोड़ देकर ऐसा संभाला दिया कि उसका साहित्यिक महत्त्व हो गया –

(भोपाली, बंधा तिताला)

समधन के अति जी को भाया, समधी का लंबा और मोटा
हंस हंस के और दौड़–दौड़ घड़ी घड़ी कहे सोटा [49]

(खमाच, बंधा तिताला)

समधन के घर जुड़े बराती, आपस में कर थामक धूमा
जाम पिला शरबत के, सब ने मिरज़ा बाबा का मुँह चूमा [50]

मिरज़ा बाबा का वास्तविक नाम मिर्ज़ा मोहम्मद अलाउद्दौला बहादुर है। यह शाह आलम के सगे चचेरे भाई थें आलमगीर सानी (शाह आलम के पिता) ने अपनी बेटी लाडली बेगम की शादी उनसे कर दी थी। मिर्ज़ा बाबा शाह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आलम के बहनोई और समधी भी थे। लाडली बेगम के चार बेटे बेटियाँ थीं– मिर्ज़ा मोहम्मद इकरामउद्दीन उर्फ मिर्ज़ा मुगल, मिर्ज़ा अब्दुल मुकतदर उर्फ मिर्ज़ा तुगल, फकीरा बेगम और जीना बेगम।

(हमीर, एकताला)

समधन साहिब महल[51] जब बोली : "क्यों हमकूं तुम छेड़ा"?
वहीं हाथ समधी ने पकड़ा, मुँह में डाला पेड़ा [52]

किले में समधी–समधन के बीच होने वाले हँसी मज़ाक में साहिब महल अपने समधी से प्रश्न करती है कि तुमने मुझे छेड़ा क्यों तो समधी उत्तर में उनके मुँह में पेड़ा डाल देते हैं अर्थात् समधियने से अन्य सामग्री के साथ मिठाई भी आती थी और समधी–समधन एक दूसरे को खिलाते थे। अन्य अनेक बेगमें किले में होने वाले विवाह समरोह की रस्मों में शामिल रहती थीं, इन सीठनों में उनके नाम मौजूद हैं :

(बिहाग, होली)

लख ज़ुब्दतुज़्ज़मानी[52] समधी को रीझी अच्छा लंबा गोल
आबदार और तेज़ नुकीला ख़न्जर निपट अमोल [53]

(बिहाग, होली)

साहिब महल जब बन ठन आई सजे सकल सिंगार
पकड़ हाथ समधी ने डाला गल फूलन का हार [54]

शाह आलम द्वारा रचित सीठनों की एक बड़ी विशेषता यह है कि किले में होने वाले शादी–ब्याह के मौके पर निभायी जाने वाली छोटी से छोटी रस्म का ज़िक्र भी है। निकाह के बाद छुआरे का वितरण होना सुन्नत है (शुभ माना जाता है)। छुआरे स्त्रियों के बीच भी वितरित होते थे जिसकी चर्चा कवि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने निम्न सीठने में की है :

(अड़ाना, इकताला)

समधन हौज़ किनारे बैठी देखे छुटना फुहारा
हंस हंस के समधी ने उस के हाथ दिया छुहारा [55]

विवाहोत्सव में हार पहनाने की रस्म भी होती है। वैसे तो बरात का स्वागत करते समय पुरुष, पुरुष वर्ग को और स्त्रियाँ, स्त्री बारातियों को फूल माला पहना कर स्वागत करती है परन्तु निम्नलिखित सीठने में समधी ने मजाक में समधन के गले में हार डालकर उसे चौका दिया और समारोह की भीड़ आन्दोलित हो गई :

(किदारा, बंधा तिताला)

जब डाला समधी ने, तबहीं चौंक उठी इकबारी
हार मज़ाख़ पड़ा उर में, और शादी के लोगों में आय पुकारी[56]

शाह आलम के सीठनों का साहित्यिक और ऐतिहासिक महत्त्व इस दृष्टि से है कि शादी–ब्याह के अवसर पर जो धार्मिक और सांस्‍तिक रस्में अदा होती थीं उन सब की चर्चा है। जैसे बारात के आने को बारात चढ़ना मोहावरा बोला जाता है, इस मोहावरे को कवि शाह आलम ने अपने सीठने में प्रयुक्त किया है। ऐसे अवसर पर पान का बीड़ा भी पेश किया जाता है। अतः समधी समधन को बीड़ा पेश करते है :

(किदारा, चलता तिताला)

समधन पै समधी चढ़ा सज बरात ले साथ
पकड़ाये वह आप नो बीड़ा समधन हाथ [57]

शाह आलम ने सीठनों में अपने अनेक रिश्तेदारों के नाम लेकर शादी के मौके पर सम्मिलित होना दर्शाया है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसका अर्थ है कि शाह आलम अपने रिश्तेदारों का पूरा सम्मान और आदर करते थे। ऐसे मौको पर जो रस्में अदा होती थीं जैसे हार का पहनाया जाना, छुहारों का वितरण होना, एक दूसरे को मिठाई खिलाना, आपस में हँसी मज़ाक करना, ख़ुशी व्यक्त करना, इन सारी बातों की चर्चा है। इससे स्पष्ट है कि आपस में रिश्तेदारों के अत्यन्त प्रगाढ़ सम्बन्ध थे और किले के अन्दर का माहौल अत्यन्त सौहार्दपूर्ण था। परन्तु कुछ पदाधिकारी षड़यन्त्र में लगे रहते थे। जैसा कि इतिहासकारों ने मंज़ूर अली नाज़िर की चर्चा की है जिसने ग़ुलाम कादर रुहेला को साज़िश करके किले के अन्दर दाख़िल कर दिया था।

## मुबारकबादें

शाह आलम ने अपने हिन्दी काव्य में अनेक प्रकार के जश्न, उत्सव और त्योहारों की मुबारकबादें प्रचुर मात्रा में लिखी हैं जिनसे यह मालूम होता है कि किले में होली, दिवाली, ईद, बकरीद, नौरोज़, शबबरात, गोधन पूजन, सरस्वती पूजन, पीर की मेंहदी इत्यादि सभी जश्न मिल जुल कर मनाये जाते थे।

कवि अपने भावों की अभिव्यक्ति करने का माध्यम होता है। अपनी ज़ात को माध्यम मानकर अपने भावों की अभिव्यक्ति अन्य से करवाता है। अतः नौरोज़ के अवसर पर, राजगद्दी पर बैठे होने पर दूसरों के मुख से स्वयं को मुबारकबाद दिलवायी है :

राज करो सुख सूं 'शाह आलम' आयो तुम्है नौरोज़ मुबारक
मार बिडारिये शत्रुन को, और छीन के लीजिये देस हज़ारक
सेत सिंगार सजो तन मैं, और दुरजन के मुख दीजिये कारक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो हैं मनोरथ जी के सबै अब आवें ख़ज़ाने बड़े दिन चारक [58]

शाह आलम स्वयं को ईद की मुबारक बाद दिलवाते हैं और कहते हैं कि रब ने तुम्हारी दुआ कैसी कुबूल की कि आज यह ख़ुशी का दिन ईद तुम्हें और पिया को मुबारक हो :

रब ने कीनी कबूल दुआ तुम्हारी, आई भली यह आज नवीद
'शाहे आलम' तुम्हें पिया को होय सदा यह मुबारक ईद।[59]

भारतीय सांस्कृतिक परिवेश का प्रभाव मुसलिम सूफियों ने अपनाया है। जब हज़रत निज़ामउद्दीन का उर्स होता है तो बसंत गाकर शुरु होता है और वहाँ के सज्जादानशीन गले में पीले रंग का छोटा साफा अंगोछे की भाँति डाले रहते हैं। ईद के अवसर पर शाह आलम की कल्पना के अनुसार बसंत लेकर नारियाँ खूब सज–धज कर, कीमती और अनमोल जड़ाऊ आभूषण पहन कर आयी है :

आज ईद को बसंत आई बनिता बनाय हज़रत रसूल के दरबार
काज मचाई सब नारी पहरे ज़री सिर पाओ और और अभूषन अनमोलन के हार 60

कवि शाह आलम स्वयं को माध्यम मानकर दूसरों से तख़्त–ओ–ताज कायम रहने की दुआ मंगवाते हैं। हज़ारों साल तुम्हें यह सुख–चैन और आराम मिले और आज के दिन सब लोग मिल जांय और यह ईद (ख़ुशी का दिन) तुम्हें मुबारक हो :

(तोड़ी, चौताला)

रब रखे तुम्हारो तख़्त ताज नित कायम यही सबके मनरे
हज़ारों साल खुख सम्पत सूं रहे पीतम प्यारे तिहारो तनरे
आज के रोज़ सभी मिल जावें और वार दई सब धन रे
तुमको यह ईद मुबारक होवे "शाह आलम" पिया प्यारे बनरे[61]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीनत महल शाह आम की सौतेली माँ थीं। उनकी मात्र एक पुत्री उमदातुज़्ज़्मानी बेगम थीं। शाह आलम की वास्तविक माँ का नाम नन्हीं था। जो शाह आलम को शिशु रूप में छोड़कर मर गयी थीं। ज़ीनत महल ने ही उन्हें पाला पोसा था। एक वार पुनः शाह आलम स्वयं को मुबारकबाद दूसरों के माध्यम से अपनी पंक्तियों में दिलवाते हैं और कहते हैं कि मुबारक हो तुम्हें ज़ीनत महल का मिलना :

(तोड़ी, एकताला)

अल्लाह नबी ने तुम्हारे मनकी मुरादें दीनी, और राखा साया अपना फज़ल का
शाहे आलम" पादशाह, तुमको मुबारक होवे मिलना नवाब ज़ीनत महल का [62]

एक बार रसूल अल्लाह सल्लाहो अलैहे वस्सल्लम बीमार हो गये थे। अपनी अस्वस्थता के कारण घर से बाहर तशरीफ नहीं ले जाते थे। जब आप स्वस्थ हुए तो एक बाग़ में सैर के लिये गये थे ताकि तबीयत और अधिक बहाल हो। इसी संदर्भ को लेकर शाह आलम की निम्नलिखित पंक्तियाँ है :

आप मुहम्मद कीने आनन्द हैं, आज के रोज़ बड़ो सुख कीजे
"शाहे आलम" बाग की सैर करैं चलो, सखी चारशंबे की मुबारकी दीजे[63]

शाह आलम का कथन है कि पैंगम्बरे इस्लाम हज़रत मोहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया है कि ग़ुस्ल–ए–सेहत (स्वस्थ होकर स्नान करना) के बाद बाग़ की सैर कीजिये और जो लोग ग़रीब और भूखे हैं उनमें छल्ले (चांदी के) बांटकर प्रसन्नता प्राप्त करें :

(सिरी, बंधा तिताला)

ऐ फरमाये पैग़म्बर के आज के रोज़ बाग़ की सैर कीजे सुख लीजे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नये नये बसन भूषण पहरें, और आनन्द सूं सब को छल्ले दीजे[64]

(सारंग बिन्द्राबनी,चलता तिताला)

आज के रोज मुहम्मद ने करी बाग़ की सैर बड़ी ख़ुशहाली
देन मुबारकबाद, चलो, "शाहे आलम" को चारशम्बे की आली[65]

☆☆☆

आप मुहम्मद कीने आनन्द है, आज के रोज़ बड़ो सुख कीजे
"शाहे आलम" बाग़ की सेर करैं, चलो, सखी चारशंबे मुबारकी दीजे[66]

रमज़ान माह के तीस रोज़े (व्रत) रखने के बाद ईद–उल–फितर का त्योहार ख़ुशी के तौर पर मनातें हैं और रमज़ान में साधारण दिनों से अधिक इबादत करते हैं। शाह आलम की निम्न पंक्तियों में रोज़े रखने, ईद की नमाज़ पढ़ने और साथ ही रब को रिझाने अर्थात् रमज़ान की इबादत अन्य दिनों की इबादत से बढ़ चढ़ कर है, रब प्रसन्न होता है। मन की मुरादें पूरी हुई हैं और ईद आयी है इसलिये ईद की मुबारकें :

रोज़े को राख़ नमाज़ पढ़ी, तुम कीनी इबादत रब रिझायो
मुबारक[67]ईद तुम्हें, "शाहे आलम" जी की मुराद सबै भर पायो [68]

उक्त विषय पर कवि अन्य पंक्तियों में कहता है कि तुमने रोज़े रमज़ान के पूरे किये, रब ने कुबूल किये तुम्हें ऐसी ईद हज़ारो साल तक मिले और मुबारक हो, तुम ग़ाज़ी बनो अर्थात् समस्त ब्रह्माण्ड पर राज करो :

पूरन रोज़े करे रमज़ान के कीनी कबूल भयो रब राज़ी
साल हज़ार मुबारक ईद तुम्हैं, जग मैं "शाह आलम" ग़ाज़ी [69]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईद–उल–फितर के बाद ईद–उल–अज़हा (बकरीद) आती है जिसमें हज के बाद कुर्बानी की जाती है। शाह आलम निम्न काव्य पंक्तियें में कहते हैं अल्लाह और रसूल की मदद तुम्हारे साथ शाह आलम प्यारे हैं। बकरीद पर कुर्बानी मुबारक हो। तुम कुर्बानी के लिये ऊँट को देखो :

रब रसूल की मदद है नितहीं तुम को "शाहे आलम" प्यारे
ईद भई, कुरबानी मुबारक, शुतुर भये कुरबान निहारे[70]

बेगम जान के यहाँ पहलौठी का एक बेटा पैदा हुआ था। सन् 12 जुलूस (1185 ई0) में शाह आलम ने इलाहाबाद से वापस आकर बेगम जान का विवाह मिर्ज़ा बाबा के बेटे मिर्ज़ा इकरामउद्दीन उर्फ मिर्ज़ा मुगल से कर दी। बेटे के जन्म के बाद वह बहुत अस्वस्थ हुई और उनका देहांत हो गया।छः माह बाद उस पुत्र का भी निधन हो गया।शाह आलम ने इस शिशु के जन्म पर अनेक हिन्दी कविताएँ लिखीं।[71]

(मुलतानी धनासिरी, बँधा तिताला)

रब दियो पुत्र बेगम जान को, आय गुनी मिल मंगल गायो
लाल चुनी जड़े पलना पर मौद सूं गोद ले नानी झुलायो [72]

भगवान ने बेगम जान को पुत्र दिया, इस शुभ अवसर पर गुनी जन पधारे और उन्होंने मंगल गान गाये। रत्न जड़ाऊ पालने में प्रसन्न होकर नानी ने गोद में लिया और पालने में झुला रही हैं।

इस पद में पूर्णतः भारतीय संस्कृति और परिवेश की छाप है। पुत्र का जन्मोत्सव, गुनी जन का आना और मंगल गान, नानी का गोद में लेना और पालना झुलाना। भारतीय परिवार की विशेषता है। ऐसे अवसर पर नाना भी हीरे जड़ाऊ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पालना लेकर आये है और बेगम जान के बच्चे को उसमें झुला रहे है :

(भूपाली, इकताला)

बालक बेगम जान को रहिस झुलावत बाल
लाये नाना पालना हीरे जड़ के लाल 73

बेगम जान के इसी पुत्र की छठी का आनन्द मनाया जा रहा है। शिशु जन्म के उपरांत छठे दिन माँ और बच्चे को विशेष ढंग से नहलाया जाता है और उत्सव का सा आनन्द मनाने की प्रथा आज भी भारतीय घरों में है। सभी परिवार के लोग एक दूसरे को बधाई दे रहे हैं और बच्चे और माँ की बलायें ले रहें हैं। बलायें लेना भी भारतीय परिवेश में प्रसन्नता अभिव्यक्त करने का एक ढंग है।

(भूपाली, एकताला)

बेगम जान के पुत्र भयो, ता की छटी सब देत बधाई
आयें सबे तिय चाय, बढ़ाय के ले ले बलायें करें मन भाई 74

एक अन्य हिन्दी पद्य में बेगम जान के यहाँ पुत्र होने पर नाना (शाह आलम) बच्चे को प्रसन्न होकर खिला रहे हैं और नानी लोरी गा रही हैं, उसे चुम्बन दे रही हैं और अत्यन्त आनन्दित हैं। पालना व अन्य वस्तुएँ माएके से 'छोछक' रूप में आती है। यह प्रथा भी भारत में प्रचलित है। इस पद से यह भी अनुमान होता है कि शाह आलम के समय में राजघरानों में बच्चों का पालन–पोषण अन्नायें या आयायें करती थीं परन्तु शाह आलम की कविताओं से स्पष्ट हैं कि रक्त संबंधों में माँ और नानी–नाना इत्यादि बच्चों की परवरिश में संलग्न रहते थे और सुख का अनुभव करते थे :

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बेगम जान के पुत्र भयो, सुनि मोद से गोद खिलावत नाना
लोरी दे चूम झुलावत पालना नानी जीय बड़ोई सुख माना [75]

उक्त परिवेश और विषय से संबंधित निम्न लिखित अन्य उदाहरण दृष्टव्य है :

(जीत सरी, चौताला)

चन्दन को पलना रच के और ता पिछ हीरा लाल जड़ाये
बेगम जान की नन्द लिये अत चाय सूं रेशम डोरी लगाये
मन्दिर में सब नार बुलाय के, आनन्द सूं मिल मंगल गाये
सुन्दर वास बिछाये सुगन्धत ता पर ये ललना को झुलाये[76]

(जीत सरी, चलता तिताला)

आनन्द भयो 'शाहे आलम' के मन, गोद में ले के तियाँ झुलायो
नन्द के नन्द भयो सुभ बासर कंचन को पलना बन आयो[77]

☆☆☆

रतन जड़ाव को पालना बनाऊँ मिर्ज़ा अकबर की नन्द कूं झुलाऊँ
लोरियाँ दे दे लाड़ लड़ाऊँ मुखरा चूम और लेकर आप खिलाऊँ[78]

(जीत सरी, होरी)

अगर चँदन को पलना रेशम डोरी ललित लगाई
बेगम जान को लाल झुलायो, सुगन सूं मंगल गाई [79]

शाह आलम ने अपने मंझले बेटे अकबर शाह के बारे में, उनके जन्म विवाह और अन्य ख़ुशी के मौके पर अनेक पद हिन्दी में कहे हैं। अकबर शाह 7 रमज़ान 1173 हिजरी (23 अप्रैल 1760 ई0) को मकनपुर रेवां में पैदा हुए थे। इनकी माँ का नाम मुबारक महल था।[80]

शाह आलम ने अकबर शाह की वर्षगांठ की ख़ुशी में अपने भावों की अभिव्यक्ति निम्न प्रकार से की है :

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(तोड़ी, बँधा तिताला)

या जग में जब लों रहे गंग जमन को नीर
सालगिरह तब लों रहे पीर कबीर[81]

(तोड़ी, अड़ा चौताला)

ए री माई, कैसी बन आई आज सालगिरह अकबर शाह प्यारे की
सुभ घड़ी जान सब नारी बन आई आज दीनी सुभ गिरह नारे की[82]

(पूरबी, इकताला)

जिय्यो, जागो कोट बरस लो जग में अकबर प्यारे लाल
जम जम नित नित होय मुबारक तुम्हें सालगिरह लाखूं साल[83]

(हमीर, अड़ा चौताला)

सुभ दिन, सुभ महूरत, काज भये घर रब सँवारे के
दियो मुबारक सब मिल आज बरसगाँठ भई अकबर शाह प्यारे के[85]

(हमीर चौताला)

गावत मंगल सबे तिय आपस में मिल रात जगाई
बाजत ताल मुंहचंग परवावज, गाय गुनी, नौछावर पाई
लाखों साल हुलास बिलास सूं, राज करो सुख सूं सुखदाई
अकबर शाह की सालगिरह, 'शाहे आलम' को सब देत बधाई[86]

उपर्युक्त पंक्तियों की भाषा हिन्दी है और पूरा माहौल भारतीय है। परन्तु हिन्दु–मुसलिम दोनों परिवेश की रस्मों की चर्चा मिलती है अर्थात् वे रस्में जो दोनों घरों में मनायी जाती थीं। जैसे रतजगा, सालगिरह इत्यादि। गंग–जमन को नीर से उपमा देना भी भारतीय संस्कृति से अटूट लगाव का द्योतक है।

अकबर शाह जो शाह आलम के मंझले बेटे थे, वे जीना बेगम (जो जहांदार शाह, शाह आलम के बड़े बेटे की पत्नी) के यहाँ बिस्मिल्लाह की मेंहदी लेकर आये हैं :

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(हमीर, इकताला)

आज मेंहदी लगावन को अकबर शाह पियारो लायो
अतिही रंगीली मेंहदी बिस्मिल्लाह की जीना बेगम के घर रचायो[87]

मेंहदी का एक अन्य पद है :

(हमीर, इकताला)

ऐ री माई गाय बजाय आनन्द सूं रिझायो
अकबर शाह की मेंहदी अनेक जतन सूं रचाओं[88]

शाह आलम के यहाँ शादी में सब लोग आये हैं, सखियाँ, नर–नारी सभी मिलकर उपहार स्वरूप अकबर शाह को बधाई दे रहे हैं और सभी के मुख से मंगल गान गाये जा रहे हैं :

(हमीर, एकताला)

आये आज माजोमन्दीलरा 'शाह आलम' घर सादी देखत सब के मन भयो सुख
नर, नारी मिल अकबर शाह के हदिये की देत मुबारकबादी, सब गुनी गात मंगल मुख[89]

इसी रस्म का एक अन्य पद इस प्रकार है :

(कनहरा, चलता तिताला)

यह मेंहदी हदिये की मिरज़ा अकबर शाह की क्या धूम सूं आवत है।
'शाहे आलम' को सब देत मुबारकबादी, ऐसी मेंहदी सब के नैन सुहावत है[90]

(हमीर, यकताला)

रंगारंगी मेंहदी आई हदिये की मिर्ज़ा अकबर शाह के
सब सरवी मिल मंगल गाओ, मृदंग बजाओ देवो असीस अवमाह के[91]

शाह आलमे सानी ने अपनी रचना में मुबारकबादे जश्ने के अंतर्गत दिवाली और वसंत मनाये जाने के अत्यंत मनोहारी चित्र अपने हिन्दी काव्य में अंकित किये हैं। इसका तात्पर्य है कि किले में यह त्योहार भी पूरी धूमधाम और उत्साह के साथ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनाये जाते थे। निम्न उदाहरण देखिये :

आवन लगी हैं सारी सखी, मिल गाय बजाय, अरी मोरी आली
खेल मचा सब खेलन लागी छोटी बड़ी सब बैस की भोली भाली
जब खेलन लागी "शाहे आलम" सूं हार गईं सांवरी गोरी जोवन वाली
हा हा करत अब पययां परत सब देत असीस मुबारक दिवाली[92]

उक्त उद्धहरण में शाह आलम की साम्प्रदायिक सद्‌भाव पूर्ण दृष्टि साफ झलकती है। एक अन्य उदाहरण है :

(गौरी, बँधा तिताला)

खील बतासे, चिरवे गर सूं दिवाली की भरे हठरी चौघड़ा
खेलन निकसे सभी माई अत ही आनन्द सूं घर भरा[93]

दिवाली के रोज़ खील, बतासे चिउड़ा इत्यादि घर में आते हैं और पूजन होता है इसका वर्णन कवि ने किया है।

निम्नलिखित उदाहरण में कवि ने प्रथम पंक्ति में सरस्वती पूजन की बात कहते हुए विभिन्न पकवानों के नाम गिनाये हैं जैसे पूरी, कचोरी, समोसा, पापरी, सुहाली इत्यादि, अंत में दिवाली शब्द प्रयुक्त है। जोकि प्रसन्नता मनाने की अभिव्यक्ति है :

(हमीर, चौताला)

सरसुती के पूजने को सब ले ले आईं भर भर थाली
पूरी, कचोरी, समोसा, पापरी और करीं नीकी सुहाली
आनन्द सूं गाय बजाय सभी नर नारी दे दे ताली
किया नीको मिचोरी आज माई कनीं बन को हार दिवाली[94]

एक अन्य उदाहरण में आनन्द का अतिरेक है, पकवान बनाये गये हैं, शाहे आलम कहते है कि पिया का मंदिर प्रकाश से जगमगा रहा है आज दिवाली की रात है :

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(हमीर, बँधा तिताला)

ऐ री माई, आज अतिहीं आनन्द सूं सब गुनी करे पूरी सुहाली
'शाहे–आलम' पिया के मन्दिर भई रोशनी जगमगात की रात दिवाली[95]

कवि ने गोधन पूजन के अंतर्गत ब्रज की नारी और गोप कुमारी की चर्चा की है। गोधन पूजन अथवा गोवर्धन पूजन दीवाली के दूसरे दिन होती है। चूंकि भारतवर्ष .षि प्रधान देश है इसलिये यहाँ मवेशी और उसके गोबर का भी महत्त्व है। बरसात की नई फसलों में लकड़ी गीली होती है। गीली लकड़ी ठंड के मौसम में आसानी से जलेगी नहीं। इसलिये गोबर करने वाले जानवर हर मौसम में मौजूद हैं। गोबर के उपले जल्दी सूख जाते हैं और चूंकि दिवाली के फौरन बाद सर्दी शुरू हो जाती है, उस समय उपले जलाने के काम आते हैं। इस की राख़ को चेचक के ज़ख़्मों पर भी लगाया जाता है। गोबर की खाद खेती के भी काम आती है। "गोवर्धन का दूसरा नाम बलप्रतिप्रदा है अर्थात् राजा बल की पड़वा है। इस दिन राजा बल पाताल भेजे गये थे, इस दिन अन्नपूर्णा देवी की पूजा होती है जो अन्न की देवी है। काशी, मथुरा, गोवर्धन आदि के मंदिरों में भोग हेतु विभिन्न खाद्य सामग्री का अंबार लगता है। नाथद्वारा का अन्नकूट दर्शनीय होता है। राजा साहब अयोध्या के मंदिर में भी बीसों चीजें जमा की जाती हैं। गोवर्धन गाय चराने वाली जातियों का सबसे बड़ा त्योहार है।" [96]

(भूपाली, बँधा तिताला)

गोधन पूजन बन बन आई सब ब्रज की नारी
गावत राग हुलास भरे अतहीं आनन्द सूं नाचत गोपकुमारी[97]

एक अन्य उदाहरण है :

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चलरी सखी आज गोधन पूजने जाइये "शाहे आलम" प्यारे राज दुलारे के गेह
आज त्योहार के दिन की मुबारकी दीजे, अपने प्यारे संग लगइये नेह[98]

ईद, बकरीद, दिवाली की भाँति बसंत की मुबारकबाद संबंधी पद भी शाह आलम ने रचे हैं :

(गौरी, होरी)

आज ले ले आई सब सखी मिल नीको रंग
नये नये फूलन सूं खेलत बसंत 'शाहे आलम' के संग[99]

(गौरी, होरी)

मंजन कर खंजन अंजन दीजे, सजनी, सब मिल कीजे सिंगार
सीस सुघर गड़वा लीजे, गाये बसन्त, दीजे मुबारक 'शाहे–आलम' के दरवार [100]

भारतीय कृषि प्रधान परिवेश में माघ के अंतिम सप्ताह में किसान खेत से पीले फूल लाता है और घर में सब मिल कर बसंत मनाते हैं, नारियाँ कानों में पीले फूल लगाकर भगवान से प्रार्थना करती हैं कि हमारे परिश्रम का फल पेड़ों में उत्पन्न कर। कुछ लोग आम के बौर को हाथ में लेकर हाथों पर मलते हैं। आस्था यह है कि बौर मले हुए हाथों को आग बिच्छू या सांप के काटे पर हाथ फेर दिया जाय तो विष का प्रभाव नहीं होता। बसंत पंचमी को विष्णु भगवान की पूजा की जाती है।[101] कवि शाह आलम ने अत्यंत सुखद प्राकृतिक परिवेश की सर्जना करते हुए निम्न पंक्तियां लिखी हैं :

(गौरी, होरी)

प्यारे बिना सखी काह करु, यह नीकी बहार बसन्त जो आई
फूली गुलाब की सीतल बास बयार मिली चहूँ ओर को धाई
बौरी भई हूँ, बोल न जानूं, भूल गई मन की चतुराई
बैठ के अम्बे की डारन पे, उस बैरिन कोयल ने कूक मचाई [102]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारत देश में मुसलिम त्योहारों में शबबरात भी मनायी जाती है। इस दिन हलवा बनता है। रात भर इबादत की जाती है। लोग कब्रस्तान जाते हैं और अपने निकट संबंधियों की कब्रों पर फातेहा पढ़ते हैं। कहीं–कहीं आतिशबाज़ी (पटाख़े) छोड़ने की प्रथा भी है। इस त्योहार से संबंधित अनेक पद शाह आलम ने रचे हैं और आतिशबाजी के अनेक नाम भी गिनाये हैं : जैसे हतफूल, जूही, फुलजरी, महताब, सितारे, अनार, महताबी, घनचकर, हवाई इत्यादि :

(किदारा, चौताला)

फुलजरी, हथफूल, अनार, छूटे घनचकर और हवाई
चदर जाही जूही महताब सितारे की (अत) ही जोत सुहाई
झार, भुचंपे छूटे घनचकर हाथन में करके रोशनाई
देत सबे 'शाहे आलम' को शबरात की रात को लोग बधाई[103]

(पूरिया, इकताला)

मुबारक हो शबरात आज आनन्द की रात
'शाहे–आलम' घर आनन्द काज फुलजरी हतफूल हाथ[104]

(हमीर, दोताला)

पूरन करें मन की मुरादें तुम्हारी हज़रत रसूल
छूटत अनार, सितारे, महताबी, फुलजरी, हाथ हतफूल
आई शबरात की रात सुहाई, माई, और रात नहीं कोउ इसकी तूल
चलो सखी देखें तमाशो शबरात को 'शाहे आलम' के घर रब ने कीनी कबूल[105]

(हमीर, इकताला)

ऐ री माई, आज नीकी जगमगात सूं शबरात 'शाहे आलम' के घर आई है
सब नारी भाँति भाँति की आतिशबाज़ी छोर, नाँच गाय, देत बधाई है[106]

शाह आलम ने अपनी कविताओं में अनेक प्रकार के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आनन्दोत्सव मनाने के दौरान गाने–बजाने, विभिन्न रागरागनियों, ताल और अनेक साजों के नाम का उल्लेख किया है जैसे बीन, रबाब तंबूर, मुंहचंग, परवावज, सितार, दमामे, सारिंगी, झांझ, मंजीरा, ढोलकी, दाइरा, बांसरी, खटजरी, कटतार, मिरदंग इत्यादि :

गावत मङ्ग्ल चार सबे तिय आपस में मिल रात जगाई
बाजत ताल मुहचंग परवावज, गाय गुनी, नौछावर पाई
लाखों साल हुलास बिलास सूं, राज करो सुख सूं सुखदाई
अकबर शाह की सालगिरह, 'शाहे आलम' को सब देत बधाई[107]
(तोड़ी, चौताला)

बीन, रबाब, तंबूरा सितार, कानून, दमामे, सारिंगी, मुहचंग
झांझ, मंजीरा और ढोलकी, दाइरा, बांसरी, करह और हीचंग
खटजरी और कटतार लिये सुरनाई भली करनाई अबपंग
गाय गुनी 'शाहे आलम' को सब देत मुबारकी बजाये मिरदंग[108]
(किदारा, अड़ा चौताला)

सब नर नारी नीकी निकसी बसन भूषन अंग संवारे हार
सरनाई, करनाइ, झांझ, नफीरी, जैल दमामे बाजे सब द्वार
बाजत ताल, तंबूरा, मिदंग, बीन, रबाब, सारंगी और कटतार
गावत गुनी आनन्द बधाई, देत बधाई 'शाहे आलम' के दरबार [109]

## नौरोज़

नौरोज़ पारसियों का महत्त्वपूर्ण त्योहार है। इस दिन से उनका नववर्ष प्रारंभ होता है। ईरानी भी इसे मानते हैं। ईरान में इसलिये भी मनाया जाता है कि इसी दिन हज़रत अली की ख़िलाफत का ऐलान हुआ था। शाह आलम ने नौरोज़ से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संबंधित अनेक पंक्तियों की रचना की है :

बस नसेत और सेत तन नयो भयो नौरोज़ा
''शाह आलम को सफल है शत्रुन को गयो खोज 110

(भैरवी, आस्थाई बंधा तिताला, अंतरा जल्द तिताला)

आयो है नीको तुम्है नौरोज़, हुलास बिलास करो मन भाई
पूरे मनोरथ होय सबै, और अंग निरोग आनन्द बधाई 111

नौरोज़ का अच्छा त्योहार आया है, उत्साह पूर्वक इसे मनाओ सभी की मनोकामनाएँ पूरी हों और निरोग होकर आनन्द मनाएँ। इस खुशी के अवसर पर बधाई है। नौरोज़ बधाई के पदों से प्रतीत होता है कि किले में इसे नव वर्ष के आगमन के रूप में, मनोकामना पूर्ण होने, शत्रुओं के नाश, स्वास्थ लाभ, लक्ष्मी के घर आने व खूब सजधज कर श्रृंगार करने के रूप में मनाया जाता था :

(गौरी, चौताला)

साल नयो अब आयो भलो 'शाहे आलम' के घर होगी बधाई
मुबारक हो नौरोज़ तुम्हें, अब जी की मुराद सबे भर पाई
भूषण अंग सिंगार सजे, अब धाय के लछमी गेह में आई
दुर्जन नास भये तुम्हारे, अब देत यही चहुँ ओर सुनाई 112

(गौरी, चौताला)

रंग भयो नौरोज़ को जैसो है वैसो ही चीर को रंग ही साजी
गावो सबे मिल, देवो असीस यह, राज करो 'शाहे आलम ग़ाज़ी 113

(शहाना कानहरा, चलता तिताला)

आनन्द भयो सब के मन मों और आज भई सुभ दिन की शादियाँ
नर, नारी 'शाह आलम' को सिंगार किये देत नौरोज़ की मुबारकबादयाँ114

(किदारा, बंधा तिताला)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रब रसूल को साया : रहे सीस पे, औलिया अंबिया रहें नित पुश्त पनाही
'शाहे आलम' पादशाह, तुम को मुबारक होवे लाखूं साल नौरोज़ अब तख़्त शाही[115]

शाह आलमे सानी ने 'नौरोज़' उत्सव पर अनेक पद कहे हैं। इस पर्व का महत्त्व विश्व स्तर पर है। ईरानियों के अलावा यह दुनिया के अनेक देशों और क्षेत्रों में मनाया जाता है। भारत के कुछ क्षेत्रों में, मध्य एशिया, कौकेशस, दक्षिण एशिया, उत्तर पश्चिमी चीन, बलकान इत्यादि स्थानों पर नौरोज़ मनाया जाता है। मौलिक रूप से यह पारसियों का त्योहार है। ऐसा माना जाता है कि ज़रथुश्त्र (Zoroastor) ने स्वयं इसे आविष्कृत किया था परन्तु कोई पुष्ट प्रमाण या तिथि इसके प्रारंभ किये जाने के बारे में नहीं मिलती। नौरोज़ इरानी कैलेंडर का प्रथम दिवस होता है। बसंत ऋतु का शुभारंभ होता है। भौगोलिक परिवर्तन के अनुसार सूर्य उत्तरायण होता है, कर्क रेखा पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं और दिन–रात की अवधि बराबर होती है। पारसी समुदाय इसे 21 मार्च को मनाते हैं। अन्य देश अपने कैलेंडर के अनुसार मनाते हैं।

सांस्कृतिक दृष्टि से नौरोज़ का महत्त्व आज विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त कर चुका है। संयुक्त राष्ट्र संघ की सामान्य असेम्बली ने 2010 में नौरोज़ को अंतर्राजकीय कमेटी की मीटिंग 28 सितम्बर से 2 अक्तूबर 2009 को अबू धाबी में संयुक्त राष्ट्र संघ इनटैनजिबल (Intangible) विरासत को सुरक्षित रखने की दृष्टि से हुई। नौरोज़ को यूनेस्को की राजकीय सूची में दर्ज करते हुए इसे मानवता की इनटैनजिबल विरासत माना।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# होली

नादिराते शाही में हिन्दी भाषा में रचे गये होली वर्णन के अनेक कवित और दोहरे हैं। शाही हरमों में खेली जाने वाली होली के जीवंत चित्र हैं। बादशाह स्वयं अपनी पत्नी के साथ होली के त्योहार का शुभारंभ करते थे। होली की धूमधाम नौरोज़ और ईद के जश्न से कम नहीं होती थी। कवि द्वारा रचित ये गीत विभिन्न राग–रागनियों से पूर्ण हैं और गेय हैं। कुछ मोहक उदाहरण प्रस्तुत हैं :

(कामोद, होरी)

माघ बीतत भई, रुत फागन आये, गुनी सब खेलत होरी
ले पिचकारी भरें नर नारी अबीर गुलाल लिये भर झोरी
लाज तजी घर लोगन की, सब खेलो निसंग हो, कौन की चोरी
गावत गीत, बजावत ताल, कहें मुख तें भरुवाहो जोरी [116]

माध बीत चुका है और फागुन की रुत आ गई है। सभी होली खेल रहे हैं। राग कामोद, होरी में रचित पद है। इस पद में प्रयुक्त निसंग शब्द गूढ़ार्थक है। कवि कह रहा है कि सभी निसंग होकर अर्थात् निर्भय होकर होली खेलें और हार्दिक और आत्मिक आनन्द मनायें।

हों बरजोरी तो को बरजोरी लाय 'शाहे आलम' सूं खेलन के ढोरी
ले गुलाल अंगिया भर दीनी, मुख ऊपर लाय गह अंचर झक झोरी
तोरी तनी कन्चु की छोरी, बाँह मरोरी, कुच का रिहो का सूं आप छोरी
मेरो कहो न मानो तब सूं, अब कैसे कहे री, राज करो ऐसी होरी[117]

(सारंग, बिन्द्राबनी, होरी)

अत्र, गुलाब, अरगजा, चुवा, चन्दन सब ही तुम नित अंग रचायो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अबीर, गुलाल, कुमकुमा, केसर, राग और रंग, नाँच सुहायो
कौन है ऐसी वह प्यारी तिया हम को तज के मन वासूं लगायो
साँची कहो, तुम मोसूं पिया, या फाग के रंग में तुम कौने के चाहत जायो [118]

(तोड़ी, होरी)

आई आज खेलत सब नर नार अनमोली अबीर लिये भर झोली
भर भर मूठ गुलाल चलावत, सखी, दरक गई मोरी चोली
औरन सूं तीखे बोलत, मो सूं नित उठ करत बोली ठोली
'शाहे–आलम' संग कह, कैसे खेलूं, री सजनी, अब मैं ऐसी होली[119]

होली वर्णन के अनन्तर कवि ने श्रृंगारिक चित्रण भी खूब किये हैं जैसे 'तोरी तनी कन्चुकी छोरी' 'बाँह मरोरी', सखी दरक गई मोरी चोली' इत्यादि। ऐसे चित्रण पर रीतिकालीन प्रभाव स्पष्ट है।

शाह आलम ने होली के साथ बसंत और कोयल की कूक की भी चर्चा की है जो आम की डाली में बौर के आने का प्रतीक है।

(सयाम, होरी)

अबीर, गुलाल अब फूल लिये कर बाजत सुहावन लागी
भूषण अंग सिंगार सजे सब खेलत खेल मिली अनुरागी
कुंजन में, अली गुन्जन लागी सबे बन कोयल कूकन लागी
आनन्द हुलास भये सब के मन, बसन्त भली रस पागी [120]

(भटियार, होरी)

प्रथम बसंत बहार को गड़वा बनाये, गुनी, लाये हज़रत रसूल के दरबार
दफ, दाइरा, बीन, रबाब, कानून, मिरदंग, मुंहचंग और बजावन हैं सब नार
सुख सम्पत हो नित ही नित पुत्रन सिहत दीजे दुख और दालिद्र बिडार
गए बजाए के माँगे मुरादें 'शाहे–आलम' कूं दिलादीजे मुल्क माल गन्ज हज़ार [121]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(भटियार, होरी)

आज बनाये गुनी गड़वा दरबार रसूल के ले के चले हैं
बेल नई और पात नए क्या नीकी बसन्त के फूल खिले हैं
आई नवीद रसूल के द्वार सूं, जी के मनोरत बेग मिलें हैं
होयेगा राज चहूं दिस को, 'शाहे आलम' के दिन आये भले हैं[122]

(भटियार, होरी)

फूलन के हार चार जूही, चबेली, चंपा सोसनरा बेल देख कोकिका की बानी जीत जीत के करें
सरसों पाए लों फूल रही मुख गुलाब नैनन नरगिस अधर दस कंवलन की साम्ता धरें
बेली सी नवेली बाल जा के बात में सब दादर केवरा, केतकी, मोतिया, सुगन्ध फूल झरें
आप बन आई कामनी बसन्त रुत गड़वा देन आई 'शाहे-आलम' बादशाह के घर भरें[123]

इस प्रकार अनेक उदाहरणों में कवि ने होली खेलने के दौरान श्रृंगार वर्णन, मान, गाली देना, माघ के बीतने पर फागुन और बसंत ऋतु का आगमन, पीली सरसों का खेतों में फूलना, कोयल का कूकना, अनेक पुष्पों के नाम दिये हैं जिनकी सुगन्ध से वातावरण सुगंधित और ख़ुशनुमा हो उठता है। कन्हैया और उनकी बाँसुरी, 'मन्दिर में नीकी होरी भई के साथ ही शाह आलम ने रसूल के दरबार में अपनी दुआओं के कुबूल होने और अपने अच्छे दिन आने की चर्चा भी इस होली गान के अंतर्गत की है। अनेक साज़ो के नाम भी इन पदों में प्रयुक्त हुए हैं। होरी गीतों की उल्लेखनीय बात यह भी है कि प्रायः इन पदों में शाह आलम ने अपना उप नाम प्रयुक्त नहीं किया है। बहुत कम पदों में किया है। फाग के रंग से पूर्ण होली वर्णन के यह चित्र आज नयी सदी में भी पूर्णतः प्रासंगिक हैं। क्योंकि जब इन गीतों को राग-रागनियों के माध्यम से गाया जाता है तो मन मयूर नाच उठता है और अनेक सुप्त उमंगे और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावनाएँ जागृत हो अंगड़ाईयाँ लेने लगती हैं।

**निष्कर्ष :–** शाह आलमे सानी ने उर्दू की परंपरा के विपरीत ग़ज़ले रेख़ता में महबूब को स्त्रीलिंग माना है। रेख़ता या रेख़ती उर्दू का वह प्रारंभिक रूप है जिसमें विशेष रूप से दक्षिण में शायरी की गई। उर्दू में महबूब पुल्लिंग माना गया है। शाह आलम ने विरह और दिलबर से दूरी या उसकी ओर से अत्याचार स्त्री की ओर से वर्णित किया है। यह बात उन्हें दूसरे ग़ज़लकारों से विशिष्ट बनाती है। शाह आलम ने ग़ज़ल में अपना तख़ल्लुस 'आफताब' और दोहरा, कवित इत्यादि में 'शाहे आलम' प्रयुक्त किया है। उन्होंने अपने हिन्दी काव्य में बधाई गीत रचे हैं जिनमें शहज़ादे का जन्मोत्सव, छठी, छोछक, तारे देखने की रस्म, निछावर, देने की रस्म, मेंहदी, शादी, समधी–समधन के हँसी–मजाक का पदों में चित्रण किया है। रमज़ान, ईद, बकरीद, शबरात, के साथ दिवाली, होली, सरस्वती पूजन, गोधन पूजन, और बसंत के चित्र भी हैं। शबरात में अनेक आतिशबाजी के नाम और बधाईयों में अनेक भारतीय साज़ो केनाम इस बात के परिचायक हैं कि सब कुछ भारतीय परिवेश में और भारतीय संस्ःति के अनुरूप हैं। एक तथ्य विशिष्ट यह है कि अन्य किसी नववर्ष की बधाई के चित्र न होकर केवल नौरोज़ की बधाई के अनेक चित्र हैं जो पारसियों का नववर्ष होता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## सन्दर्भ

1. हिन्दी ग़ज़ल की नई दिशाएँ – संपादक, सरदार मुजावर पृ0 VII, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2/38 अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली 110002

2. साहित्य कोष – भाग एक, पृ0 217, इंडियन बुक डिपो, आदित्य भवन, लखनऊ

3. प्रेमी

4. बेचैन

5. किस्मत

5. तज़करा–ए–ख़वातीन–आसी, बहवालातज़करा शोअरा–ए–रेख़ती : इरफान अब्बासी, पृ0 206, दानिश महल, अमीनाबाद 1989, लखनऊ

6. वही–पृ0 206

7. प्राचीन

8. कवि

9. कविता

10. स्त्रीलिंग

11. मुहावरे

12. आवाज़

13. बड़ी बुआ

14. बाहर

15. तज़करा–ए–शोअराए रेख़ती, भाग 1, पृ0 9 सरफराज़ प्रेस, लखनऊ 19897.

16. दबिस्ताने गोलकुंडा–डा0 मोहम्मद अली असद, पृ0 81–131 बहवाला तज़करा–ए–शोअरा–ए रेख़ाती, इरफान अब्बासी, 1989

17. नादिराते शाही – पृ0 15 हिन्दुस्तान प्रेस, रामपुर 1944

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

18. नादिराते शाही – पृ0 2 हिन्दुस्तान प्रेस, रामपुर 1944
19. वही – पृ0 2
* बादा = शराब जाम = वह पियाला जिस में शराब पी जाये
नर्गिस = एक फूल जो आंख की भांति होता है।
20. नादिराते शाही – पृ0 2
21. वही – पृ0 2
# दीदा = आंख, मैंगू = शराब जैसी
22. नादिराते शाही – पृ0 4
23. वही – पृ0 5
24. दिलबर = महबूब
25. टुक = तक
26 ख़्वाब = सपना
27.खुर = खाना
28. उल्फत = मोहब्बत प्रेम
29. शोख = शरीर
30. बाशुद = खुलकर
31. गुलरु = फूल के समान सुन्दर मुख वाली
32. जफा = अत्याचार या ज़ुल्म
33. तकसीर = कुसूर
34. नादिराते शाही – पृ0 3
35. आफताब = सूर्य, मह = चाँद (हसीना) वसलत = मिलन
36. वही पृ0 3
37. नाज़नी = सुन्दर युवती?
38. दहन = मुख
39. हर्फ = अक्षर
40. ग़ुन्चए = कली
41. गुल = फूल
42. सहने = आंगन में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

43. चमन = बाग़
44. नादिराते शाही – पृ0 11
45. नादिराते शाही – पृ0 24 * बुरा
46. नादिराते शाही – पृ0 30
47. नादिराते शाही – पृ0 30
48. वही – पृ0 53
49. नादिराते शाही – पृ0 54
50. वही – पृ0 57
51. साहिब महल – ये मोहम्मद शाह अब्दाली की दूसरी पत्नी थीं। मलका ज़मानी की मौसेरी बहन थीं। साहिब महल अपनी बेटी के साथ अफगानिस्तान चली गई थीं। उनकी बेटी का नाम हज़रत बेगम था। अहमद शाह अब्दाली ने उनसे निकाह कर लिया था। 1187 हि0 (1773 ई0) में हज़रत बेगम का निधन हुआ तो उनका ताबूत लेकर दिल्ली आयीं और मोहम्मद शाह के बराबर में दन किया। यह मलका ज़मानी बेगम के साथ मोरी दरवाज़े के पास रहा करती थीं। ग़ुलाम कादर ख़ाँ ने उनके मकानों को भी लूट लिया था। मलका ज़मानी तो मर गई थीं परन्तु वे बेटी के 30 बरस बाद तक जिन्दा रहीं और 1802 ई0 में निधन हुआ।
मुलख़िस उत तवारीख़ – पृ0 190 अ, फ्रेंकलिन – पृ0 177, वाक्यात अज़फरी पृ0 84, मुताहुत तवारीख़ पृ0 341 बहवाला नादिराते शाही – शाह आलमे सानी, तदवीन (editing) इम्तियाज़ अली ख़ाँ अर्शी।
52. नादिराते शाही – पृ0 53
52. जुब्दतुज़्ज़मानी – ये शाह आलम की बहन लाडली बेगम का खिताब था जो मिर्ज़ा बाबा की पत्नी थीं।
53. नादिराते शाही – पृ0 54
54. वही – पृ0 56

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

55. नादिराते शाही – पृ0 56
56. वही – पृ0 55
57. वही – पृ0 55
58. नादिराते शाही – पृ0 75
59. वही – पृ0 76
60. नादिराते शाही – पृ0 80
61. वही – पृ0 85
62. नादिराते शाही – पृ0 86
63. वही – पृ0 78
64. वही – पृ0 98
65. नादिराते शाही – पृ0 89
66. वही – पृ0 78
67. हिन्दी (देवनागरी) में मुबरक शब्द है परन्तु उर्दू में मुबारक है
68. नादिराते शाही – पृ0 80
69. वही – पृ0 81
70. नादिराते शाही – पृ0 82
71. वाक्यात–ए–अज़फरी – पृ0 75
72. नादिराते शाही – पृ0 95
73. नादिराते शाही – पृ0 114
74. वही – पृ0 114
75. नादिराते शाही – पृ0 116
76. वही – पृ0 97
77. वही – पृ0 96
78. वही – पृ0 96
79. नादिराते शाही – पृ0 96
80. मुताउत–तवारीख़ – पृ0 375, शाहआलम नामें में लिखा है कि मुबारक महल कौम की सैदानी (सय्यद) थीं। ज़ीहज सन्

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाँच जुलूस आलमगीर (प्रारंभ सन् 1171 हिजरी, सितम्बर 1757 ईसवीं) नजीबउद्दौली के पास रहने के समय में शाह ने उनसे विवाह किया था। वाकाए आलमशाही पच्चीस पृष्ठ अ मालूम होता है कि यह आगरे की यात्रा के दौरान बादशाह के साथ थीं।

81. नादिराते शाही – पृ0 91
82. वही – पृ0 90
84. वही – पृ0 91
85. नादिराते शाही – पृ0 105
86. वही – पृ0 104
87. वही – पृ0 105
88. वही – पृ0 108
89. नादिराते शाही – पृ0 103
90. वही – पृ0 111
91. वही – पृ0 102
92. वही – पृ0 175
93. नादिराते शाही – पृ0 100
94. वही – पृ0 104
95. वही – पृ0 105
96. हिन्दू त्योहारों की दिलचस्प असलियत : मुंशी रामप्रसाद माथुर, पृ0 110, 111 ख़ुदा बख़्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी, 1991 ई0
97. नादिराते शाही – पृ0 113
98. नादिराते शाही – पृ0 81
99. वही – पृ0 99
100. वही – पृ0 99
101. हिन्दू त्योहारों की दिलचस्प असलियत : मुंशी रामप्रसाद माथुर, पृ0 110, 126 ख़ुदा बख़्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1991 ई0
102. नादिराते शाही – पृ0 100
103. वही – पृ0 116
104. वही – पृ0 115
105. नादिराते शाही – पृ0 109
106. वही – पृ0 106
107. वही – पृ0 104
108. वही – पृ0 87
109. नादिराते शाही – पृ0 117
110. नादिराते शाही – पृ0 76
111. वही – पृ0 83
112. वही – पृ0 101
113. नादिराते शाही – पृ0 101
114. वही – पृ0 111
115. वही – पृ0 117
116. नादिराते शाही – पृ0 146
117. वही – पृ0 132
118. नादिराते शाही – पृ0 138
119. वही – पृ0 135
120. वही – पृ0 142
121. नादिराते शाही – पृ0 158
122. वही – पृ0 159
123. वही – पृ0 159

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पंचम अध्याय

# साहित्यिक अध्ययन

## कवित

कवित को 'मनहरण' या 'मनहर' कवित भी कहा जाता है। इस छंद के चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16 और 15 वर्णों पर यति से, कुल 31 मात्राएँ होती हैं। अंतिम वर्ण गुरू (ऽ) होता है।[1]

## दोहा

दोहा के लक्षण – विषम अर्थात् (1 – 3) पदों में 13 मात्राएँ और सम (2–4) पदों में 11 मात्राएँ होती हैं विषम पदो के आदि में जगराा (1ऽ1) नहीं होना चाहिए। सम पदो के अन्त में लघु पड़ता है।[2]

कवित और दोहा के शास्त्रीय लक्षण उपर्युक्त अनुसार हैं। 'नादिराते शाही' में एक स्थान पर होरी, कवित व दोहरा : वग़ैराः और दूसरे स्थान पर कवत व दोहर : नायका भेद शीर्षक से शाह आलमे सानी के अधिकांश हिन्दी भाषा में रचित पद संकलित हैं। यहाँ यह इंगित करना अभिष्ट होगा कि इन पदों में शास्त्रीय नियमों का पालन नहीं मिलता है। साहित्यिक दृष्टि से ये पद महत्त्वपूर्ण हैं।

जैसे :

फूल, गुलाल, अबीर ले जी में कियो बिचार –16 बर्ण

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खेलत होरी, लाल को लीजे गेंदन मार[3]–15 वर्ण

इस कवित में 16 और 15 वर्ण तो हैं परन्तु मात्राएँ नियमतः नहीं हैं न ही अन्त में गुरू है। परन्तु वर्ण्य विषय और भाषा की दृष्टि से पद होली के वातावरण को पूर्णरूपेण व्यंजित कर रहा है। इस दृष्टि से बादशाह द्वारा उस काल में हिन्दी में रचे गये उनके पद विशेष महत्त्व रखते हैं। कुछ अन्य उदाहरण है :

(कानहरा, होरी)

रीझ रहीं तब ही सुन के, जब बाँसरी कान कन्हया बजाई
देखत लाल को फाग के ख़याल को बाल अबीर, गुलाल ले धाई [4]

(भूपाली, होरी)

खेल सकूं नहीं, लाज लगे, पिया, पाय परूं कहू बाँह मरोरी?
रंग सुरंग भरी 'शाहे–आलम' के मन्दिर नीकी मची आज होरी [5]

उक्त पदों में रीतिकालीन प्रभाव भी लक्षित होता है। कन्हय्या का बाँसुरी बजाना, गुलाल, अबीर से फाग खेलना। शाहे आलम के मन्दिर होली की साज–सज्जा की धूम मची है। स्वकीया नायिका का मान भी चित्रित है :

(पूरया, इकताला)

सँची कहो, पिया, कहाँ बन ठन चले तुम ऐसे अमोल
ऐसी है वह कौन पिया प्यारी, जा से करोगे किलोल?[6]

होली, फाग, बसंत और गारी (गाली) देने के चित्रण के अलावा कवि ने अपने कवित और दोहे में नायिका की ओर से उसके रूठ जाने, नायक की उसके प्रति उपेक्षा, किसी अन्य स्त्री से मन लगाने, रात–रात भर घर से बाहर जाकर किसी अन्य के यहाँ रैन बिताने इत्यादि पर भी पद रचे हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैसे – साँची कहो, प्यारे, कहां से आए रैन के जागे
सारी रैन और सूं रस पागे भोर आ मेरे उर लागे[7]

☆☆☆

लालन की तो नेह अब, और तिया के सात
कहा कहूँ तो कों, सखी रही न उन को बात [8]

☆☆☆

आवो तुम पीतम, मेरे मध माते, तेरे चाव के बीच भई भोर
कौन तिंया संग रैन बिताई, न जानूं कौन के तुम रहे ठौर [9]

मेरे प्रियतम मदमाते यानि मस्त आओ, किस स्त्री के साथ रैन बिताई है? मैं न जानू तुम किस ठौर रहे हो? पातिव्रत धर्म है, फिर भी 'आवो तुम' कह रही है। पिय कितना भी दुख दे वह उसके प्रति वफादार है :

जो पियः आवे मोरे घरवा, करूं संगरवा, लेहूँ बलाएं, परहूँ पाएं
कहा करूं, कित जाऊं, सखी री, भोर भए, लो अज हूँ न, आए छैल तुरकवा [10]

☆☆☆

ए री माई, सरसुती का पूजन करके माँगत हूँ यह भोर नूर
'साहे आलम' पिया के मन की मुरादें सब ही दीजे भरपूर[11]

उक्त पंक्तियों में मिली जुली भाषा और मिली जुली संस्कृति दोनों के स्पष्ट दर्शन हैं। पूजन करके, भरपूर हिन्दी शब्द, ए री माई, सरसुती, भोर पिया, दीजे ब्रजभाषा, नूर, मुरादें उर्दू शब्द प्रयुक्त हैं। 'साहे आलम' पर भी ब्रजभाषा का असर है। बैरी नैन पिय की छवि को देखने नहीं देते :

छब कों देखन दें नहीं पीपल बैरी नैन
घरी न लागें रात को, दिवस न देते चैन[12]

☆☆☆

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मो को तो अब, ऐ सखी, लाल न पूछें बात
जावत दिन है आस में, रोते रोते रात [13]

☆☆☆

मन मेरो अमोल ले जात, पिया, तुम बार कछु न लगावत हो
पहले तो लुभाई लगाए भले, फिर पाछे उसे उचटावत हो
अत छैल छबीले, रंगीले, महा गुर बेली, रसीले कहावत हो
तुम राख न जानत हो, तो कहो, चित काहे पराई चुरावत हो[14]

पहले तो मन लगाते हो फिर उचटवा देते हो, रसीले, रंगीले और छैल छबीले हो। जब रखना नहीं जानते तो चित क्यों चुराते हो? कुछ–कुछ सूर–साहित्य के कृष्ण की गोपियाँ जैसा उलाहना है। नायिका की ओर से हिय के लगाने की बात शुद्ध रूप से हिन्दी सहित्य का वातावरण है। उलाहना के साथ श्रृंगारिक उद्‌भावना से पूर्ण पद है– भोर हो गई है, प्रिय को जगा रही है, कागा बोले,

चिड़ियाँ चहचहा रही हैं, ऐसी सुन्दर सुखद प्राकृतिक बयार में प्रिय सो कैसे सकते हैं–

उठो तुम प्यारे नींद के माते, राज दुलारे, भोर भई, तुम जागो
कागा बोले, और चिरयां चहचहाएं ऐसी बहार में तुम गरे लागो [15]

नायक–नायिका के मान, श्रृंगार विरह के अलावा भी शाह आलम ने अपने कवित और दोहों में उन विषयों को भी सम्मिलित किया है जो जीवन दर्शन से संबंधित है। जैसे –

(अलया, बँधा तिताला)

काम न आवे साईं बिन,किया करो कछु भेस
भूलो मत इस देस पे, बसोगे दूजे देस [16]

☆☆☆

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समझ तू अपनी ख़ाक को फानी जनम न खोई
भूलो मत उस राह को बाकी ओही होई[17]

(मुलतानी तिताला)

महशर का दिन याद रख, हाल न अपना भूल
इस में बख़शे जाओगे, कलिमः पढ़ो रसूल [18]

☆☆☆

हर दिन उसकी याद रख, जा में सब कुछ होय
आये न दुनया काम कुछ, ग़फलत में मत सोय [19]

इन पदों में शरीर के ख़ाक में मिल जाने और आख़िरत के दिन पर आस्था होने संबंधी सत्य का उद्धाटन है। भक्तिरस का कवित है, यह शरीर नाशवान है। जीवन व्यर्थ न गंवा, भगवान की राह को मत भूलो क्योंकि होगा वही जो वह चाहेगा। निम्नलिखित दोहे में कवि कह रहा है कि वही बात कीजे जो रब कहे और उसका रसूल कहे। अपने रब और रसूल के प्रति अटूट आस्था के दर्शन होते हैं :

भली न तो को बात यह जानी ख़बर न भूल
की, वह जो रब कहे, और कहे जो रसूल [20]

कवि शाह आलम ने अपने दोहों और कवित में स्थान–स्थान पर सांवरो रंग, मनमोहन, बंसी बजाये, हमारे मन्दिर इत्यादि शब्दों का प्रयोग कर जिस वातावरण की सृष्टि की है वह हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत रीतिकालीन परिपाटी से मिलती जुलती कविता है :

सांवरो रंग सुहावनो लागत, गावत आवत राग नयो है
बन्सी बजाए, कछु, मुस्काए, लला मन मेरो लुभाए लियो है
नीकी भली चली जात हती, सुध जात रही, यह कैसो भयो है?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देखत ही मन मोहन को, सखी, मो तन को सब चैन गयो है[21]

☆☆☆

आज अचानक आये गये पिया प्यारे हमारे मन्दिर सूने
देखत ही उनको, सजनी, तन मन मेरो भयो सुख दूने [22]

इसी प्रकार नायिका सखी से कह रही है कि आज मेरे द्वार सुरजन साई आये हैं। मैं मंगलाचार गाते हुए श्रृंगार करुँगी और उनका स्वागत करुँगी :

सुनो री सखी, आज आये सुरजन साई मोरे द्वार
काज भये मोरे मन्दिर करुंगी श्रृंगार, सीस गुंधाऊं गाऊं मंगल चार [23]

## मेंहदी

मज़ारात[24] के उर्स के अवसर पर जहाँ चादर–पोशी (चढ़ाना), कव्वाली, हार–फूल चढ़ाने का तरीका जारी है वहाँ कतिपय मज़ारात पर मेंहदी भी चढ़ायी जाती है। ख़ानकाही[25] निज़ाम[26]में बैत[27] का सिलसिला हज़रते अली से है। इसका तरीका यह है कि कोई भी मुरीद (भक्त/चेला) अपने पीर के हाथ पर जब बैत होता है (उसकी मुरीदी में आता है) तो उस पीर का हाथ अपने पीर के हाथ पर बैत होता है और यह सिलसिला हज़रते इमामे हसन, हुसैन और हज़रते अली तक पहुँचता है।

उनतीस तारीख़ (जिल हज की ज़री) को ज़री उठती है अर्थात् यह मोहर्रम का प्रारंभ है और सात मोहर्रम को जो ताज़िये उठते हैं उसे मेंहदी उठना कहते हैं। हज़रते इमामे हसन के साहबज़ादे कासम हैं। और इमाम हुसैन अलैहअस्सलाम हज़रते कासम के चचा हैं। हज़रते कासम की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शादी इमामे हुसैन की साहबज़ादी फातमा–तुल–कुबरा से होना थी लेकिन वाकया–ए–कर्बला पेश आ गया। रिवायत यह है कि शब में सींग़ा[28] पढ़ा दिया था, हज़रते कासम कर्बला में शहीद हो गये थे।[29] चूकिं दूल्हा की मेंहदी जाती है इसलिये सात मोहर्रम को हज़रते कासम की मेंहदी उठाई जाती है। इस तारीख़ को बच्चों को फकीर भी बनाया जाता है।

ख़ानकाही निज़ाम में उर्स के मौके पर मज़ारात पर मेंहदी का चढ़ाया जाना इस अवसर का प्रतीक है। अतः अजमेर शरीफ में मेंहदी चढ़ायी जाती है। कलियर शरीफ में जब उर्स होता है तो अजमेर शरीफ से मेंहदी भी आती है। कव्वालियों में जहाँ पीर की विशेषताओं का जिक्र होता है वहाँ पीर की मेंहदी और ग़ौस–उल–आज़म की मेंहदी का भी जिक्र होता है। 'नादिराते शाही' में शाह आलम ने भी मेंहदी पर अनेक पद रचे हैं। पीर की मेंहदी का बखान इस प्रकार करते हैं :

(कमोद, होरी)

मिंहदी आई पीर की रोशन चन्द सो चन्द
'शाहे आलम' मुरीद के घर में भयो आनन्द[30]

मेंहदी से संबंधित पदों में शाह आलम ने ग़ौस–उल–आज़म से विनती की है। ग़ौस–उल–आज़म का नाम सैय्यद मुहय्युद्दीन[31] कादर जीलानी है। आंपको पीर दस्तगीर भी कहा जाता है :

(ऐमन, इकताला)

हज़रत पीर ग़ौस–उल–आज़म सूं बार–बार यह इलतिमास की
माल मुल्क सब दिला दीजे, सुनो बिनती अब मुझ दास की[32]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ऐमन, चलता तिताला)

हज़रत पीर दस्तगीर, तुम मन के कीजे काज
दुरजन सबे बिडारिये माँगत हूँ यह आज[33]

शाह आलम के 'मेंहदी' संबंधी पदो के पढ़ने से यह अनुमान होता है कि वे स्वयं को पीर दस्तगीर के सिलसिले का मुरीद मानते हैं। स्वयं को उस सिलसिले का मुरीद मानते हुए कहते हैं कि मैं अपनी मुराद को उन्हीं की मेहरबानी से पहुँचा हूँ :

(अड़ाना, चौताला)

क्या नीकी आज यह रोशनी मिहदी की हज़रत पीर दस्तगीर की बन आई
चिराग़न की जोत जगर जगर ऐसी लागत जैसी रंगारंग के जवाहिर से छाई
कैसी धूम की बाजत नौबत और छूटत आतिशबाज़ी, गुनियन मिल के गाई
कीनी नज़र मिहर की अपने मुरीद पर, 'शाहे आलम' ते मन की मुराद भर पाई [34]

सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित नर–नारी पीर की मेंहदी लेकर शाह आलम के मन्दिर आई हैं। शुभ घड़ी है, सुगन्ध से वातावरण महक रहा है सभी के मन में चाव है, हाथ जोड़कर अपनी बिनती सुना रहे हैं, गुनीजन शाह आलम को मुबारकबाद[35] दे रहे हैं। शाह आलम की मुराद पूरी हुई है :

ठाठ बनाए अनेकन भाँत के पीर की है मिहदी सुखदाई
बास सुगन्ध की फैल सुभ साअत शाह के मन्दिर आई
चाव बढ़ो सब के चित में हित में बिनती कर जोर सुनाई
दीनी मुबारकी गाए गुनीन मुराद सबे, 'शाहे–आलम' पाई [36]

शाह आलमे सानी की ग़ज़लों में भी मेंहदी की चर्चा अनेक स्थान पर है। विशेषकर उन पदों में जिनका संबंध इश्क–ए–हकीकी से है। उनका .ष्टिकोण यह था कि जो कुछ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी मैं हूँ वह अपने पीर दस्तगीर के कारण हूँ। इसलिये वह मेंहदी जो पीर के नाम की चढ़ायी जाती है उसमें उन्हें 'दस्तगीर के नूर' का प्रकाश दिखायी देता है :

(सयाम, इकताला)

मेंहदी की रोशनी की चमक देखो, पीर[37] की
इस में तजल्ली नूर की है दस्तगीर 1 की
वह ग़ौसे–पाक मुहिये–दी, जिस के नूर से
है रोशनी यह सब महो–मेहरे–मुनीर की
यह 'आफताब' उसके मुरीदों का है मुरीद
रहती है याद इसे उसी पीराने–पीर की[38]

शाह आलम ने अपनी ग़ज़लों में 'आफताब' उपनाम प्रयुक्त किया है। उनका कहना है कि आफताब के पीर का सिलसिला ऊपर जाकर पीराने पीर दस्तगीर से मिलता है। शाह आलम ने तसव्वुफ (सूफी भक्ति) का गहन अध्ययन किया था और सय्यद मुहम्मद मुराद उनके पीर थे। मेंहदी आने और उर्स के समय का चित्रण कवि ने निम्न प्रकार किया है :

(अड़ाना, इकताला)

आई है मेंहदी धूम से, बजते नकारे हैं
छुटते हर इक तरफ से भुचंपे सितारे हैं
रक्कास : रक्स करती हैं इकसू बज़ेबो–ज़ैन
कव्वाल गाते, बैठे हुए इक किनारे, हैं
पीराने–पीरे–ख़ल्क की मेंहदी का यह है ठाठ
जिसके मुरीद, पीर ज़माने के सारे हैं [39]

नक्कारों का बजना, मेंहदी की धूम, सज–धज कर नृत्यांगनाओं का नृत्य और कव्वालों की कव्वाली, मुरीदों की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भीड़ यह सारा दृश्य मेंहदी की आस्था से संबंधित है। उनका मानना है कि पीर की मेहरबानी से ही संसार में शाह आलम की बादशाहत की रोशनी है अर्थात् उनकी आस्था है कि पीर दस्तगीर के कारण ही उनका यह अस्तित्व कायम है :

मेहर उसकी से जहान में रोशन है 'आफताब'
मजलिस है जिसने पीर की तरतीब दी यह आज [40]

(स्याम)

महबूबे–हक हो ख़्वाजओ मख़दूमे–काइनात
सुलताने ग़ौसे–आऽज़मों दरवेश और फकीर
सय्यद हुसेनी और हसनी हाशिमी नसब
और कहते तुम को मुहयिऐ–दीं सब हैं, या अमीर!
तुम शैख़े अबदे–कादिरु कुतबे ज़मानः हो
मै हूँ मुरीद, और सभी पीरों के तुम हो पीर [41]

अपने पीर में अटूट आस्था का दिग्दर्शन कराते हुए शाहआलम ने जिस चाव से उर्दू और हिन्दी दोनों भाषाओं में अपने भाव अभिव्यक्त किये हैं वे वास्तव में अद्वितीय हैं :

(स्याम, इकताला)

हज़रत पीर की रोशनी की मेंहदी 'शाहे आलम' जब मन्दिर आई
आनन्द चाव हियो में भयो, और जी की मुराद सबै भर पाई [42]

हिन्दी पदों में मेंहदी का शाह आलम के मन्दिर आना, हृदय में चाव और आनन्द का भर जाना,सभी की मुरादों का भर पाना प्रयुक्त है। सम्पूर्ण वातावरण भारतीय परिवेश में स्नात है। भारतीय जन–मानस की यह विशेषता है कि वह अपनी मुरादें या मन्नत मानने हर दर पर जाता है बिना जाति–धर्म के भेद–भाव के। शाह आलम के शब्दों से भी यही ध्वनित होता है

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि पूरी निष्ठा और आस्था से की गई प्रार्थना अवश्य पूर्ण होती है :

(हमीर, इकताला)

रंगारंग मेंहदी सबै पूरे मन के काम
भई रोशनी पीर की "शाहे आलम' के धाम[43]

## नायिका भेद

नादिराते शाही में नायिका भेद शीर्षक के अंतर्गत सर्वाधिक हिन्दी दोहरे[44] व कवित संकलित हैं। नायिका भेद से तात्पर्य है शास्त्रीय दृष्टि से नायिका कितने प्रकार की होती हैं। इस बिन्दु पर संक्षेप में प्रकाश डालना अभीष्ट होगा। साधारतः नायिका काव्य में वर्णित वह पात्र है जिससे संबंधित वर्णन कवि द्वारा किया जा रहा है। शास्त्रकारों के अनुसार नायिका तीन प्रकार की होती है स्वकीया, परकीया तथा साधारण स्त्री (वेश्या)। स्वकीया भी तीन प्रकार की होती हैं मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा। नायिका की स्वाधीनपतिका आदि आठ अवस्थायें होती हैं। ये हैं :

1. स्वाधीनपतिका 2. वासकसज्जा 3. विरहोत्कंठिता
4. खण्डिता 5. कलहान्तरिता 6. विप्रलब्धा 7.प्रोषितपतिका
8. अभिसारिका

नायिका की सहायिकाएँ भी होती हैं, जो प्रायः दासी, सखी, पड़ोसिन, भिक्षुणी आदि होती हैं और दूती का काम भी करती हैं।

स्वकीया नायिका शील तथा सरलता आदि से युक्त होती है। शील का अर्थ है– अच्छा आचरण, अतः स्वकीया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नायिका पतिव्रता, कुटिलता रहित, लज्जावती और पति की सेवा में निपुण होती हैं। लज्जावती से तात्पर्य है कि भाग्यशाली जनों के घर में ही ऐसी नारियाँ होती है जिनका लज्जा ही पर्याप्त प्रसाधन है, जो पर–पुरुषों से तृप्ति की इच्छा नहीं रखती, अविनय करना नहीं जानतीं।

इस प्रकार की नायिका मुंग्धा, मध्या और प्रगल्भा तीन प्रकार की होती हैं। स्वकीया नायिका के लक्षण में संस्कृत के साहित्यशास्त्र में आदर्शवादिता की झलक मिलती है किन्तु परकीया और साधारण स्त्री के वर्णन में उनका दृष्टिकोण यथार्थवादी रहा है। जिसमें यौवन तथा काम–भाव का प्रथम अवतरण होता है, जो रतिक्रीड़ा में अनुकूल नहीं होती। क्योंकि उससे अनभिज्ञ होती है।[45] क्रोध करने पर जिसे सुखपूर्वक प्रसन्न किया जा सकता है, वह मुग्धा नायिका होती है।

तारुण्य और काम भाव प्राप्त कर चुकने वाली तथा मोह की अवस्था पर्यन्त सुरत के योग्य नायिका मध्या होती है। मध्या के धीरा, अधीरा और धीराधीरा ये तीन प्रकार माने जाते हैं। मध्या धीरा ताने के साथ वक्रोक्ति से और अधीरा कोप के साथ अश्रुपूर्वक कठोर शब्दो से अपराधी प्रियतम को फटकारती है।

जो यौवन में अन्धी सी, काम से उन्मत्त सी, आनन्द के कारण प्रियतम के अंगों में प्रविष्ट होती हुई सी सुरत के आरंभ में भी चेतना रहित हो जाती है, वह प्रगल्भा नायिका है।

**स्वाधीनपतिका–**

जिस नायिका का पति समीप में स्थित है तथा उसके अधीन है और जो प्रसन्न रहती है वह स्वाधीनपतिका है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

**वासकसज्जा–**

प्रिय के आगमन की आशा होने पर जो हर्ष के साथ अपने को सजाती है वह वासकसज्जा है।

**विरहोत्कंठिता–**

निरपराध होते हुए भी प्रिय के देर करने पर उत्कण्ठित रहने वाली नायिका विरहोत्कण्ठिता कहलाती है।

**खण्डिता–**

नायक को दूसरी नायिका के सहवास से चिह्नित जान लेने पर जो ईर्ष्या से कलुषित हो जाती है वह खण्डिता है।

**कलहान्तरिता–**

क्रोध से अपराधयुक्त नायक को तिरस्कृत करके पश्चात्ताप की पीड़ा का अनुभव करने वाली कलहान्तरिता नायिका कहलाती है।

**विप्रलब्धा–**

प्रियतम के निश्चित समय पर न आने के कारण अत्यधिक अपमानित होने वाली विप्रलब्धा कहलाती है।

**प्रोषितप्रिया–**

जिस नायिका का प्रिय किसी कार्य से दूसरे दूर देश में स्थित होता है वह प्रोषितप्रिया अथवा प्रोषितपतिका कहलाती है।

**अभिसारिका–**

जो काम से पीड़ित होकर नायक के पास स्वयं जाती है अथवा नायक को अपने पास बुलाती है वह अभिसारिका है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में रीतिकाव्यों की रचना

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अविच्छिन्न रूप में मुख्यतया जिस युग में होती रही उसे इतिहास लेखकों ने रीतिकाल कहा है और संवत् 1700 से 1900 तक उसकी सीमा निर्धारित की है। रीतिकाल में संस:त के विविध समीक्षा सम्प्रदायों से संबंधित रस, अलंकार, नायिकाभेद आदि काव्यांगों पर ग्रन्थ लिखे गये। नायिका भेद वर्णन को इस काल में प्रमुख स्थान मिला। इसके साथ षट्ऋतु या बारहमासा वर्णन को भी प्रमुखता मिली। यह वर्णन श्रृंगाररस के उद्दीपन विभाव के रूप में दिखायी देता है। इस ऋतु वर्णन में नायक–नायिका की संयोग तथा वियोग–जनित चित्तवृत्ति का प्रतिबिम्ब देखने को मिलता है। ऋतुओं का वर्णन विरहिणी नायिका की विरह व्यथा को तीव्रता प्रदान करता है।

शाह आलमे सानी का समय 1728–1806 ई0 है और नादिराते शाही का रचना काल 1797 ई0 (1212 हिजरी) है। हिन्दी साहित्य के कालक्रम में यह दौर रीतिकाल का दौर कहा जायेगा। इस दृष्टि से अपने हिन्दी काव्य में शाह आलम ने नायिका भेद पर भी लेखनी चलाते हुए कवित[46] व दोहरा[47] रचे हैं। इसके अंतर्गत नायिका भेद संबंधी पद तो हैं ही साथ ही श्रृंगार, मान, उलाहना, तसव्वुफ, दर्शन, नीति, विरह, सौंदर्य, पूर्णमासी, षट्ऋतु, प्रकृति, आदि का मनोहारी चित्रण है। निम्नलिखित पद दृष्टव्य हैं :

पिया मोरे जाग रे, जाग रे, जाग रैन तो कठिन अत लागे
'साह आलम' ने तुम्हारे देखन कों सगरी रैन उमाहे जागे[48]

नायिका प्रिय को जगाने हेतु आवाज़ देते हुए कह रही है कि अब जाओ, सारी रात तुम्हे देखने के लिये जाग कर काट दी है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रिय के प्रति आसक्ति का चित्र निम्न प्रकार है :

सीस कहे, पड़े पाय रहूँ, और बाह कहे, उन्हें छांड़ न दीजै
जीव कहे, बतियां करुं, और कान कहें, धुन वा की सुनीजे
अङग् कहें, लिपटाय रहूँ, और जीव कहे, मुझ मांह रहीजे
पाय कहें, घर वाही के जाइये, नैन कहें मुख देखो ही कीजे [49]

शरीर के सारे अंग प्रिय के प्रति समर्पित हैं। वर्णन सौन्दर्य का सुन्दर उदाहरण है।

ऊतर देत न बात कहे, चुप बैठ रही मानो चित्र की लीखी
जो बात करो, तो न बोले कछु, जो न बात करो, तो होवे है तीखी[50]

न बात करती है न उत्तर देती है मानो चित्र लिखी हो अर्थात् जीवित इंसान न होकर एक निर्जीव चित्र हो, बात करो कुछ बोलती नहीं, न करो तो नाराज़ होती है। नायिका भेद का निम्न उदाहरण दृष्टव्य है :

उनीदें भये अत नैन लला के कैसे लगें, जैसे रैन के जगाये
ऐंडे फिरें, सखि, आज पिया, काहु प्यारी पिया को अङग् लगाये[51]

☆☆☆

झूठ कहो मत मेरे तईं, मेरो न लीजे नाम
जाओ जहां नित जात हो, करो उसी से काम [52]

☆☆☆

रैन रहो घर कोन के, कहां लगाये नैन?
रस बस में वा के भये, हम सूं हस हस बैन [53]
हिल मिल रह तू प्यारे संग और कभू न हो उन सूं न्यारी
लाल चले हैं लाला देखन, नाफरमान न हूजो प्यारी [54]

☆☆☆

पीतम को न छीन ले, मो को यही परेख

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आगे पी, पाछे तिया, सखी, अलग हो देख [55]

नायिका भेद के पदों को पढ़कर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शाह आलम का ऐतिहासिक, शास्त्रीय और साहित्यिक अध्ययन कितना गहन था और साथ ही उन विषयों पर पैनी पकड़ भी थी। नायिका विरह से पीड़ित है और अपने उद्‌गार इस प्रकार प्रकट करती है :

पीतम के अब हाथ से कीधर को कह जाऊं
समझ समझ, सरव, जीयः में अपने हूँ दुख पाऊं [56]

☆☆☆

ए री माई, नैनन दीठ लगे रहत, पियः को देखन कैसे बन आवे?
कल न पड़त, पलको नहीं लागत, निस दिन मो को बिरह सतावे
जब आन मिले पियः प्यारो मेरो, तब सब तन सुख पावे
जनम जनम की हो रहूँ वा की, जो कोई मोसूं आन मिलावे[57]

☆☆☆

पीतम, सुनो हमारे दर्द की बात बिन देखे दरस की
'साह आलम' पीव को तुम्हारे मिलन तपत मुझे बरसं की[58]

☆☆☆

तड़फत है दिन रात अब, साथ गए ले चैन
नैनन नैनन पीयः सूं, कर गई, सख, ती बैन [59]

उपर्युक्त पद में नायिका के विरह की तड़प सूरदास की गोपियों के विरह की तड़प की याद दिला देती है जब वे कहती है:

निसिदिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहति पावस ऋतु हम पै, जब तें स्याम सिधारे।

स्वकीया का मान और उपालंभ एक साथ निम्नलिखित

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पद में चित्रित है :

सारी रैन तुम, और सूं हिल मिल के रहे लालन, मोरे भोर उठ आवत काहे?
जाओ जी जाओ, तुम्हारे अब कछु काम नहीं, जाओ जिन से रात हो उमाह[60]

निम्नलिखित पद में नायिका उलाहना दे रही है कि तुम्हें परकीया गमन पर लाज नहीं आयी :

बिसरी हमरी पीत सब, तुम्हें न आई लाज
ढोलन, तुम घर कौन के बिरम रहे हो आज?[61]

☆☆☆

पीतम के, सख, नैन लख कैसे भये हैं लाल
मो को देखत यों लगे, जागे निस सङ्ग् बाल [62]

नायिका के मान और रूठने संबंधी पद निम्नलिखित हैं

हों पी सूं रूसी रहूँ, ए अंखियाँ मिल जांई
इन बैरन सूं बस नहीं, दूर ही नैन लख धांई [63]

(तोड़ी, बंधा तिताला)

लाज आवत है मो को, माई, न जानूं पिया अब मोसूं कैसे कहेगो
आयो मनावन लालन री, अब देखिये कैसे के मान रहेगो[64]

☆☆☆

(तोड़ी, चलता तिताला)

जान लियो, पहचान लियो, जौन तिया संग जाग आये हो रतियां
बोलो नहीं हम सेती, पिया, जाओ वहीं जिन सेती करो तुम रस की बतियां[65]

☆☆☆

(सारंग बिन्द्राबनी, चलता तिताला)

सोई थीं रूठ के, चौक पड़ी, तब हाथ लला को गहें हों मुठी थी
क्यों न मिलें, सखि, आज पिया हमें, अपनो हाथ मैं देख उठी थीं [66]

हिन्दी काव्य में नायिका द्वारा सखी से बात कहने की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परंपरा रही है। इस बातचीत में नायिका अपने मन का दुख, विरह की तड़प, समाज की मर्यादा, प्रिय के दर्शन, प्रिय की बेवफाई, प्रिय का पर स्त्री गमन, विभिन्न परिस्थितियों में श्रृंगार भाव का उद्दीप्त हो उठना अनेक बातें सखी से कह कर मन हलका करती हैं : निम्नलिखित उदाहरण प्रस्तुत हैं :

(काफी, इकताला)

क्योंकर लीजे हाथ अब, कहा बनाऊं बात?
बड़ो सोच मो कों, सखी, दूत लगी पिय सात [67]

सखी समझाते हुए कहती है :

(काफी, इकताला)

सांई पर तू रख नज़र इतनो नांह संकोच
जात अंधेरो एक पल, करो न जी में सोच [68]

नायिका अपनी व्यथा प्रिय तक पहुँचाने को कहती है :

(काफी, इकताला)

मेरे मन की सब बिथा उन सूं कहो सुनाये
जाओ, सख, समुझाये के लावो पिया मनाये [69]

(देवनगरी, अड़ा, चौताला)

का से कहूँ जी की बिथा, कल न पड़त दिन रातरया
'साह–आलम' संग नेह लगे, तो को सुनावे उनकी बातरयां[70]

जैसा की पहले कहा जा चुका है कि शाह आलमे सानी ने रीतिकालीन परिपाटी के कवियों की भाँति नायिका भेद शीर्षक के अंतर्गत पदों की रचना की है। यहाँ यह कहना अभीष्ट है कि शाह आलमे सानी न तो राज्याश्रित कवि थे और न ही किसी की काम भावना को तुष्ट करने हेतु उन्हें कविता करने की आवश्यकता थी। एक बादशाह होने के बावजूद हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषा में श्रृंगार रस का आनन्द लेते हुये उन्होंने नायिका भेद, नख–शिख, श्रृंगार के संयोग और वियेग दोनों पक्ष, षट्ऋतु वर्णन, बादल, बिजली, वर्षा इत्यादि प्राकृतिक उपकरणों को समेटते हुए बड़े मन से कविता की है।

नख–शिख वर्णन का एक उदाहरण दृष्टव्य है :

(सरी, चौताला)

कंवल से पान, कलानिध सो मुख, कुन्द से दन्त, कुरंग से नैनाँ
गौरो सो गात, सुगन्ध लगात, उजारी लखात पे लाजत बैनाँ
सूछम सी कटि, बाल स्वाल से, चाल मुराल की, कोयल बैनाँ
ऐसी तिया बिन, प्यारा पिया, कैसे के पावे घड़ी पल चैनाँ 71

रूप सौंदर्य का निम्न चित्र कितना सुन्दर बन पड़ा है :

(किदारा, बंधा तिताला)

चंद मुखी सी नार को सब लख व्याकुल होत
वा की छब देखे, लला, होत नैन में जोत 72

निम्नलिखित दोहें में गोपीभाव का आभास होता है। गोरस (दूध) बेचने में मन ही बेच आई :

आई ती घर बेग हीं, संग लगाई लाल
गोरस बेचन को गई _____ मोल मन माल 73

श्रृंगार रस के अंतर्गत नायिका की शिकायत है कि मेरा प्रेम बिसरा दिया है या फिर उसकी आंखों का अंजन प्रेम की जोत बन चुका है अथवा किसी और को चाहने के कारण उसी के पास दौड़े जाने का उलाहना है :

(देवगरी, बँधा तिताला)

कौन ठगो री डार के लियो मेरो मन हात
बात बिसारी पेम की, लगे और के सात 74

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(देवगरी, अड़ा चौताला)

अंजन, सखि, अब यह भयो, होवत नैनां जोत
पी को देखूं नैन भर, रोम रोम सुख होत[75]

☆☆☆

(देवगरी, अड़ा चौताला)

मन मेरो तुम को चहे, तुम्हरो चाहत और
चो चाहो नहीं और को, क्यों जावत हो दौर? [76]

पूर्ण श्रृंगार रस का निम्नलिखित पद दृष्टव्य है :

रीझ रीझ, रिझाय रिझाय, काम के किलोल कर मन के मनोरथ करे सहस सहस
आंखो देखी, न कानों सुनी ऐसी जैसी तू तिया है, भचक रहत हूँ तो कों लहस लहस

(तोड़ी)

यह देखी तो में रीत नई, सखी, जाने न पूछे कछु पीतम के जब आवे मोसूं रहे बहस बहस
हंस हंस करत अछी बतियां, लग छतियां सूं अपने पिया को डर लावत रहस रहस [77]

श्रृंगार के अंतर्गत शोभा दर्शन का वर्णन निम्नलिखित है

अंगन में आय देखो सहज सुहाय, मो ही सोभा दरसाय, प्रेम रस पियाय दियो है
नैनन लगाय फेर मन को लुभाय, बैन मुख वनाय, मेरा चित चुराय लियो है
आनन्द समाय, वह कीनी चित चाय, मांगत हूँ से बुलाय और रिझाय कर हियो है
नीके सुर गाय, आछी तान परबीन कूं बजाय सुनाय कछु चेटक सो कियो है[78]

स्वकीया नायिका कह रही है :

(तोड़ी, चलता तिताला)

सात रहे तू रांत कूं, आप करे तू घात
मो सूं पूछे, ऐ सखी, पिया मिलन की बात [78]

वासना से युक्त श्रृंगार चित्र :

(तोड़ी, बँधा तिताला)

गई तिया की सुद्ध, सखी, रहो न काहू नङग्

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लगी नहीं निख रेख मुख, लगो काम को अङ्ग्[79]

शाह आलमे सानी ने नायिका भेद शीर्षक के अंतर्गत एक ओर अटूट श्रृंगार के चित्र प्रस्तुत किये हैं तो दूसरी ओर विरह का चित्रण भी है : दोनों से संबंधित पद प्रस्तुत हैं :

(सारंग बिन्द्राबनी, चलता तिताला)

हिल मिल के बलमां सूं अपने रंग रलियां करें और तन मन कूं सुख दीजे
देख गरीखम जी में आवत है री सखी, पी संग बैठ अमराई की छायें,रस लीजे[80]

(सारंग, बिन्द्राबनी, होरी)

न मन को ताव है बिन देखन, न ताकत है जो पाती लिखूं
लाचार भई हूं तेरी पीर सूं, लालन नैनन सूं राह तकूं [81]

विरह और प्रेम के चित्र में एक ओर नायिका अपनी सखी से कह रही है कि मन में विरह की अग्नि सुलग रही है, यह बातों से छुप नहीं सकती, इतनी उद्दाम पीड़ा है कि स्पष्ट देखी जा सकती है :

(बिन्द्राबनी, बंधा तिताला)

तन सूं होत कहा, सखी, लागी मन की आग
बातन सूं यह न छुपे, सुलग रही है आग [82]

प्रेम के जाल में फंसना भी अजीब है। प्रिय को चंपे की माला के समान हृदय से तो लगा लिया और अपने मन की की परन्तु विरह की पीड़ा की पीड़ा भी असह्य है।

(बिन्द्राबनी, बँधा तिताला)

जी चाहे सो कीजिये, फंसिये पेम के जाल
उर सूं लाल लगाइये चन्पे की सी माल [83]

संयोग श्रृंगार का अत्यंत सुखद व सुन्दर चित्रण कवि ने निम्नलिखित प्रकार से किया है :

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(सारंग, चौताला)

सुभ घड़ी, सुभ दिन, सुभ महूरत लालन मेरे गरह चरंन धरे री
मन मों आनन्द भयो, रोम रोम सीतल भये, जब तें डीठ पड़े री
बिरह बेदन अंग अंग ते दूर किये रहस रहस लागे मोगरे री
मेरो भाग सुहाग जागो सुनत ही सब दूतन के मान गुमान झरे री [84]

विरह की प्रगाढ़ता का चित्र इस प्रकार है :

(सारंग, ताला)

बिन पीतम बौरी भई, कछु न ती को भाय
गरिरवम अंबो बैठ के कोयल कूक मचाय [85]

इस प्रकार के वर्णन के अंतर्गत शाह आलमे सानी ने स्थान–स्थान पर गोपी भाव और गुसय्यां का चित्रण कर कान्हा की भूमि को भी जीवन्त किया है :

(घनासिरी, बँधा तिताला)

गुसय्यां के रंग देखो, कोऊ चाहे, ऐसे रंग रंग, कौन रंग सके
उन के रंग उन्हीं को रंगे बने, और कूं बन, आवे नांहीं, सभी देख यह ढंग छके[86]

इन पदों में कवि ने अपने उपनाम का प्रयोग कतिपय पदों में ही किया है :

(घनासिरी, बँधा तिताला)

हम से तुम से नेह लगयो, प्यारे बलमा हमारो
'शाहे–आलम' पी, तुम्हरे मिलन कूं सारी रैन जगी लो [87]

कवि शाह आलमे सानी ने अपने समय की बँधी हुई परिपाटी के अन्दर ही संयोग और वियोग श्रृंगार के कलापूर्ण चित्र खीचें हैं। इस क्षेत्र में उनकी काव्य प्रतिभा देखने को मिलती है। सहृदय पाठक को वे रस मग्न करने में समर्थ हैं :

(गौरी, बँधा तिताला)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साँझ पड़ी, पिया अजहूं न आये, न जानूं कौन तिया संग बिरमाये रहे
अब तो उन को मन और से अटको, माई, मो कूं जो चाहे सो कहे[87]

प्रकृति चित्रण के अंतर्गत उद्दीप्त विरह का चित्र है :

(गौरी, होरी)

आज बैठी कोयल मध माती अंबुआ की डार पर कूक मचावे
कूक सुने या बैरन की, सखी, पीर पिया मोहि आन सतावे
डीठ पड़े नहीं ऐसी कोऊ हितू जो मेरे पी को जाय सुनावे
भूल गई तन की सुध सब इस डीठ लंगर को पीत की रीत बतावे[88]

शृंगार चित्र निम्नलिखित है :

(हमीर, दुताला)

आज नहीं, अजहूं कह कारण सेज सुगन्ध सिंगार की त्यारी
जाके हुलास में भूल गये, सुध नाँह रही, किस की घर बारी
एक घड़ी नहीं छाँड़ सके, अब कैसी कहा वह लागत प्यारी
पीतम संग तो जाने, सखी, आज कौन सी आय लगी है नारी [89]

जिस प्रकार .ष्ण की गोपियाँ कृष्ण के प्रेम में और उनके विरह में इस कदर दीवानी हो जाती है कि लोक लाज की परवाह किये बग़ैर गृह त्याग देती हैं उसी प्रकार निम्नलिखित चित्रण में शाह आलमे सानी की नायिका की दशा भी कुछ वैसी ही है :

(हमीर, चौताला)

लाज छुटी, गरह काज छुटयो, और बात खुली सब हीं मुख आनी
हांस सहयो, उपहांस सहयो, घर बास न देत है नन्द जिठानी
लोक चवाई सूं नाम धराय, मैं अपनो मन दे पचतानी
नौज लगे तुम सूं अंखियाँ! पिया, लागे की सार नहीं तुम जानी[90]

शाह आलमे सानी ने अपने इन हिन्दी पदों में नायिका

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भेद के अंतर्गत सर्वाधिक पद रचे हैं जिनमें स्वकीया नायिका अपनी सखी से वार्तालाप करते हुए अपने मन की पीड़ा, प्रिय से विछड़ने पर विरहाग्नि का भड़कना, प्रतीक्षा करना, प्रिय का सौत के यहाँ जाना या पर स्त्री गमन, चाँदनी रातों के सौन्दर्य में स्वयं का सजधज कर बैठना और प्रिय के आने का इंतजार करना, प्र.ति की हरीतिमा, पावस ऋतु में मेह का बरसना और अंखियों का बरसना आदि बातों का वर्णन श्रृंगार के क्षेत्र में बड़े कौशल से किया है। इन पदों को पढ़ने के उपरांत यह कहना समीचीन होगा कि श्रृंगार रस रीतिकाल के कवियों का प्रिय विषय बन गया था, उस काल में एक बादशाह भी ऐसी ही साहित्यिक रचनाएँ कर रहा था परन्तु हिन्दी साहित्य के इतिहास की पुस्तकों में उसका उल्लेख तक नहीं मिलता। साहित्यिक .ष्टि से शाह आलमे सानी की हिन्दी साहित्य को यह अमूल्य देन है। निम्नलिखित पदों में चारों ओर छिटकी चाँदनी रात का सौंदर्य और ऐसी सुन्दर रात में अलंकारों से सुसज्जित नायिका उलाहने के साथ प्रतीक्षारत हैः

(किदारा, चौताला)

चन्दन की चौकी पर बैठी पहरे बसन भूषण चाँदनी की,
पिया उजियारी की सूरत देखे की लजात है
चंद मुखी फूली चांदनी चहूँ ओर, जरी को चँदवा बिछे चांदनी
तैसी झलकत जोत हीरे की नैनन सुहात है
काहे करत हो लोगन की लुगाई वा तिया सूं
दराइयां यह ऐसी कौन तिहारी बात है?
ऐसी चाँदनी में, प्यारे, चल बैठो संग अपनी प्यारी
के फेर पाछे पछते हो, यह नीकी रैन जात है।[91]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(किदारा, बँधा तिताला)

क्या नीकी फूल रही आज की चाँदनी
यह पूरन मास की।
पिया बिन नीकी लागत नाही, तू बैठ, माई,
तू ही बसी पिया के बास की [92]

शरद् पूर्णिमा की चाँदनी का एक दृश्य निम्न है :

(किदारा, अड़ा चौताला)

सरद की चाँदनी मोहि अत भावे, और सब गुनी आछे आछे राग गायें
सब नर नारी बने ठने पहरे अभूषन, बैठे 'शाह आलम' संग सुभाये[93]

पिया परदेसी हो गया है, नायिका सुबह–शाम उसकी राह तक रही है, उसी में नायिका के प्राण बसते हैं, काम भाव उद्दीप्त है उक्त प्रसंग का चित्र दृष्टव्य है :

(अड़ाना, चौताला)

भोर ते सांझ लो, सांझ ते भोर लो, मैं नित हीं नित राह निहारो
आयो नहीं अब लो परदेस तें, काहू पे रीझ रहो रिझवारो!
काम सतावत आठों जा मन को, ऊ है प्राणन को रखवारो
हों निकसी पियः देखन को, अब देख परो नहीं प्राण प्यारो[94]

निम्नलिखित पंक्तियाँ कबीर के दोहों का स्मरण कराती हैं

(सोरठ, चलता तिताला)

उन की सारी चूनरी लाल रंगाइ रंग
बिन लालन लाली कहाँ? लाली लालन संग[95]

नायिका सखी से कह रही है कि दामिनी अर्थात् बिजली की द्युति, कड़क और चमक से तन–मन में अकुलाहट उत्पन्न होती है, चारों तरफ बूंदें बाण के समान लगती हैं, चातक की धुन अच्छी नहीं लगती, मेढक और मोर का शोर भी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब सुनाई नहीं देता मानों यह काम की दुहाई दे रहे हैं, कहां यह बरखा की रुत और कहाँ पिया का भ्रमित करना। घनघोर काली घटा छायी है। तात्पर्य है कि ऐसे प्रा.तिक परिवेश में श्रृंगार भाव का अतिरेक है परन्तु नायिका को ऐसे में पिया मिलन की आस नहीं है–

(गौंड मलार, चौताला)

दामन की दुत, देत, सखी, तन का मन की उपजे अकुलाई
बाण सी बूंद लगें सगरी, और चातक की धुनि नांह सुहाई
दादर मोर को सोर नहीं अब, मानों फिरे यह काम दुहाई
पी बिरमाय कहां बरखा रुत, कारी घटा घनघोर की छाई [96]

(गौंड, बँधा तिताला)

बायु चली पुरवाई, सखी री, उमंड गुमंड के बादर गरजे
पियः बिना कछु जियः न परजे, चपला चमकत देखत लरजे[97]

और निम्न पंक्तियों में नायिका के सब्र का बांध टूट चुका है उसकी अंखियों से भी झर–झर बूंदें बरस रही हैं–

(गौंड, चलता तिताला)

या बदरी की बहार में, री सखी, पिया मिलन कूं जी तरसे
नेह हिये सरसे बिन देखे पी को नैनां बूंदन बरसे झर से [98]

कवि शाह आलमे सानी ने नायिका भेद के अंतर्गत पदों में संयोग और वियोग श्रृंगार से संबंधित सभी बाते कही हैं। एक विशेषता जो उभरकर सामने आती हैं वह है प्रा.तिक चित्रण। बर्षा ऋतु में सम्पूर्ण प्रकृति किस प्रकार हरी–भरी हो जाती है और बरखा और दामिनी की चमक का सौंदर्य चित्रण करना भी कवि नहीं भूला है :

(गौंड, अड़ा चौताला)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चहूं ओर ते आई उमंड कारी घटा, और भूमि भई हरी
पिया बिना कछु भावे नाहीं, सखि, देखत ही नैंनां लागी झरी [99]

(गौंड, चलता तिताला)

भूम हरी सब देख के, मोर करे है शोर
चहूं ओर घर घर घटा घूम रही घनघोर [100]

नायिका के मन की इच्छा है कि ऐसे सुन्दर सुखद प्राकृतिक परिवेश में प्रिय के संग रहना चाहिये–

(गौंड, बँधा तिताला)

चमक दामिनी देख के पियरो होवत रंग
रहिये ऐसे समें में हिल मिल पी के संग[101]

प्रकृति आलम्बन है, सब कुछ है, पर प्रिय के बिना मन्दिर सूना है–

(गौंड, बँधा तिताला)

सूनो मन्दिर पी बिना, बोलत है बन मोर
चमकत है अत दामनी, करे बादरा शोर [102]

निम्नलिखित पंक्तियों में विरह का प्रगाढ़ होना और काम भाव का उद्दाम होना चित्रित है–

(गौंड, तिताला)

कहा कहूँ तो से, सखी, तडफूं आठों जाम
ज्यों ज्यों चमके दामनी, त्यों त्यों झलके काम [103]

नायिका के नैन उतने ही बरस रहे हैं जितने कि बरखा का जल बरस रहा है। शृंगार भाव गहनतर हो रहा है–

(सोर मलार, चौताला)

छाय रही चहूँ ओर घटा, और देखो, सखी, क्या भूमि हरी है
मो को बता तू, मेरी हितू, पिया आवन की, कह कौन घरी है?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीर तिया पल चैन नदे अब, आंसुनि की अब लागी झरी है
को तरसे हु बूंदन को, इन नैनन में घनघोर परी है [104]

श्रृंगार रस के पदो के बीच कवि दार्शनिक भी हो उठता है और अपने साईं की भक्ति का बखान करता है—

(परज, बँधा तिताला)

दिनकर ससि को है कहां ऐसो जस जो लेत?
साईं की है जोत सब, जग उजियारो देत [105]

शाह आलमे सानी की उपर्युक्त हिन्दी कविता की भाषा का आकलन करें तो हम पाते हैं कि उनकी भाषा में कसावट, अभिव्यंजना कौशल, भावभिव्यक्ति में तीव्रता, भावानुसार अलंकार योजना आदि मुक्तक काव्य की विशेषताएँ विद्यमान हैं। श्रृंगार रस सिक्त सैंकड़ों मार्मिक चित्र हैं।

शाह आलमे सानी ने नादिराते शाही में तराने भी कहे हैं, इनकी संख्या सोलह है। इन तरानों में अधिकांश फारसी भाषा का प्रयोग है, जो अपनी भाव भंगिमा और विषय वस्तु के अनुसार ग़ज़ल जैसे प्रतीत होते हैं। कुछ तराने हिन्दी और कतिपय तराने फारसी, उर्दू और हिन्दी तीनों भाषा के मिले–जुले हैं। लेकिन इन सब की विशेषता यह है कि शास्त्रीय संगीत के अनुसार सुर ताल और राग को भी पदों से पहले टुकड़ों की शक्ल में बताया है। जैसे फारसी का यह तराना :

कासिद रसां ब पेशि सनम ई पयामि मा
बदनामि इश्क शुद ज़ि तो ई नेक नामि मा[106]

कासिद अर्थात् पत्रवाहक सनम के पास हमारा पैग़ाम लेकर गया, इश्क में बदनाम होना ही मेरे लिये नेकनामी है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस पद से पहले शाह आलमे सानी ने इसके टुकड़ों को इस प्रकार लिखा है–

तिलाना तोम तन तादीम तन तन[107]
नरे नरे तोम तन तन तारे तारे दानी

हिन्दी उर्दू की मिली जुली भाषा में जो पद हैं उसमें उन्होंने राग–रागिनी के नाम भी दिये हैं :

(सारंग, चलता तिताला)

है सब के पास तू और सब से है जुदा
जो कुछ कि कहये, सो है खां तेरी शान में[108]

कवि के उक्त पद में अद्वैत दर्शन के दर्शन होते हैं। तात्पर्य है कि ख़ुदा बन्दे के अन्दर ही मौजूद है, वो सब के पास भी है और सबसे दूर भी है। जैसे आग और उसकी चिन्गारी। आग के सारे तत्त्व उसमें मौजूद हैं लेकिन वह उससे छिटक कर उससे दूर हो गई है। भारतीय दर्शन के अनुसार कहें तो 'एकोऽहम् बहुस्याम्' अर्थात ब्रह्म की एक से अनेक होने की इच्छा हुई तो उसने सृष्टि रची। आत्म और परम् तत्त्व एक ही हैं। इंसान जो कुछ तेरी शान में कहे वो कम है। समस्त सात्त्विक गुण ख़ुदा के कारण हैं और तामसिक बन्दे की ज़ात से है। राग–रागिनियों के साथ ही कवि ने इसके तोड़े और नोटेशन भी लिखे हैं। जैसे–

तोम तन दिन ना तदानी दोस्त
यलम यलम यलम यल्ले रहना [109]

एक अन्य पद में कवि कह रहा है कि मैंने अपने हर गुनाह की परवरदिगार से माफी मांगी है। ऐ ख़ुदा तू मेरी यह दुआ कुबूल कर और मेरे गुनाह माफ कर–

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(भूपाली, बँधा तिताला)

हर इक गुनाह की है, परवरदिगार तौबः
कीजे कबूल मेरी, ऐ किर्दगार, तौबः [110]

इस पद में पहले राग–रागिनी के नाम भूपाली, बँधा तिताला इंगित है और टुकड़े इस प्रकार हैं :

तोम ताना दिर ना तरे दानी तादानी दिर ना दीम तारे दानी [111]

एक दूसरे पद से पहले राग–रागिनी का नाम, विहाग, बँधा तिताला दिया है और उसके टुकड़े इस प्रकार हैं :–

तोम तनुम तनुम तोम यलले यलला यलले तोम तनुम तनुम तन दिर ना दानी

पद इसं प्रकार है–

(विहाग, बँधा तिताला)

साथ अशकि दमादम के मिरे आहु फुगां है
जो काफिलः जाता है, सो बे गर्द नहीं है [112]

उक्त पद में कवि ने अपने हृदयस्थ दुःख की अभिव्यक्ति की है। वह कहता है कि मेरी आँखों से बराबर अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है, जिस प्रकार जब कोई काफिला जाता है तो धूल या गर्द का ग़ुबार उड़ता है उसी प्रकार मेरे हृदय में भी दुःखों का क़ाफिला है और आँसुओं का ग़ुबार उठता रहता है। जीवन की अतीव पीड़ा की अभिव्यक्ति है।

**निष्कर्ष** :– शाह आलमे सानी द्वारा रचित कवित, दोहे, मेंहदी, नायिका–भेद और तराने से संबंधित पदों का साहित्यिक अध्ययन करने के उपरांत हम पाते हैं कि साहित्यिक कसौटी पर उक्त पद निःसन्देह खरे उतरते हैं। जहाँ उन्होंने होली पर पद रचे हैं वहाँ होली का सम्पूर्ण वातावरण चित्रित है। गुलाल और बाँसुरी की चर्चा के साथ नायिका यह भी कहती है

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि मैं होली खेलना चाहती हूँ लेकिन लोक–लाज के कारण लज्जित हो जाती हूँ। इसलिये कि होली खेली जा रही है, उनके इस प्रकार के पदों से यह भली भाँति मालूम होता है कि किले के अन्दर होली बाकायदा खेली जाती थी और मन्दिर में धर्म–कर्म के अनुसार वह सब रस्में अदा होती थीं जो उसका तक़ाज़ा था। शाह आलमे सानी ने अपने पदों में हिन्दी कविता की वास्तविक आत्मा अर्थात् 'विरह' की चर्चा भी की है :

सांची कहो प्यारे, कहाँ से आये रैन के जागे
सारी रैन और सू रस पागे भोर आ मेरे उर लागे[113]

नायिका की भावनाएँ पिया के लिये पूरी तरह जलवागर है, वह कहती है कि पहले तो दिल लगाते हो फिर उचाट कर देते हो। उन्होंने नायिका भेद के अतिरिक्त जीवन दर्शन और नीति के पद भी रचे हैं। उनकी कविता की विशेषता यह है कि उन्होंने सम्पूर्ण जीवन दर्शन को कहीं केवल दो पंक्तियों में ही कह दिया है। जैसे–

समझ तो अपनी ख़ाक को जनम न खोई
भूलो मत उस राह को, बाकी ओही होई [114]

इस पूरे पद में जो दर्शनीय तथ्य हैं, वह यह है शरीर नाशवान है कहते हुए जीवन को बहुत बड़ी नेमत माना है, इसलिये जीवन की इन मंज़िलों और पड़ावों को न भूलने की सीख दी है।

वेदांत दर्शन के अलावा शाह आलमे सानी के पदों में उर्स का होना, मज़ारात पर कव्वाली, हार–फूल का चढ़ाया जाना और मेंहदी की रस्म का जगह–जगह उल्लेख मिलता है। ग़ौसुल आज़म की मेंहदी की चर्चा करते हुए मेंहदी में उन्हें

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीर दस्तगीर की तजल्ली नज़र आती है। नायिका–भेद में श्रृंगार रस की प्रधानता है। प्रिय के आगमन की आशा पर नायिका स्वयं को सज्जित करती है और उसके आने में देर होने से वह व्याकुल हो उठती है। इस व्याकुलता की पीड़ा का वर्णन कवि ने जिस प्रकार किया है उस से ऐसा प्रतीत होता है कि यह सारा .श्य हम अपनी आँखो से देख रहे हैं और यह सब मनोवैज्ञानिक है। उनके इन पदों में श्रृंगार, मान, उलाहना, दर्शन, नीति, सौंदर्य, प्र.ति, पूर्णमासी आदि की चर्चा है। भारतीय संस्.ति में पति या प्रीतम भगवान का रूप होता है। इस सम्पूर्ण दर्शन को शाह आलमे सानी ने अपनी दो पंक्तियों में जिस तरह बयान किया उसकी मिसाल उसके समय में देखने को कम मिलती है

पीतम को न छीन लें, मो को यही परेख
आगे पी, पाछे तिया, सखी, अलग हो देख [115]

शाह आलमे सानी स्वयं बादशाह थे, रीतिकालीन समय में कविता कर रहे थे। उस काल की कविता की समस्त विशेषताओं को समेटते हुए, श्रृंगार रस का आनन्द लेते हुए उन्होंने बड़े मन से श्रृंगारी पद रचे हैं और तराने भी कहे हैं।

कविता अन्य कवियों ने भी की परन्तु जो चीज शाह आलमे सानी को दूसरों से उच्चतर करती है वह उसकी भारतीयता है। उसके पदों की आलोचनापरक परख करते समय ये तथ्य ध्यान में रखना चाहिये कि वह स्वयं मुग़ल शहज़ादा है और मुगलों के समय में सरकारी भाषा फारसी थी। फारसी का इतना अधिक प्रभाव है कि हिन्दी के कवि भी देवनागरी में लिखने के बजाय फारसी लिपि में अपनी हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कविताओं को लिखा करते थे। इसके साथ ही साथ उसने भारतीय दर्शन, होली, दिवाली की रस्मों और शास्त्रीय संगीत को भी अपनी कविताओं का हिस्सा बनाया। उसने अपनी कविताओं से पहले सुर–ताल भी दिये हैं जैसे सारंग, चौतालाय सारंग, ताला और घनासिरी, बँधा तितालाय हमीर, चौतालाय अड़ाना, चौतालाय सोरठ, चलता तितालाय किदारा, अड़ा चौतालाय गौड़ा, बँधा तिताला आदि को अपने पदों के ऊपर इंगित किया है। इस प्रकार हिन्दी भाषा में रचित शाह आलमें सानी का यह मुक्तक काव्य हिन्दी साहित्य जगत में अपना उत्कृष्ट स्थान रखता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## सन्दर्भ

1. शब्द – शक्ति, रस एवं अलंकार – डा0 ताराचन्द्र शर्मा, पृ0 118, महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा, द्वितीय संस्करण 1980–81
2. रस अलंकार और छंद – प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, पृ0 181 पुस्तक मन्दिर, इलाहाबाद, 1965 ई0
3. नादिराते शाही – पृ0 143
4. वही – पृ0 148
5. वही – पृ0 149
6. वही – पृ0 151
7. नादिराते शाही – पृ0 173
8. वही – पृ0 176
9. वही – पृ0 177
10. वही – पृ0 174
11. वही– पृ0 174
12. नादिराते शाही – पृ0 172
13. वही– पृ0 172
14. वही– पृ0 175
15. नादिराते शाही – पृ0 177
16. वही– पृ0 198
17. वही– पृ0 196
18. वही – पृ0 232
19. वही– पृ0 233
20. नादिराते शाही – पृ0 184
21. वही– पृ0 190
22. वही– पृ0 191
23. वही – पृ0 192
24. मज़ारात–सूफी संतों की कबरें,
25. ख़ानकाही–सूफी संतों के आश्रमों से संबंधित
26. निज़ाम–व्यवस्था

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

27. बैत–धर्मगुरु के प्रति पूर्ण समर्पण

28. सीग़ा –निकाह

29. हज़रते कासम इमाम हुसैन के बड़े भाई इमाम हसन के पुत्र थे। आपकी किशोरावस्था थी। इमाम हुसैन ने भाई की वसीयत को पूरा किया और अपने भतीजे हज़रते कासम को मैदाने जंग में भेजने से पहले अपने हाथ से हज़रते क़ासम को अमामा (साफा या पगड़ी) बांधा। साफे के दोनों सिरे सीने पर लटकाये और उन के कुर्ते को बीच से फाड़ दिया ताकि कफन की शक्ल हो जाय। हज़रते कासम को विदा किया। यह रज्ज़ (रज्ज़ ऐसी कविता होती थी जो अरब लोग मैदान–ए–जंग में उतरने के बाद ज़ोर से पढ़ा करते थे। इस कविता में अपने पुरखों का नाम बताकर उनकी वीरता और उनके चरित्र का बखान किया जाता था) पढ़ा :

"अगर तुम मुझे नहीं जानते हो तो अब मालूम कर लो कि मैं हसन का फरजन्द (पुत्र) हूँ, और पैग़म्बर (रसूल अल्लाहसल्लाह हो अलैहे वस्सल्लम) की औलाद में हूँ। क्या ग़ज़ब है कि हुसैन तुम्हारे दरम्यान कैदी की भाँति है। ख़ुदा के अबरे बारां (वर्षा) इस जमात को सैराब (प्यास बुझाना) न करे।"

हज़रते कासम ने अपनी अवस्था के लिहाज़ से वीरता के साथ ख़ूं रेज़ जंग की। तबरी कहता है कि उमरो बिन साद बिन नफील अज़बी ने जब हज़रते कासम को देखा तो उसने कहा इस बच्चे पर हमला मैं करूँगा। कुछ लोगों ने रोका भी मगर वह न माना और कासम के पास आकर सर पर तलवार लगायी। कासम मुहँ के बल ज़मीन पर गिर गये और अपने चचा को मदद के लिये आवज़ दी। हुसैन भतीजे की सहायता के लिये पहुँचे और ग़ज़ब नाक शेर की तरह हमला किया। उमरो बिन साद बिन नफील जो कासम का कातिल था अभी पास मौज़ूद था। इमामे हुसैन ने उस पर तलवार लगायी। वह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसके हाथ पर पड़ी जो कोहनी से कटकर अलग हो गया फ़ौज़ के घोड़े चारों तरफ से उसे बचाने के लिये दौड़े। परन्तु वह अपने ही घोड़े की टापों के नीचे आ गया और हलाक (मरना) हो गया। इमामे हुसैन ने हज़रते कासम के सिरहाने खड़े होकर फरमाया :

"तेरे चचा पर बड़ा नागवार है ये अमर (क्षण) कि तू उसे पुकारे वह तेरी ख़वर न ले सके या तेरी आवाज़ पर आये मगर तुझे कोई फायदा न पहुँचा सके।"

उसके बाद आपने कासम की लाश को उठाया और जहाँ अली अकबर की लाश पहले से मौजूद थी, उसके पास लाकर लिटा दिया।

शहीदे इन्सानियत, संपादनः अदारा तहरीरी मरकज़ी सीज़दा सदसाला यादगार हुसैनी, लखनऊ, 1361 हिजरी सरफराज़ कौमी प्रेस लखनऊ, पृ0 443, 444

30. नादिराते शाही – पृ0 165

31. आपको कुतब–उल–अकताब, ग़ौस–उस–सकालैन, ग़ौस–अल–आज़म, हज़रत अल हसनी वल हुसैनी कुतब–ए–रब्बानी, ग़ौस–ए–समदानी, महबूब–ए–हक्कानी, सर चश्मा–ए–सुल्तानी, सुलतान सय्यद मुहय्यद्दीन अब्दुल कादर जीलानी कहा जाता है।

32. नादिराते शाही – पृ0 166

33. वही – पृ0 166

34. नादिराते शाही – पृ0 169

35. शाह आलमे सानी को गद्दी से उतार दिया गया था। दुबारा फिर तख़्त पर बैठाया गया। उसी की मुबारकबाद गुनीजन दे रहे हैं।

36. नादिराते शाही – पृ0 162

37. पीराने पीर दस्तगीर से अर्थ है सैय्यद मुहय्युद्दीन अब्दुल कादर जीलानी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

38. नादिराते शाही – पृ0 24
39. वही – पृ0 36
40. नादिराते शाही – पृ0 38
41. वही – पृ0 67
42. वही – पृ0 68
43. नादिराते शाही – पृ0 69
44. संकलन में प्रयुक्त शब्द, वर्तमान में हिन्दी में प्रचलित शब्द दोहा है।
45. दशरुपकम् – डा0 श्रीनिवास शास्त्रिणा, पृ0 136, साहित्य भण्डार, सुभाष बाज़ार, मेरठ
संवत् 1788 – 1869
46. कवित शाह आलम की कृति में प्रयुक्त शब्द
47. दोहरा शाह आलम की कृति में प्रयुक्त शब्द
48. नादिराते शाही – पृ0 178
49. वही – पृ0 195
50. वही – पृ0 194
51. वही – पृ0 191
52. नादिराते शाही – पृ0 176
53. वही – पृ0 178
54. वही – पृ0 180
55. वही – पृ0 183
56. वही – पृ0 187
57. वही – पृ0 188
58. नादिराते शाही – पृ0 188
59. वही – पृ0 189
60. वही – पृ0 193
61. वही – पृ0 197
62. वही – पृ0 196
63. नादिराते शाही – पृ0 196

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

64. वही – पृ0 206
65. वही – पृ0 208
66. वही – पृ0 222
67. वही – पृ0 200
68. नादिराते शाही – पृ0 201
69. वही – पृ0 201
70. वही – पृ0 201
71. नादिराते शाही – पृ0 239
72. वही – पृ0 256
73. वही – पृ0 202
74. वही – पृ0 203
74. नादिराते शाही – पृ0 203
75. वही – पृ0 203
76. वही – पृ0 205
77. वही – पृ0 207
78. वही – पृ0 215
79. नादिराते शाही – पृ0 216
80. वही – पृ0 220
81. वही – पृ0 221
82. वही – पृ0 225
83. नादिराते शाही – पृ0 225
84. वही – पृ0 226
85. वही – पृ0 228
86. नादिराते शाही – पृ0 235
87. वही – पृ0 238
88. वही – पृ0 242
89. वही – पृ0 242
90. नादिराते शाही – पृ0 242
91. नादिराते शाही – पृ0 243

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

92. नादिराते शाही – पृ0 257
93. नादिराते शाही – पृ0 258
94. नादिराते शाही – पृ0 261
95. नादिराते शाही – पृ0 269
96. नादिराते शाही – पृ0 276
97. नादिराते शाही – पृ0 278
97. नादिराते शाही – पृ0 279
98. वही – पृ0 281
99. वही – पृ0 283
100. वही – पृ0 288
101. वही – पृ0 289
102. नादिराते शाही – पृ0 290
103. वही – पृ0 292
104. वही – पृ0 294
105. वही – पृ0 272
106. नादिराते शाही – पृ0 300
107. वही – पृ0 300
108. वही – पृ0 302
109. नादिराते शाही – पृ0 305
110. वही – पृ0 305
111. वही – पृ0 305
112. नादिराते शाही – पृ0 306
113. नादिराते शाही – पृ0 173
114. वही – पृ0 196
115. नादिराते शाही – पृ0 183

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षष्ठ अध्याय

# उपसंहार

## ऐतिहासिक धरोहर

शाह आलमे सानी के पिता अज़ीज़उद्दीन आलमगीर सानी को बादशाह फर्रुख़सैर ने कैद कर लिया था।[1] इसी कैद की हालत में 14 जून 1728 ई0 को शाह आलम पैदा हुए थे।[2] शाह आलम 28 वर्ष का था तो उसके पिता के भाग्य के सितारों ने ज़ोर बांधा और अमादुल मुल्क के कारण आलमगीर सानी का लकब पाकर तख़्तनशीन हुआ। शाह आलम वली अहद बनाया गया और अमादुल मुल्क ने उसे झज्जर और हांसी परगने देकर देहली से रवाना कर दिया। अमादुल मुल्क स्वयं वज़ीर बन गया था और बादशाह और वली अहद को अपने इशारों पर चलाना चाहता था। मार्च 1757 ई0 (1170 हिजरी) को शाह आलम तालकटोरा पहुँच गया और आज़ादी की साँस ली। पिता के राज्य को अमादुल मुल्क के पंजे से छुड़ाने के लिये उसने भर्ती शुरु कर दी। अमालदुल मुल्क घबरा उठा और बादशाह से 'शिक्का' (राजा की ओर से लिखा हुआ पत्र जो आदेश की हैसियत रखता था) लिखवाकर वली अहद को दोबारा देहली बुलवा लिया। शाह आलम भी अवसर की नज़ाकत को समझ गया था इसलिये वह जमना के किनारे अली मर्दान ख़ाँ की हवेली में ठहर गया। वज़ीर अलामदुल मुल्क ने हल्फिया इकरार किया था कि वह वली

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अहद की स्वतन्त्रता में रुकाबट नहीं डालेगा परन्तु उसने 11 रमज़ान 1170 हिजरी (सन् 30 मई 1757 ई0) को एक दम ब्राह्म मुहूर्त में मोहासरा (चारों ओर से घेर लिया) कर लिया।

नजीबउद्दौला शाह आलम को सामने रखकर अमादुल मुल्क से अपना बदला लेना चाहता था। शाह आलम बड़ी कठिनाई से जमना पार करके हिसार पहुँचा। वहाँ से नजीबउद्दौला के आमन्त्रण पर 26 अगस्त 1757 ई0 को कंजपुरे के रास्ते मीरांपुर पहुँचा। नजीबउद्दौला ने पचास हज़ार रुपया माहवार उन्हें प्रदान करना शुरु किया। नजीबउद्दौला रुहेलों और जाटों की सहायता से अमादुल मुल्क पर आक्रमण करना चाहता था परन्तु जब जाटों और रुहेलों की ओर से सहायता नहीं मिली तो विवश होकर उसे पूरब की ओर जाने का परामर्श दिया।[3] शुजाउद्दौला के आमन्त्रण पर शाह आलम इलाहाबाद चले गये।

बंगाल में नवाब सिराजउद्दौला के स्थान पर अंग्रेजों ने मीर जाफर को नाज़िम बना दिया था। मीर जाफर से लोग परेशान थे और मोहम्मद कुली ख़ाँ जो इलाहाबाद का सूबेदार था और बंगाल पर आक्रमण करके कब्ज़ा करना चाहता था।

मोहम्मद कुली ख़ाँ ने लश्कर तैयार किया था और 7 मार्च 1759 ई0 को वली अहद शाह आलमे सानी के साथ कर्मनासा नदी को पार किया और विजय प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ रहा था, लेकिन जब उसे यह सूचना मिली कि अंग्रज़ों का लश्कर आ रहा है तो मोहासरा उठा लिया। कुली ख़ाँ इलाहाबाद चला गया। शाह आलम ने हिम्मत नहीं हारी। एक अक्टूबर 1759 ई0 को बिहार की ओर बढ़ा और 8

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिसम्बर 1759 ई0 को सोन नदी पार करके खटौली में डेरा डाला। 29 नवम्बर 1759 ई0 को अज़ीज़उद्दीन आलमगीर सानी की हत्या करवा दी। 24 दिसम्बर 1759 ई0 को वली अहद ने मौज़ा खटौली में अपनी बादशाहत का ऐलान कर दिया। नजीबउद्दौला और शुजाउद्दौला को अमीरुल उमरा और दूसरे को ख़िलत भेजा। मुनीरउद्दौला को अहमद शाह अबदाली के यहाँ अपना सफीर बना के भेजा दिया। मुनीरउद्दौला ने शाह आलम के पास से वापस आकर समाचार दिया कि आप की सल्तनत को बहाल कर दिया जायेगा। अतः अन्तिम शव्वाल सन् 1174 हिजरी (मई 1761 ई0) में पटना को अलविदा कहा। शुजाउद्दौला ने शाह आलम का स्वागत किया और उन्हें इलाहाबाद ले आये। शाह आलम शुजाउद्दौला के साथ लड़ाईयों में सम्मिलित रहा और बुन्देलखण्ड को मरहठों से साफ करा लिया।[4] इलाहाबाद में शाह आलम लगभग सात वर्ष रहे। यहाँ कुछ ऐसे अवसरवादी उन्हें मिले जिन्होंने उनको रास–रंग की ओर अभिप्रेरित कर दिया। वे आराम तलब और काहिल हो गये। यह वही शाह आलमे सानी हैं जो नजीबउद्दौला के साथ युद्धों में सम्मिलित रहा था। बादशाह के पास अड़तालीस लाख रुपये के वार्षिक आय के दो प्रांत इलाहाबाद और कोड़ाजहांन आबाद दिये गये। विलासिता ने उसे नाकारा कर दिया परन्तु साहित्य के क्षेत्र में वे निरन्तर सुजनशील रहे और उनके कवित्व का उत्कृष्ट प्रमाण 'नादिराते शाही' है। यह पुस्तक एक ऐसी ऐतिहासिक धरोहर है जिसमें मुख्य रूप से उनका हिन्दी भाषा का काव्य संकलित है। इसके अलावा इसमें उर्दू, फारसी और पंजाबी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काव्य भी सम्मिलित हैं। पंजाबी में कतिपय दोहे इस प्रकार हैं जिसमें पंजाब का एक जोश और प्रेम संबंधी वर्णन मिलता है :

हो यार, तैंड़ी याद दिल सूं मैंनू भुलाई नाहीं नाहीं
सूरत देखूं तेनूं तैंड़ी सिकांदी जिन्द मैनूं जावे नाहीं [5]

बड़ी आश्चर्यजनक बात है कि पंजाबी कविता में महबूब के लिये 'यार' शब्द प्रयुक्त है जिससे गुमान होता है कि फारसी और उर्दू के प्रभाव से 'यार' (पुल्लिंग) का प्रयोग किया है।

(तोड़ी, चलता तिताला)

रब्बा, तैंड़ी बन्दी हूँ आजिज़ ग़रीब हमारी, मुरादें भर दीजो मन की
तैनूं छांड़ के किस नूं धाऊं, मैड़े मौला लीजो ख़बर मेरे तन की[6]

उपर्युक्त पंक्तियों का विषय बिल्कुल भिन्न है। इसमें नारी की ओर से अपने पालनहार से बड़ी आजिज़ी के साथ मन की मुरादें पूरी करने की विनती है। वह कह रही है कि मैं तुझे छोड़कर और

किस के पास जांऊं।

(सारंग बिन्द्राबनी, बंधा तिताला)

ऐ अतहीं ख़ुमारी नैंन खुब गये तैंड़े मैंड़े दिल में
घायल कर कर मायल कीती खोल घमांड़ी मिल में[7]

xxx

(बिन्द्राबनी, चलता तिताला)

रब्बा मैं काहू सूं नडरूं, नडरूं, और डरूं तो तो ही से डरूं
तू ही करीम, रहीम, दाता मेरा, तेरा ही कहा अब सब मैं करूं [8]

उपर्युक्त पंजाबी भाषा की काव्य पंक्तियों में कवि ने विभिन्न विषयों को स्पर्श करते हुए अपने मन के भाव व्यक्त किये हैं। प्रेम और आसक्ति की बात भी है। रब से अपने लगाव

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की अभिव्यक्ति भी है। चूंकि कवि आस्थाशील प्र.ति का है इसलिये वह किसी से नहीं डरता है केवल अपने दाता जो करीम भी हैं, रहीम भी हैं उसी से डरता है और उसी की बात मानता है। सम्पूर्ण 'नादिराते शाही' में मात्र छः दोहे पंजाबी भाषा के हैं जिनमें कवि ने मुख्य रूप से भक्ति भाव की अभिव्यंजना की है। अंतिम पंजाबी काव्य पंक्तियाँ निंम्नलिखित हैं :

(जंगला, बँधा तिताला)

फिर फिर जांदा, फेरी पांदा, वेरवो मैड़ी जिन्दड़ी नूं तरसांदा[9]
छब छुप बिरवांदा, मैंड़ा मन लुभांदा, सई नेड़े नहीं आंदा

## हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि

साहित्य के माध्यम से किसी देश विशेष की जीवनी शक्ति का पता चलता है क्योंकि साहित्य वहाँ के रहने वालों की जीवनी शक्ति का प्रतीक होता है। उनके संस्कारों का परिणाम और उनके जीवन संर्घष की अनुभूति साहित्य में ही होती है। हिन्दी साहित्य का इतिहास ऐसा रहा है कि प्रत्येक ऐसे लेखक ने जो धर्म से हिन्दू नहीं था, परन्तु भारत का निवासी था, हिन्दी साहित्य के विकास में ऐसा योगदान दिया है जो अभूतपूर्व है। इस योगदान का परिणाम यह हुआ कि हिन्दी साहित्य को विविधता प्राप्त हुई और उसके द्वारा उसने नई शैलियों और नये विचारों को ग्रहण किया। नये विचारों के आने से जो चेतना उत्पन्न हुई, उसने हिन्दी के लेखकों को नये–नये विषय, नयी–नयी शैलियों और नयी शक्ति के साथ उनके प्रयोग के लिये प्रोत्साहित किया। शाह आलमे सानी जो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अरबी, फारसी, उर्दू, हिन्दी, तुर्की आदि अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। उन्होंने हिन्दी भाषा को अन्य भाषाओं के शब्द भण्डार से परिचित कराया। उनकी 'नादिराते शाही' एक अभूतपूर्व रचना है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में संभवतः यह नाम अनजाना है। जबकि यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य की एक अमूल्य निधि है। इसमें एक ओर ग़ज़ले रेख़ता हैं। जिनके माध्यम से हिन्दी साहित्य की ग़ज़ल विधा का आनन्द लिया जा सकता है। ग़ज़लों में शाह आलम ने आफताब तख़ल्लुस प्रयोग किया है। उस दौर की क्लासिकल ग़ज़ल का मज़मून उनकी ग़ज़लों में मिलता है। इसके अलावा बहुत सी रस्मों की चर्चा भी ग़ज़लों में मिलती है जो हमारे त्योहारों और अन्य अवसरों पर मनायी जाती है। ग़ौस–ए–पाक की मेंहदी की चर्चा पूरी श्रद्धा से की गई है। ख़ानकाहों में आज भी यह रस्म जारी है। सभी धर्मो के लोग इसमें शामिल होते हैं। सीठने अर्थात् विवाह के समय होने वाले समधी–समधन के बीच के हँसी मज़ाक भी शाह आलम ने पूरी साहित्यिकता से रचे हैं। इनमें भी विवाह के समय अदा होने वाली अनेक रस्मों की चर्चा है जैसे आपस में फूल मालाओं का पहनाया जाना, छुहारों का वितरण होना, मिठाई का एक दूसरे को खिलाना, पान का बीड़ा खिलाना, चौथी में फूलों से मारने का खेल, आदि भारतीय घरों की रस्में हैं।

## विषय वस्तु की प्रासंगिकता

भारत वर्ष त्योहारों का देश है। यहाँ अनेक त्योहार भारतवासी मिल जुल कर मनाते हैं। शाह आलम ने 'नादिराते शाही' में अनेक प्रकार के जश्न से संबंधित बहुसंख्य पदों की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रचना की है जो भाव और विषय वस्तु की .ष्टि से बहुत सुन्दर बन पड़े हैं। मुबारकवादों के अंतगर्त मुख्य रूप से नौरोज़ की विशेष मुबारकवादें हैं। इसके अतिरिक्त माहे ईद, रमज़ान, बकरीद, मेंहदी की रोशनी, स्तुति पीरां में ख़्वाजा पीर चिश्ती, ख़्वाजा कुतुब से मुरादें मांगना, रसूल से अरज, मेंहदी मंदिर आई, मन के मनोरथ, विनती सुनो, सीस पर सदा रहे, मंगलाचार गावो, सरसुति पूजन, गोधन पूजन, रतजगा, नौछावर पाना, हुलास विलास, अति आनन्द, पूरी सुहाली, पिया के मन्दिर दिवाली, खील बतासे आदि प्रयोग भारतीय परिवेश से पूर्णतः संबंधित हैं। आज भी इन सब का महत्त्व कम नहीं हुआ है अतः प्रासंगिकता स्वतः सिद्ध है।

## सांस्कृतिक महत्त्व

'नादिराते शाही' का सांस्कृतिक महत्त्व निश्चय ही अक्षुण्य है। सम्पूर्ण काव्य संकलन सांस्कतिक विरासत की एक मिसाल है। आरंभ से अंत तक कवि शाह आलम द्वारा रचित पदों में मिली जुली संस्कृति के दर्शन होते हैं। चाहे आस्था का क्षेत्र हो, परिवार में मनाया जाने वाला उत्सव या समारोह हो। त्योहार हों या जश्न हो सभी का चित्रण शाह आलम ने अपने हिन्दी काव्य में पूर्ण मनोयोग से किया है जिसकी विस्तृत चर्चा हमने अध्यायों में की है। होली वर्णन और नायिका भेद के अंतर्गत ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने अपनी संपूर्ण कवित्व शक्ति लगा दी है। इन पदों का विशेष साहित्यिक महत्त्व है। होली और फाग के समय का सम्पूर्ण वातावरण उनके काव्य द्वारा व्यंजित हुआ है। वसंत, कन्हैया का बसुरी बजाना,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नायिकाओं का चटकीले–भड़कीले वस्त्रों और आभूषणों से सज्जित होना इत्यादि होली के हास–उल्लास को पूर्णतः प्रकट करता है।

नायिका भेद के अन्तर्गत श्रृंगार, रस के दोनों पक्ष संयोग और वियोग के चित्र हैं। विरह वर्णन का आधिक्य है। नायिका का श्रृंगार नायक का पर स्त्री गमन, उलाहना, प्रताड़ना, मान, सौतिया डाह, गोपी भाव, भारतीय मर्यादा, वर्षा ऋतु व चांदनी रात में कामोद्दीपन के प्रचुर चित्र हैं। इसके अतिरिक्त नीति, दर्शन और तसव्वुफ के दोहे भी हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## सन्दर्भ

1. वाक्याते अज़फरी, पृ0 8 पूर्ण विवरण पिछले पन्नों में दिया जा चुका है।

2. मेरातुल अशबाह, पृ0 53 पूर्ण विवरण पिछले पन्नों में दिया जा चुका है।

3. सैरुल मोताआख़ेरीन, पृ0 2, 60

4. सैर–उल–मुताख़ेरीन – पृ0 2, 70
   तारीख़–ए–हिन्दुस्तान – पृ0 9, 313

5. नादिराते शाही – पृ0 192

6. वही – पृ0 206

7. नादिराते शाही – पृ0 223

8. वही – पृ0 224

9. वही – पृ0 297

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## संदर्भ, ग्रन्थ

हिन्दी :

1. नादिराते शाही : शाह आलमे सानी,
संपादित इम्तियाज़ अली खाँ अर्शी,
हिन्दुस्तान प्रेस,
रामपुर, 1944 ई0

2. नादिराते शाही : अबुल मुज़फर जलालउद्दीन
मुहम्मद शाहे आलम सानी बादशाह
हिन्दुस्तान,
रामपुर रज़ा लाइब्रेरी,
किला रामपुर यू0 पी0– 2006

3.दशरूपकम : डा0 श्रीनिवास शास्त्रिणा,
साहित्य भण्डार,
सुभाष बाज़ार, मेरठ

4. मानक हिन्दी कोशः पांचवां खण्ड,
सम्पादक – रामचन्द्र वर्मा

5. रस, अलंकार और छंद : प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा,
पुस्तक मन्दिर, इलाहाबाद – 1965

6. रामकथा और मुस्लिम साहित्यकार : बद्रीनारायण तिवारी,
मानस संगम, कानपुर – 208001

7. शब्द–शक्ति, रस, अलंकार : डा0 ताराचन्द्र शर्मा
महालक्ष्मी प्रकाशन,
आगरा, द्वितीय संस्करण 1980–81

8. हिन्दी ग़ज़ल की नई दिशाएँ : संपादक, सरदार मुजार,
राधाकृष्ण प्रकाशन,
2/38 अंसारी मार्ग,
दरियागंज, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri


9. हिन्दी साहित्य और उसकी प्रमुख प्रवृत्तियाँः डा0 गोविन्दराम शर्मा, रीगल बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली–6

10. हमारी सांस्कृतिक एकता : रामधारी सिंह दिनकर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23 दरियागंज, नई दिल्ली –110002

उर्दू :

11. अजायब– उल–कसस : शाह आलमे सानी आफताब, मोरत्तेबा : राहत अफजा बुखारी, मजलिस तरक्की अदब, लाहौर, 1965 ई0

12. अहसनुततवारीख़ः राम सहाय तमन्ना, मतबा तमन्नाई, लखनऊ 1976 ई0

13. आब–ए–हयातः मोहम्मद हुसैन आज़ाद, दूसरा संस्करण, लाहौर

14. कौमी तहज़ीब का मसला : सैय्यद आबिद हुसैन, तरक्की उर्दू ब्यूरो, नई दिल्ली 1980 ई0

15. किताब, कालेज फोर्ट विलियमः कलीम उद्दीन अहमद

16. गिल क्रस्ट और उसका अहद : मु0 अतीक सिद्धीकी, देहली

17. गुलशने नौ बहार महजूर मोहम्मद बख़्श, लखनऊ, 1263 हिजरी

18. गुले राना : सैय्यद अब्दुल हई, आज़मगढ़, 1370 हिजरी

19. गुलशन–ए–हमेशाः बंहार नसरुहल्लाह ख़ाँ रववेशगी, अंजुमन–ए–तरक्की–ए–उर्दू,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

| | |
|---|---|
| | कराची 1967 ई0 |
| 20. गुलशन–ए–सुख़न : (हिन्दी) | मुरत्तेबा : मसूद हसन रिज़वी अदीब, अंजुमन तरक्की उर्दू अलीगढ़ 1962 |
| 21. तबकात–उशशोअरा –ए–हिन्दी : | करीमउद्दीन, उ0 प्र0 उर्दू एकेडेमी, लखनऊ |
| 22. तज़करा–ए–हिन्दी : गोयान | ग़ुलाम हमदानी मुसहफी, उ0 प्र0 उर्दू अकादमी, लखनऊ 1985 ई0 |
| 23. तज़करा आज़ुरदा : | आज़ुरदा मुती सदरउद्दीन, संपादित : डा0 मुख़तार उद्दीन अहमद, देहली 1971 ई0 |
| 24. तज़करा–ए–मारकए : सुख़न | लखनऊ 1934 ई0 |
| 25. तज़करा इब्ने तूफान: | इब्ने तूफान, संपादित : काज़ी अब्दुल वुदूद, पटना |
| 26. तज़करा–ए–गुलशने : हिन्द | हैदर बख़्श हैदरी, संपादित : मुख़तारउद्दीन अहमद, दल्मी मजलिस, दिल्ली 1967 ई0 |
| 27. तबकात–उश–शोअरा: | कुदरत अल्लाह शौक, संपादित : निसार अहंमद, फारूकी, कराची |
| 28. तज़करा–ए–मुसर्रत : | अबुल हसन अमीरउद्दीन अहमद अफज़ा उर्फ अमरउल्लाह इलाहाबादी |
| 29. तारीख़ इबरत अफज़ा : | मुरत्तेबा : मिर्ज़ा अली महजूं |

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुरादाबादी हस्बे फरमाइश जनाव नवाब मोहम्मद सफी उल्लाह ख़ाँ साहब, रईस–ए–मुरादाबाद, बिरलास प्रेस मुरादाबाद में तबाअ हुई

30. तारीख़–ए–हिन्दुस्तान Vol, 9 : मुंशी ज़काउल्लाह ख़ाँ, शम्सुल मुताबे देहली 1898 ई0

31. तज़्करा अश्की : वजीउद्दीन अश्की (दो तज़करे) सम्पादित : कलीमउद्दीन, पटना

32. डा0 मिर्ज़ा मोहम्मद : रफी सौदा : ख़लीक अन्जुम, अलीगढ़ 1966 ई0

33. दीवान–ए–जहाँ : बीनी नरायन जहाँ संपादित कलीभउद्दीन अहमद, पटना

34. दबिस्ताने गोलकुण्डा: डा0 मोहम्मद अली असद बहवाला तज़करा–ए–शोअरा–ए रेख़ती, इरफान अब्बासी

35. नुस्ख़ा–ए–दिलकुशा, प्रथम खण्ड : अरमान राजा जनमेजय मित्र, कलकत्ता 1979 ई0

36. मजलिस–ए–रंगीन : सआदत यार ख़ाँ रंगीन, निज़ामी प्रेस, लखनऊ 1929 ई.

37. मुरक्का देहली : दरगाह कुली ख़ाँ ताज प्रेस, हैदराबाद

38. मजमुआ–ए–नग़ज़–यानि : तज़करा ए शोअरा ए हकीम अबुल कासम मीर कुदरत उल्लाह, तख़ल्लुस

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उर्दू : कासम, मुरत्तेबाः महमूद शीरानी, नेशनल एकेडेमी, 9 अंसारी मार्किट, देहली 1933 ई0

39. मिरातुल अशबा :

40. मुसर्रत अफज़ा : अबुल हसन अमीरउद्दीन उर्फ अमरउल्लाह इलाहबादी, संपादित : काज़ी अब्दुल वुदूद, पटना

41. वाक्याते अज़फरी : बशीरउद्दीन अहमद,

42. वाक्याते दारुल हुकूमत देहली : शम्सी हुसैन प्रेस, आगरा 1919 ई0

43. वाकया–ए–आलम शाहीः प्रेम किशवर फिराकी कुंवर हिन्दुस्तान प्रेस, रामपुर 1949 ई

44. शाह आलमे सानी का मुताआला : मुर्तज़ा करीम, देहली

45. शाह आलमे सानी 'आफताब' एहवाल ओ अदबी ख़िदमात : डा0 ख़ावर जीमल, एजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, 3108गली अज़ीज़उद्दीन वकील कूचा पंडित, लाल कुंआ, देहली – 6, 1999 ई0

46. शहीदे इंसानियत : संपादन : अदारा तहरीरी मरकज़ी सीज़दा सदसाला यादगार हुसैनी, लखनऊ, 1361 हिजरी, सरफराज़ कौमी प्रेस, लखनऊ

47. सल्तनते मुगलिया का मरकज़ी निज़ामे हुकुमतः इब्ने हसन, अनुवादक आए0 ए0 भट्टी, कौमी काउंसिल बराये फरोग़े उर्दू, नई दिल्ली, संस्करण 1999 ई0

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

48. सैरुलमुताख़ेरीन, Vol. 3: ग़ुलाम हुसैन तबा, तबायी, नवल किशोर प्रेस, 1897 ई0

49. हिन्दू त्योहारों की दिलचस्प असलियत: मुंशी रामप्रसाद माथुर, ख़ुदा बख़्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी 1991 ई0

50. हिन्दुस्तान के मुसलमान हुक्मरानों के तमद्दुनी जलवे : सबाहउद्दीन अब्दुर्रहमान, आज़मगढ़ 1963 ई0

पाण्डुलिपियाँ :

51. अयार–उश–शेअरा (उर्दू): ख़ूब चन्द ज़का, इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी लंदन, नकल लाडब्रेरी मुशविक ख़्वाजा, कराची

52. अजायब–उल–कसस (दो जिल्दें) (दास्तान, उर्दू): पंजाब यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, लाहौर

53. दीवान ए बाबर (तुर्की) (फारसी लिपि): रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर

54. दीवान–ए–उर्दू (बहवाला स्प्रिंगर) (उर्दू): शाह आलमे सानी 'आफताब'

55. मसनवी मन्ज़ूम–ए–अकदस (उर्दू) : बहवाला गार्सां द तासी 1786–87 ई0

56. सहाफे इब्राहीम (उर्दू): ख़लील अली इब्राहीम ख़ाँ, कौमी कुतुबख़ाना, बर्लिन, फोटोस्टेट, व्यक्तिगत पुस्तकालय डा0 जमील जालिबी, कराची

57. दीवान–ए–फारसी (फ़ारसी) : शाह आलमे सानी आफताब इण्यिा ऑफिस लाइब्रेरी, लंदन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

58. दीवान–ए–फारसी (फारसी) : शाह आलमे सानी आफताब बिहार रिसर्च सोसायटी, पटना
59. दीवान–ए–फारसी (फारसी) : शाह आलमे सानी आफताब ब्रिटिश म्यूज़ियम, लन्दन
60. दीवान–ए–फारसी (फारसी) : शाह आलमे सानी आफताब, म्यूनिख़ लाइब्रेरी, जर्मनी

फारसी पुस्तक :

61. शाह आलम नामा : ग़ुलाम अली ख़ाँ, रामपुर रज़ा लाइब्रेरी

अंग्रेज़ी :

62. A Descriptive Catalogue: of the Oriental Library of the Late Tipu Sultan of Mysore — Charles Stewart, Cambridge 1809
63- A Catalogue of the Arabic, Persian and Hindustani Manuscripts of the libraries of the King of Oudh, Vol. I : A Sprenger, Calcutta 1854
64- An Oriental Biographical Dictionary : Thomas William Bell edited : George Keene Calcutta 1881
65- Afghanistan (Second Edition) : W. R. Fraser, O. U. Press, London
66- An advanced History of: India (Second Edition) — R. C. Majumdar & others, London 1958
67- A History of India : Michael Edwards, James and Hudson, London 1961

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri


| | |
|---|---|
| 68- Catalogue of the Hindi,: Punjabi and Hindustani Mss in the Library of the British Museum | James Fuller Blumhardt, London 1899 |
| 69- Catalogue of the Hindustani Books in the Library of the British Museum | J. F. Blumhardt, London 1909 |
| 70- Catalogue of the Arabic,: Persian, Hindustani and Turkish Mss in the Library of the Royal Asiatic Society (the Journal of the Royal Asiatic Society) | O Cordrington, London 1892 |
| 71- Catalogue of Urdu Books In the India Office Library (1800-1920) (Supplementary of J. F. Blumhardt's Catalogue of 1900) | Salim Ali Din Quraishi |
| 72- Delhi During Anarchy 17 49-1788 as told in Contemporary Records | J. N. Sarkar, Govt. Ptg. Press Calcutta 1921 |
| 73- Fall of the Mughal Empire Vol. II | J. N. Sarkar, M. C. Sarkar & sons Calcutta 1934 |
| 74- Histoire de la Litterature Hindoue et la Hindustanic, Tome I | Garciu de Tassy, Paris 1839 |
| 75- Histery of the Muslim | Shaikh Abdul Rashid, |

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

| | |
|---|---|
| of India, Pakistan Sub Continent Vol. I | Research Society of Pakistan, Lahore 1978 |
| 76- History of the Reign of Shah Alam | W. Franklin |
| 77- Later Mughals | William Irwin, S. C. Mazumdar, Calcutta |
| 78- Sociology | Lundberg, 1968 |
| 79- Twilight of Moghals | P. Spear, S. C. Mazumdar, Calcutta |

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# परिशिष्ट

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

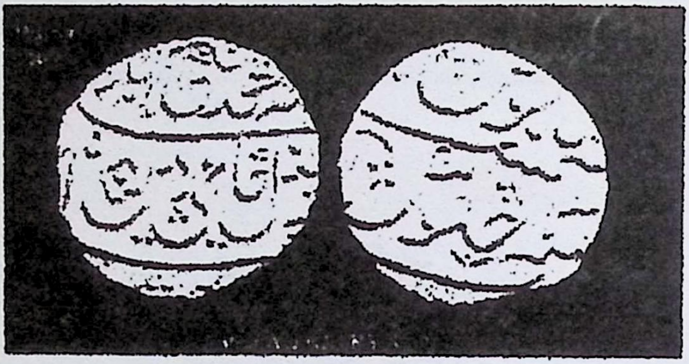

शाह आलम का सिक्का जिस पर लिखा है–

'हामिये दीन–ए–मोहम्मद', साया–ए–फज़ले एलाह

सिक्का ज़द बर हफ्त, किश्वरे शाह आलम बादशाह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(۱)

شاہ عالم ثانی آفتاب کی وہ فارسی "غزل" جو نابینا کیئے جانے کے بعد کہی گئی :

صر صر حادثہ برخاست پئے خواری ما    داد بر داد سرو برگ جہاں داری ما
آفتاب فلک رفعت شاہی بودیم    برد درشام زوال آہ سیہ کاری ما
چشم ماکندہ شد از دست فلک بہتر شد    تانہ بینم کہ کند غیر* جہاں داری ما
داد افغاں بچہ شوکت شاہی برباد    کیست جز ذات مبرا کہ کند یاری ما
بود جاں کاہ زر و مال جہاں ہمچوں مرض    دفع از فضل الٰہی شدہ بیماری ما
کردہ بودیم گنا ہے کہ سزایش دیدیم    ہست مصروف کہ بخشند گنہگاری ما
کردہ سی سال نظارت کہ مرا داد بباد    زود تر یافتہ پاداش ستمگاری ما
عہد و پیماں بہ میاں داد و نمودند دغا    مخلصاں خوب نمودند وفاداری ما
شیر دادم افعی بچہ را پرور دم    عاقبت گشت مجوز بہ گرفتاری ما
حق طفلاں کہ بہ سی سال فراہم کردیم    کردہ تاراج و نمودند سبک یاری ما
قوم مغلیہ وافغاں ہمہ بازی دادند    بسکہ گشتند مجوز بہ گرفتاری ما
ایں گدا زادہ ہمداں کہ بہ دوزخ برود    بانی جورو ستم شد بہ دل افگاری ما
گل محمد کہ زمرداں بہ شرارت کم نیست    چہ قدر کرد وکالت پئے آزاری ما
نامراد و سلیمان و بدل بیگ لعیں    ہرسہ بستند کمر بہر گرفتاری ما
شاہ تیمور کہ دارد سر نسبت بامن    زود باشد کہ بیاید بہ مدد گاری ما
مادھوجی سیندھیا فرزند جگر بندمن ست    ہست مصروف تلافی ستمگاری ما
آصف الدولہ و انگریز کہ دستور من اند    چہ عجب گر بنمانید مدد گاری ما
راجہ و راؤ' زمیندار' امیروچہ فقیر    حیف باشد کہ نا سازند بہ غمخواری ما
نازنینان پری چہرہ کہ ہمدم بودند    نیست جز محل مبارک بہ پرستاری ما
گرچہ ما از فلک امروز حوادث دیدیم    باز فردا دہد ایزد سر سرداری ما

शाह आलमे सानी आफ़ताब की फारसी ग़ज़ल

जो अंधा किये जाने के बाद कही गयी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

اس غزل کا اردو ترجمہ، جو میرزا علی لطف نے ۱۲۱۵ھ/۱۸۰۱ء میں اپنا تذکرہ "گلشن ہند" (۱) لکھتے ہوئے کہا :

حادثے کی اٹھی آندھی جو مری خواری کو — دم میں برباد کیا میری جہاں داری کو
بس کہ خورشید کو لازم ہے طلوع اور غروب — شام یوں پھولی غرض میری سیہ کاری کو
آنکھیں نکلیں، تو ہوا خوب کہ دیکھوں گانہ میں — غیر کے قبضے میں اورنگ جہانداری کو
مملکت کا بھی خیال ایک مرض تھا جاں کاہ — گردش چرخ نے کھویا مری بیماری کو
کی اس افغاں بچے نے شوکت شاہی برباد — کون پہنچے گا خدا چھٹ مری اب یاری کو
جو کیے تھے گنہ ان سب کی سزا دیکھی یہیں — شاید اب پوچھیں نہ وہاں میری گنہگاری کو
جو تھا بتیس برس سے مرے گھر کا ناظر — پہلے حکم اس نے دیا میری دل آزاری کو
بے گناہی نے مری اس ستم ایجاد کے تئیں — جلد پہنچایا مکافات ستمگاری کو
حق طفلاں جو ہوا تیس برس میں تھا جمع — مار کر لے گئے یاں چھوڑ سبک باری کو
قوم افغاں و مغل سب نے مجھے بازی دی — رکھا ہر اک نے روا میری گرفتاری کو
عہد و پیمان کئے اس میں، بھلا حق نمک — ان سے سیکھے کوئی آئین وفاداری کو
تھا جس افغان بچے کو دود پلا کر پالا — بدلے اس حق کے وہ آیا میری خونخواری کو
نازنیں میری ہمدم جو تھیں یاں ایک نہیں — جز مبارک محل اس میری پرستاری کو
آصف الدولہ اور انگریز ہیں میرے دل سوز — کیا عجب آویں اگر میری مددگاری کو
مادھو جی سیدھیا فرزند جگر بند کے ہاتھ — ہو گی بے رونقی اس طرز جفا کاری کو
کوئی پہنچا دو خبر حال کی میرے کہ نظام — شاید آ نکلے محبت سے خبرداری کو
شاہ تیمور سے ہے اک سر نسبت مجھ کو — دور کیا ہے جو کرے دور دل آزاری کو
راجہ و راو زمیندار، امیر اور فقیر — چاہیے سمجھے سعادت میری غمخواری کو
آفتاب آج فلک نے کیا گر بے سروپا — بخشے گا کل تجھے حق پھر تری سرداری کو

फारसी ग़ज़ल का उर्दू कविता में अनुवाद जो मिर्ज़ा अली लुत्फ ने 'गुलशने हिन्द' में किया, संपादन मौलवी अब्दुल हक पृष्ठ 7, 8, 9, लाहौर 1906 ई0।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

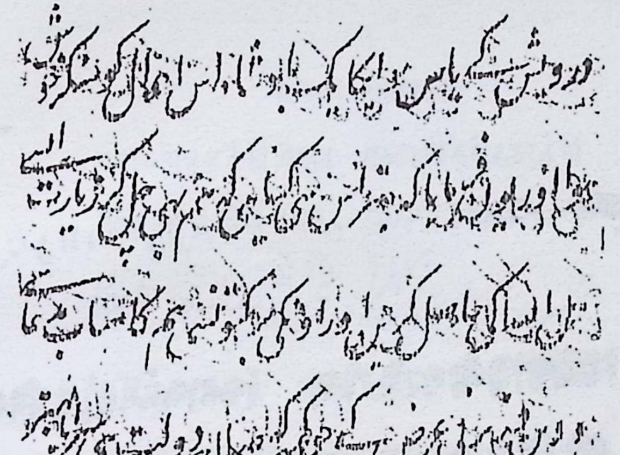

शाह आलमे सानी की हस्त लिखित दास्तान 'अजायबुल कसस' की छाया प्रति। पृष्ठ 46

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

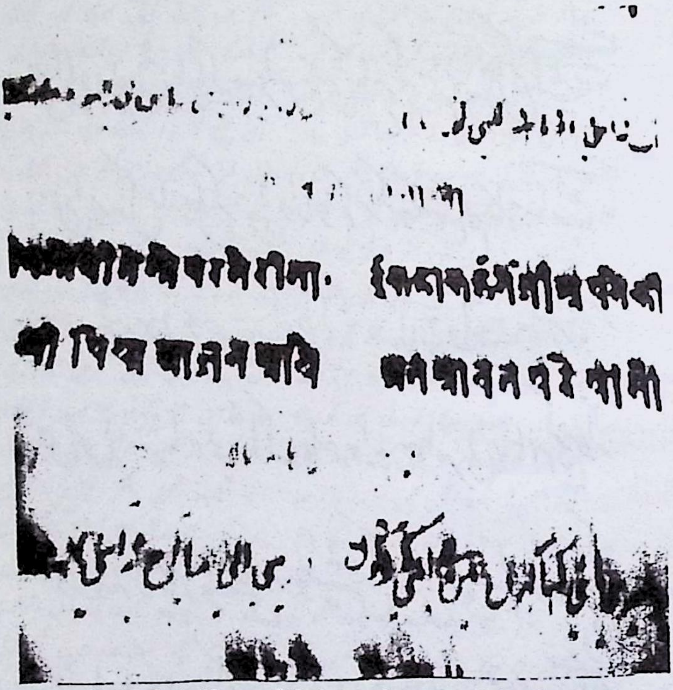

'नादिराते शाही' की मौलिक पाण्डुलिपी की छाया प्रति लाल व काली रोशनाई का प्रयोग।
पृष्ठ 56

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कान्हरा त्रयतिताला

आज कियो हल जै सो पियात मकालकरोगे तो हूसरहूंगी

मैं जु कहत हूं जी सें सुनो न। हीअपनी धायहूंजायकहूंगी

کاہنرا تلہ تال

آج کیو جسو بیان کال کروگی تو روس رہو گی بین حرکت ہو رہی جیسی سنو نہیں اپنی دہائی جائی گی

कामोद तालहोरी

जेबतमेरेजीयको पलपलमेंसुखचैन. दिपायमलोभीआओदेदेकनएनैन

کامود تال ہوری

بلوت میری جیہ کو بل بل میں سکہ چین دکہای تہو پی ایہی دیری دی کوں این

राग ताला

पीतमकेसंगहातसेबिवकलागीभाल. जापमहोसंकआपदेभसीघहोर

تال راگ

उर्दू में दूसरे पद में बल–बल शब्द है जबकि देवनागरी में पल–पल शब्द है।

विवरण पृ0 57

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीऊसंगलिपटीरहेकरतउनींदेंभेस   भोरउटीअलसानीमुषपरडोरेकेस

کامود  تال ہوری

پی کی سنگ لپٹی رہی کرت انیدی بیس   بہور اوٹھی الساتی مکہ پر ڈاری کیس

कामोदनंधा तिताला

ईधरबरषाकीझरीऊधरबरसैंनैन   भलासषीतुआपकहकिसकेपीविनचैन

کامود  ندا نہ تالا

ایدھر برکہا کی جھڑی اودہر برسین نین   بہلا سکہی تو اپ کہہ کیکی پی بن چین

॥ कान्हराबं धातिताला

लालकीआंषन सूंडरकी अंषिs   याअबकोनउतेसुरफाई

देषे बिना सुर फुत नांही माई   पियाबिनामनमोमुरफाई

کانہرا  تتالا

ख के स्थान पर ष का प्रयोग पृ0 57

सांवरे सलौने सांई मेरो मन,   लागो जब तो हूं रसिया
परी परी पल पल छिन दिः   नमन में राहत बसिया

[illegible]

रोनो मिलफिर जातो हैं मधिर्य नीरभरए   भले मिले तो पियसषी तन मन नैनसम

[illegible]

मोसिंव पूछे ती कछु कटी है जैसी रात   अपने मन संहज्ञानि वो मेरे यनकौपुत्र

[illegible]

जात कही चतुराई नहीं कछु,   पीत मनैन बन आंष लड़ाई ॥
लीनै किनै मन पी न मनै,   सषी हौं अपनो मन दै पर आई

[illegible]

ख्याल गवि आपत मोकौ कैरै बसनाम   मैं नसनू तेरो सषी नहूही विगारै काम

[illegible]

रजैन सुमरन हात से रहै न राना हात   नी मालगै तेरी जपै को कहै मनकी बात

---

देवनागरी लिपि में चार पंक्तियों में काव्य है परन्तु उर्दू में दो पंक्तियों में है। कलम कहीं मोटा कहीं पतला है। पृ० 60



CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

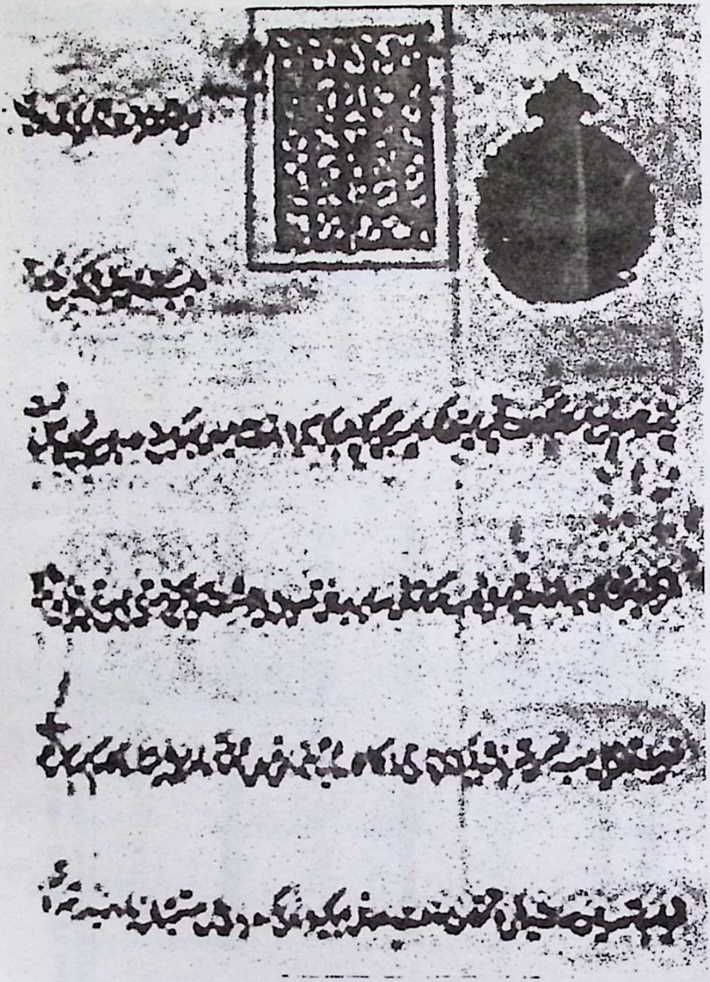

शाह आलमे सानी का एक फरमान

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# NADIIRAT-I-SHAHI MANUSCRIPT
## Sanskritik aur Sahityik Adhyan

**Dr. Kishwar Sultana**
Ex- Associate Professor, Hindi Department
Govt. Girls P.G. College, Rampur

Introduction
**Prof. S.M. Azizuddin Husain**
Director
**RAMPUR RAZA LIBRARY**
Ministry of Culture, Govt. of India

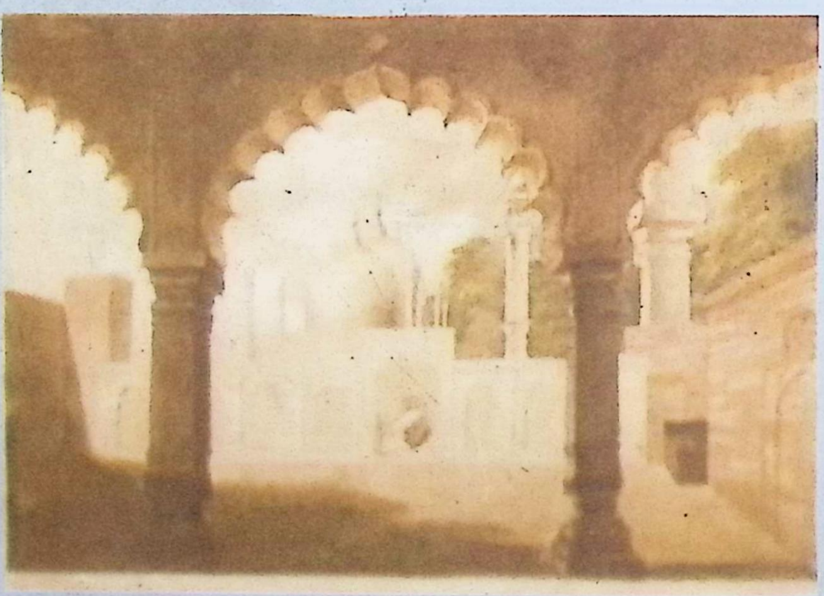

मेहरोली दिल्ली में शाह आलम का मक़बरा